मई 2010 ▪ Rs.20/-

चन्दामामा

www.chandamama.com/parle

PRAKRITI
www.prakritilive.org

Pledge your support to

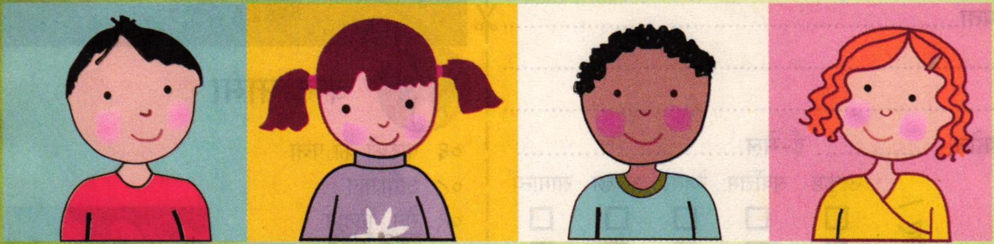

THE GO GREEN! MAGIC

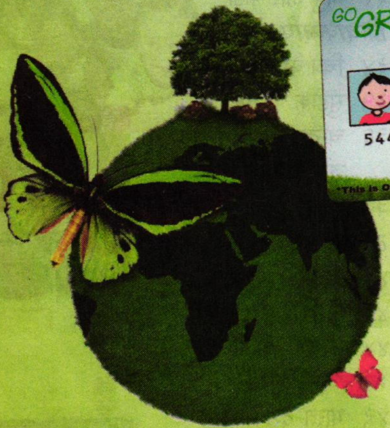

Get your green card and green band and await for the excitement to follow.

Enroll Yourself

Send your entries along with a photo to Chandamama India Ltd., B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093, Phone +91 22 28312872 / 28311849 or E-mail to joingreen@prakritilive.org (attach scanned photo) upto 30/06/2010

NAME : ....
SCHOOL : ....
DOB : .... /......... /............. Blood Group: .... Sex : ....
FATHER'S NAME: ....
Address : ....
Phone No. : .... Mobile: ....
Email : ....

*For Details on GO GREEN! Log on to www.prakritilive.org

सम्पुट-६१ मई २०१० सञ्चिका-५

नाम.. आयु ....

पता...

....

....

फोन.................. ई-मेल..............................

अपनी पत्रिका का मूल्यांकन कीजिए!

विषय के पास दी गयी बॉक्स को टिक कीजिए, बिन्दु रेखाओं से काटिए और अपना फीडबैक हमें भेजिए।

उत्कृष्ट	सर्वोत्तम	बेहतर	अच्छा	सामान्य
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐
☐	☐	☐	☐	☐

Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B',
MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.

H

अंतरंग

चन्दामामा

०६ पाठकों का पन्ना
०८ अभिशाप
०९ रोग निदान
रोग निर्णय
१० दूसरी चाभी

क्लासिकी

११ वास्तविक शिक्षा
१७ आर्य
२१ उत्तरकाण्ड-३
२७ मित्र भेद-६
३१ अबु और कडी

क्रियाकलाप

३४ चित्र कैप्शन प्रतियोगिता
३५ सुडोकू पहेली
३६ चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१६
३७ यूरेका

लघु कथाएँ

४० परिवर्तन
४३ अहंकार
४४ उलझन की गाँठ

भारत निर्देशिका

४९ भारत दर्शक
५० चूँ चूँ का डिब्बा
५२ बोझ

धारावाहिक

५६ शिथिलालयम-२
६३ अनुनिर्वा

समाचार

६९ समाचार झलक
७० उदीयमान सितारा

विविध

७१ हँसते-हँसते हो जा लोटपोट
७२ रोमांचक पड़ोस

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

आम, चन्दामामा, खेल!

ये तीनों शब्द शायद तुम्हारे लिए गर्मियों का पर्याय होंगे! परीक्षाएँ खत्म हो जाने और अब अगले कुछ हफ़्तों तक सिर्फ और सिर्फ खेलकूद में लगे रहने की आज़ादी होने से सारी दुनिया ही स्वर्ग गैसी लगने लगती है, है ना! तो आओ स्कूल और होमवर्क से भरा हुआ जून का मुश्किल महीना आने से पहले छुट्टियों का भरपूर मज़ा ले लें!

लेकिन क्या गर्मियाँ केवल आराम करने और खेलने के लिए ही होती हैं? इस मौसम में पूरे देश को प्रभावित करने वाली पानी की भारी कमी पर भी हमारा ध्यान होना चाहिए। वनों की बेतहाशा कटाई और औद्योगीकरण, जिसके साथ-साथ वनों को पुनर्स्थापित करने का कोई प्रयास नहीं किया गया, इन समस्याओं की जड़ है। अगले कुछ वर्षों में पानी हम सभी के लिए सबसे बड़ी परेशानी बन जाएगा।

किसी की भी ओर अँगुली उठाना इसका हल नहीं है; उस सन्तुलन को वापस लाने में हम सभी को अपनी भूमिका निभानी पड़ेगी। हमें कम प्रदूषण पैदा करने वाले विकल्पों का उपयोग करने का प्रयास करना चाहिए और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर ध्यान देना चाहिए। हमें लिखो और बताओ कि एक व्यक्ति के रूप में तुम अपनी धरती को बचाने के लिए क्या कर सकते हो। क्या तुम अपने दोस्तों के साथ मिलकर अपने आस-पास इस बारे में जागरूकता फैलाने के प्रयास कर सकते हो? हमें अपनी गतिविधियो के बारे में बताओ और हम अपनी ओर से उस सन्देश को फैलाने का पूरा प्रयास करेंगे!

पहली मई अंतर्राष्ट्रीय श्रम दिवस, या मई दिवस है। मई दिवस मजदूरों के अधिकारों और श्रम आन्दोलन की सामाजिक-आर्थिक सफलता से जुड़ी विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं की याद में मनाया जाता है। कई मजदूर संगठन अपनी परेशानियों की ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए मई दिवस पर प्रदर्शन करते हैं। अधिकार और ज़िम्मेदारियाँ किसी सभ्य समाज के लिए दो आवश्यक पहलू हैं - अत: इस दिन के महत्व के बारे में और पता लगाने की कोशिश करो!

क्या तुमने आर्टबुक और वार्षिक अंक पढ़ा? यदि नहीं, तो इंतज़ार किस बात का? इन गर्मियों का आनन्द उठाओ चन्दामामा के साथ!

- सम्पादक

मई २०१० Rs. 20/-
Founded by **B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher :
Prashant Mulekar
Associate Editors :
Sowmya Rajendran, R. Vaasugi
Content Head - Online :
Sowmya Bharadwaj
Senior Artists:
K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh
Artist :
Venki
Creative Designer :
Meghana Vaidyanathan
Creative Writers :
S. Niveditha, R. Rama
Layout Designers :
B. Thirumal, K. Narendra
Production In-charge :
Prashant Pawar
Circulation:
e-mail: circulation@chandamama.com
Head - Sales and Circulation:
Sanjay B Thorat
Manager - Sales & Circulation:
AB Sairam
Manager - Sales & Circulation (West & North):
Vinay K Brid
Assistant Manager - Circulation:
Rajendra K Jadhav
Asst. Manager - Sales & Circulation (East):
Subhankar Rej
Sales Officer - Circulation:
K. Ravishankar
Advertisement :
e-mail : sales@chandamama.com
Subscription:
e-mail: Subscription@chandamama.com
Ramya K (Chennai)
Ph: +91 44 4399 2829
Jalpa Doshi (Mumbai)
Ph: +91 22 2831 2872/2831 1849
Head Office : CHANDAMAMA INDIA LTD.,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
email : chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Printed and Published by Prashant Mulekar at Shruti Art Pvt. Ltd., Unit No.1, Gupta Mills Estate, Devidayal Industrial Compound, Darukhana, Reay Road (East), Mumbai - 400 010 on behalf of Chandamama India Limited, B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093. Editor : Prashant Mulekar

पाठकों का पन्ना

प्रिय चन्दामामा,

मेरी इच्छा है कि चन्दामामा और अच्छे काग़ज़ पर और बड़े आकार में छपे। अच्छा होगा यदि क्षेत्रीय भाषाओं की चन्दामामा अंग्रेज़ी के ही समान दिखे। कृपया इस पर विचार करें। अपने पाठकों के सुझावों पर गौर करने के लिए आपको धन्यवाद।

- वर्षा, नवी मुम्बई

नमस्ते,

मैं चन्दामामा के प्रकाशकों को एक सुझाव देना चाहता हूँ। मैं चन्दामामा का नियमित पाठक हूँ और बिना नागा विक्रम-बेताल की कहानियाँ पढ़ता हूँ। क्या आपने अब तक छपी सभी विक्रम-वेताल की कहानियों का समग्र संग्रह एक अलग किताब के रुप में छापने पर विचार किया है? यह विक्रम-वेताल के सभी चाहने वालों के लिए तोहफ़ा होगा।

- आशीष, इन्दौर

प्रिय चन्दामामा,

मैं यह बताना चाहता हूँ कि मुझे चन्दामामा का फरवरी का अंक नहीं मिला है। उम्मीद है आगे हमें सभी अंक समय पर मिलते रहेंगे।

- पुलीजला रविन्दर राव, हैदराबाद

प्रिय श्री पुलीजला रविन्दर राव,

हमें यह जानकर खेद है कि आपको फ़रवरी का अंक समय पर नहीं मिला। इस असुविधा के लिए हम क्षमा चाहते हैं। हम आपके निरन्तर सहयोग की सराहना करते हैं।

- टीम चन्दामामा

आप अपने विचार
feedback@chandamama.com
पर ई-मेल से भी भेज सकते हैं।

Visit us at : http://hindi.chandamama.com

खाली स्पीच बबल्स को यह मान कर भरो कि तुम छोटू हो (प्रत्येक बबल में ५० शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए)। तुम अपनी करियर चॉइस के बारे में अपने माता-पिता को कैसे राजी करोगे? हमें बताओ! सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टि को १०,००० रु का पुरस्कार मिलेगा*!

Entries must be sent on or before 31st May 2010 with full name, postal address, and telephone number to:
Editor, CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093 or email your entries to: contests@chandamama.com.
The winning entry will be published in July 2010.

(बीमाआग्रह की विषय वस्तु है। कोटक महिंद्र ओल्ड म्युच्युअल लाईफ इंश्युरंस लि., रजि. क्र. १०७ पता : ९वी मंजिल, गोदरेज कोलिजियम, एवरार्ड नगरके पीछे, सायन (पूर्व), मुंबई - ४०० ०२२. KLI/10-11/P-CA/10)

* शर्तें लागु

अभिशाप

उज्जयिनी में उस समय राजा कीर्तिवर्मा का राज्य था। राज्य का दरबारी कवि जयदेव असाधारण मेधावी और शास्त्रों का ज्ञाता था। उसने सौ से भी अधिक काव्यों की रचना की थी और राज्य तथा उसके बाहर भी अपार यश अर्जित किया था। जयदेव का पुत्र सोमनाथ भी कवि एवं पंडित था। उसने कुछ काव्य भी रचे थे, पर उन काव्यों को विशेष यश न मिल सका।

एक दिन सोमनाथ राजा कीर्तिवर्मा की सेवा में उपस्थित हुआ। उसने प्रणाम कर निवेदन किया, ''महाराज, आपकी आज्ञा हो तो मैं पड़ोसी राज्य मांडवगढ़ में जाकर रहना चाहता हूँ।''

राजा ने विस्मित होकर पूछा, ''क्या तुम्हारे पिता तुमसे रुष्ट हैं? या मेरे राज्य में तुम्हें सुख-सुविधा प्राप्त नहीं है?''

''महाराज, पिता रुष्ट हैं ऐसा कहकर तो मैं अपनी ही दृष्टि में गिर जाऊँगा। और पराए राज्य में मुझे यहाँ से अधिक सुख-सुविधा क्या मिल सकती है?'' सोमनाथ ने कहा।

''फिर तुम पड़ोसी राज्य में जाकर क्यों बसना चाहते हो?

सोमनाथ इस प्रश्न का कोई उत्तर देना चाहता थश लेकिन फिर उसने चुप रहकर सिर झुका लिया। मंत्री प्रद्योतसेन ने पुत्र के अंतर को समझ लिया और राजा से निवेदन किया, ''महाराज, आप सोमनाथ को अनुमति दे दीजिये।''

सोमनाथ आज्ञा पाकर वहाँ से चला गया। इसके बाद राजा कीर्तिवर्मा ने प्रद्योतसेन से प्रश्न किया, ''मंत्रीवर, आपने सोमनाथ को जाने देने की सलाह क्यों दी?''

''महाराज, इतने महान, असाधारण प्रतिभाशाली और यशस्वी पिता का पुत्र होना सचमुच ही सोमनाथ के लिए अभिशाप है। वह अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन यहाँ कभी कर ही नहीं सकता था।''

मांडवगढ़ पहुँचकर सोमनाध ने अनेक काव्यों की रचना की और बहुत यश अर्जित किया।

रोग निदान

कृपानन्द वैद्य ने अपनी चिकित्सा के लिये अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। वे सबसे पहले रोगी की नाडी देखते, इसके बाद लगभग सभी रोगियों से यह सवाल करते, "तुमने पिछले चार - पाँच दिनो में क्या आहार लिया है? कौन से फल साग-सब्जी आदि खाये हैं? तुम्हारे आहार में ही कोई ऐसी वस्तु रही है, जिसके कारण तुम बीमार हो गये हो।"

इसके बाद कृपानन्द वैद्य बडे ध्यानपूर्वक रोगियों का उत्तर सुनते क्या खाया और क्या पिया है? फिर कहते, "अच्छा-अच्छा! मैं समझ गया। लो, यह दवा खाना, ठीक हो जाओगे।" कहकर वे रोगी के हाथ में दवा की पुडिया थमा देते और उनसे पैसे ले लेते।

एक बार कृपानन्द वैद्य के यहाँ रत्नाचारी नाम का एक युवक चिकित्सा सीखने की इच्छा से आया। उसने काफी दिन तक अपने गुरु द्वारा रोग निदान को देखा, फिर एक दिन उनसे पूछा, "गुरुजी आप नाडी देखने के उपरान्त हर रोगी से उसके खान-पान के बारे में पूछते हैं कि पिछले चार पाँच दिन में उसने क्या सब्जी-फल आदि खाये हैं। क्या रोग निदान करने के लिये इसकी जानकारी आवश्यक है?"

यह सवाल सुनकर कृपानन्द ने मुस्करा कर कहा, "देखो रोग का पता तो उनकी नाड़ी से लग जाता है। खान-पान, सब्जी-तरकारी से तो मैं यह पता लगाता हूँ कि उस आदमी की आर्थिक स्थिति कैसी है और उसी के आधार पर उससे औषधि का पैसा लेता हूँ।"

दूसरी चाभी

शिवपुरी का निवासी नागराज तालों की मरम्मत करने और दूसरी चाभियाँ बनाने में सिद्धहस्त था। उसे कोई भी चाभी दो, वह उसकी नकल की दूसरी चाभी बना देता था।

एक दिन रामसहाय नाम का एक किसान एक चाभी लेकर नागराज की दुकान पर आया और बोला, ''नागराज, मुझे इस चाभी की एक और चाभी चाहिए!'' नागराज बोला, ''ठीक है, कल आकर चाभी ले जाना।''

रामसहाय दूसरे दिन दुकान पर पहुँचा। नागराज ने उसके हाथों में पहली चाभी के साथ दूसरी बनाई चाभी भी दे दी। रामसहाय ने नई चाभी को ध्यान से देखकर पूछा, ''यह चाभी ठीक से काम तो देगी ना?''

इसपर नागराज ने बड़े अभिमान से कहा, ''तुम शायद मेरी कारीगरी की निपुणता को नहीं जानते। आज तक तो ऐसा नहीं हुआ कि मेरी बनाई किसी चाभी ने काम न किया हो।''

''इसीलिए तो मैं अपने ताले की चाभी तुम्हारे पास लाया था। यह चाभी काम नहीं कर रही थी, इसलिए मुझे तुमसे एक और चाभी तैयार करवानी पड़ी। शायद दूसरी चाभी काम कर दे'' रामसहाय बोला। नागराज उसका मुँह देखता रह गया।

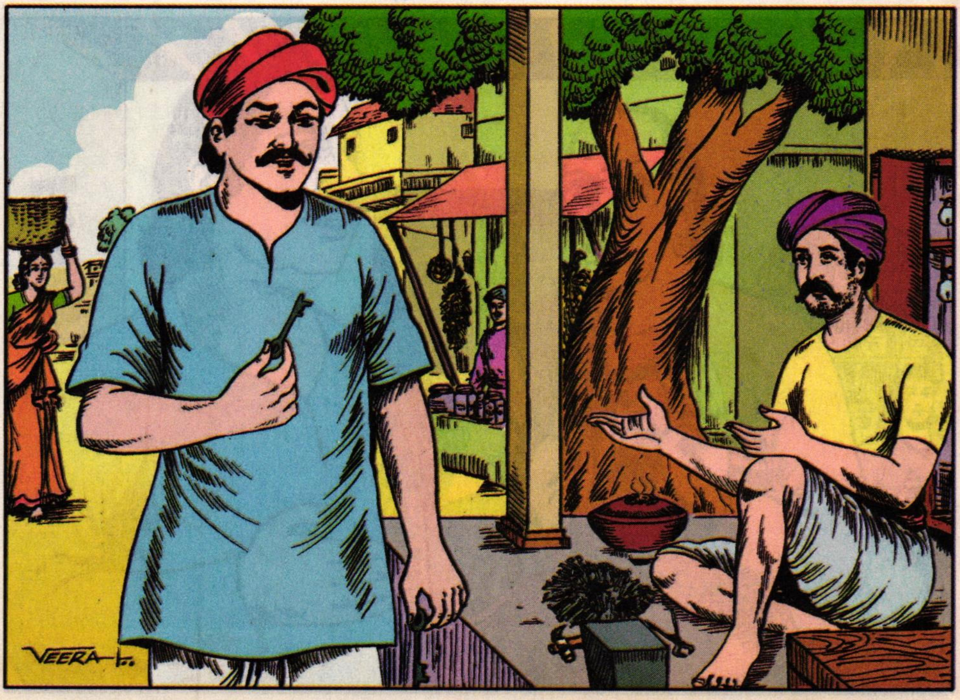

वेताल कथा

वास्तविक शिक्षा

राजा विक्रमार्क बिना थके पुन: पेड़ के पास आए और शव को उतारकर कन्धे पर डालकर वापस श्मशान की ओर चल पड़े। शव में छुपे बेताल ने कहा, "हे राजन्, मैं जानता हूँ कि तुम अपनी लक्ष्यप्राप्ति के प्रति अडिग हो और उससे थोड़ा भी डिगोगे नहीं। बस मुझे ये नहीं पता कि तुम इतना कठिन कार्य क्यों कर रहे हो। इस अँधेरी रात में इस काम का तुम्हारे लिए क्या महत्व है और तुम इसका क्या प्रतिफल चाहते हो?

इस दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्हें अपने किए अच्छे काम का उचित इनाम माँगना नहीं आता। ऐसे भी लोग हैं जो बिना कोई प्रयास किए आने वाले अच्छे भाग्य को अपने से दूर कर देते हैं।"

राजय्या ऐसे लोगों का एकदम सटीक उदाहरण है। उसने अपने ढीठ तर्कों से एक धनी आदमी द्वारा अपने बेटे की शिक्षा का खर्च उठाए जाने के अच्छे मौके को गँवा दिया। मैं तुम्हें उसकी कहानी सुनाता हूँ। अपने श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

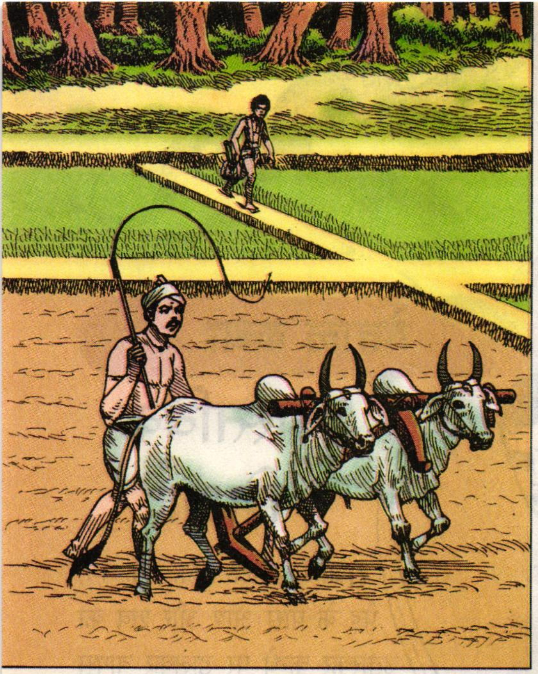

ऐसा कहकर बेताल ने कहानी सुनानी शुरू की।

बहुत समय पहले, किसी गाँव में एक किसान रहता था। उसका नाम राजय्या था। राजय्या के पास अच्छी फसल देने वाली पाँच एकड़ आर्द्र भूमि थी। उसके गाँव में एक बहुत अच्छा तालाब था जो पूरे साल पानी से भरा रहता था। इन्द्र देव भी गाँव पर मेहरबान थे और बारिश हमेशा समय पर होती थी। बारिश से तालाब में पानी की मात्रा आवश्यकतानुसार बढ़ जाती थी।

इस प्रकार मौसम और प्रकृति के अनुकूल होने के कारण उस गाँव में खेती करने में कोई अड़चन नहीं आती थी। तालाब से पीने और गाँव के आस-पास के खेतों में सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी मिल जाता था।

गाँव के दूसरे लोगों की ही तरह, राजय्या भी एक मेहनती आदमी था। वह समय और मौसम को देखकर अपनी खेती आरम्भ कर देता था। अपनी जमीन में सब्ज़ियाँ और फल उगाने के साथ ही राजय्या धान की फसल भी ले रहा था।

अपने परिवार के लिए फसल का कुछ हिस्सा रखकर वह बाकी फसल को पास के गाँव में ले जाकर बेच देता और फसल के पैसों से परिवार के लिए कपड़े आदि आवश्यक चीजें ले आता। पास के गाँव में कोई तालाब नहीं था और इसलिए वहाँ की खेती पूरी तरह बारिश के भरोसे थी।

यदि पानी अच्छा बरसा तो फसल अच्छी होती थी वरना नहीं। अत: उस गाँव में किसान कम और दस्तकार अधिक थे और हस्तकला काफी विकसित थी। उस गाँव के लोग आस-पास के सभी गाँवों के लिए घरों की रोज़मर्रा की आवश्यक चीज़ें जैसे मटके, टोकरियाँ, बरतन, कपड़े आदि बेचते थे।

राजय्या खूब मेहनत करता था और अपनी मेहनत के फल का आनन्द लेता हुआ मजे से रह रहा था। राजय्या का एक बेटा था, वीरन्ना। इस वक्त वीरन्ना दस वर्ष का था।

राजय्या अपने बेटे को थोड़ा-थोड़ा करके खेती के गुर सिखा रहा था।

राजय्या हर प्रकार का काम वीरन्ना के सामने करके यह प्रयास करता कि वह अपनी आजीविका चलाने के लिए आवश्यक सभी चीज़ें सीख जाए। राजय्या खेत के सभी काम करते समय वीरन्ना को आवश्यक बातें बताता जाता, उसे अन्न, दूध आदि के माप के बारे में जो भी कुछ पता था, वह भी अपने बेटे को सिखाता।

रात में तारों भरे आकाश के नीचे, अन्न के भंडार की छत पर अपनी खाट पर बैठने का आनन्द लेते हुए वह उसे तारों, चन्द्रमा, हवाओं और बादलों के बारे में ज्ञान देता। वह उसे यह भी बताता था

कि बादलों की हलचल और उनके रंग के आधार पर बारिश होने का पूर्वानुमान कैसे लगाया जा सकता है।

वीरन्ना रोज़ दोपहर को अपनी माँ के द्वारा पिता के लिए दिया गया भोजन लेकर खेत पर जाता। राजय्या बेटे का लाया खाना खाकर एक पेड़ की छाया में थोड़ी देर सोता। इससे पहले वह अपने बेटे को करने के लिए कुछ काम बताता। और जब तक राजय्या सोकर उठता, वीरन्ना खेत के छोटे-मोटे काम करता। वह काम देखकर आवश्यक होने पर राजय्या वीरन्ना को सुझाव देता या काम करने का सही तरीका समझाता। इस प्रकार उनके जीवन बहुत शान्ति और सुकून से व्यतीत हो रहे थे।

एक दिन सुबह राजय्या सुबह जल्दी खेत पर गया। वहाँ उसने कुछ नालियाँ बनाईं और फलों के पेड़ों को पानी देना शुरु कर दिया। तभी उसने दूर से किसी तेज़ भागते हुए घोड़े की टापों की आवाज़, घोड़े का सतत हिनहिनाना और किसी बालक की मदद की पुकार सुनी।

राजय्या दौड़ता हुआ आवाज़ की दिशा में गया और उसने जो नज़ारा देखा उससे हतप्रभ रह गया। उसने देखा कि एक घोड़ा खड़ा था जिसकी लगाम ठीक से नहीं बाँधी गई थी। घोड़ा नाराज़गी में तेज़ साँसे छोड़ रहा था।

पास ही, कमर तक दलदल में फँसा हुआ एक बालक था जो बहुत घबराया हुआ था और दलदल से निकलने का प्रयास कर रहा था। साथ ही, वह मदद के लिए चिल्ला रहा था।

राजय्या दलदल के पास गया और सबसे पहले घोड़े को ललकार कर उसे वहाँ से दूर हटाया। फिर उसने बालक को भरोसा दिलाया, "देखो बेटा, तुम चिन्ता मत करो। मैं तुम्हें यहाँ से बाहर निकाल लूँगा। लेकिन तुम अधिक हिलो-डुलो मत, क्योंकि

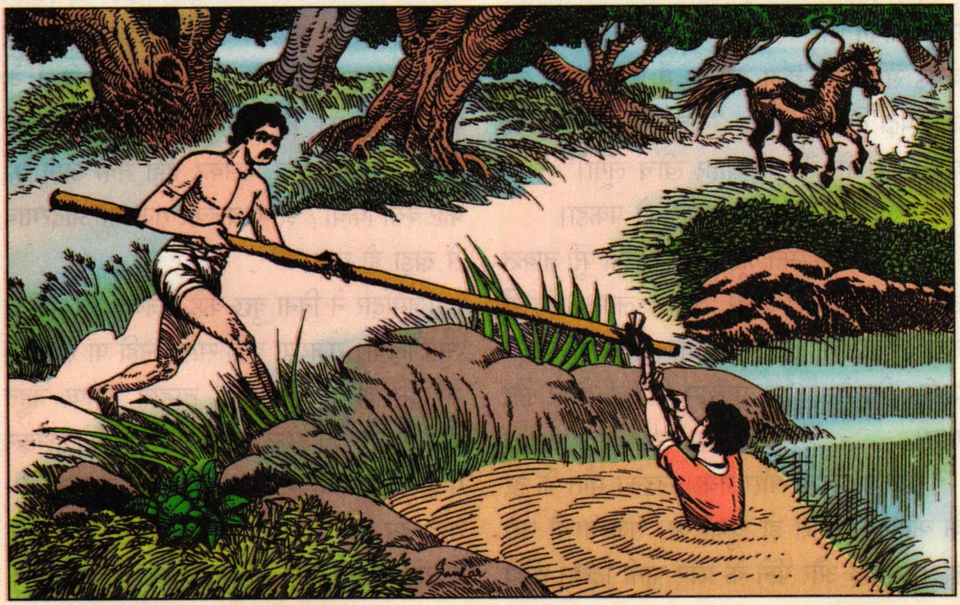

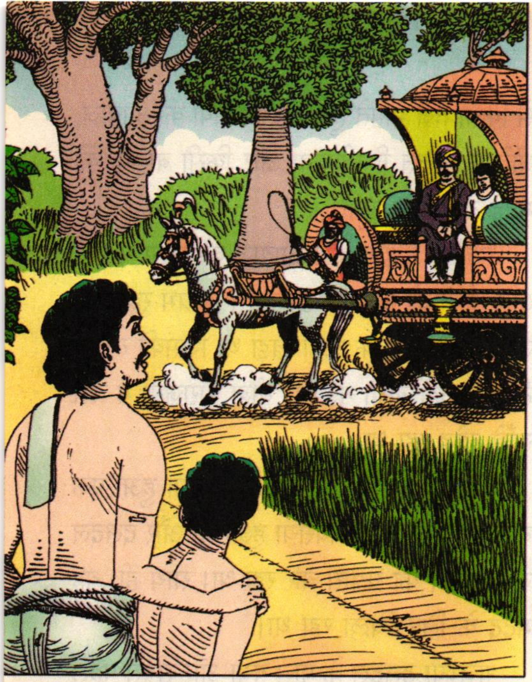

जितना तुम बाहर आने का प्रयास करोगे उतना ही अन्दर फँसते जाओगे।''

ऐसा कहकर राजय्या ने अपनी कमर के पटके को कसकर बाँधा और एक पेड़ के पास जाकर वहाँ से एक बड़ी और मजबूत डाल तोड़ी। उस डाल में उसने अपने सिर पर बँधा कपड़ा बाँधा। फिर उसने कपड़े समेत वह डाल दलदल में फँसे बालक की ओर बढ़ा दी और बोला, ''बेटा तुम इस कपड़े को पकड़ लो और मैं तुम्हें बाहर खींच लूँगा।''

लड़के ने आतुरता से कपड़े को पकड़ा।

राजय्या ने हिम्मत जुटाई और अपनी पूरी ताकत लगाकर लड़के को बाहर खींचने लगा। अंत में लड़का धीरे-धीरे दलदल से बाहर आ गया। कठोर ज़मीन मिलते ही वह एकदम निढाल होकर गिर गया।

राजय्या उसके पास गया। लड़का मौत के डर के कारण अधमरा हो चुका था। राजय्या ने उसे ढाढस बँधाई और पीने के लिए पानी दिया। थोड़ी देर बाद लड़के की जान में जान आई और वह उठ खड़ा हुआ। राजय्या को धन्यवाद देकर वह धीरे-धीरे अपने घर की ओर चला गया।

राजय्या ने अपने हाथ-पैर धोकर दलदल की मिट्टी साफ़ की और अपने बेटे की प्रतीक्षा करने लगा। हमेशा की तरह वीरन्ना भोजन लाया और राजय्या खाकर आराम से पेड़ की छाँव में सो गया। सीधा-सादा और किसी पर अहसान न जताने की प्रवृत्ति न होने के कारण वह उस लड़के को दलदल से बचाने के बारे में सब-कुछ भूल चुका था।

अगले दिन राजय्या ने अपना दिन का भोजन खत्म किया और अपने बेटे को बताने लगा कि उसके सोने के दौरान उसे क्या-क्या करना चाहिए।

तभी, एक बड़े से घोड़े से जुती एक शानदार घोड़ागाड़ी उसके खेतों के पास आकर रुकी, और उसमें से गाँव का अमीर जमींदार उतरा। नीचे उतरकर जमींदार राजय्या की ओर बढ़ा। उसे देखकर राजय्या ने हाथ जोड़कर उसकी अगवानी की और बोला, ''महाशय, यदि आप किसी चिड़िया के कान में भी कह देते तो मैं खुद आपके घर आ जाता। आपने इतना चलकर यहाँ तक आने का कष्ट क्यों किया? इतना कहकर राजय्या आदरभाव से खड़ा हो गया।''

जमींदार ने बिना कुछ कहे राजय्या को गले से लगा लिया। राजय्या कुछ समझ नहीं पा रहा था। जमींदार बोला, ''राजय्या, तुम्हारा मुझपर बहुत बड़ा अहसान है। तुमने कल जिस लड़के को दलदल में डूबने से बचाया है, वह मेरा इकलौता पुत्र है। यदि तुम कल मेरे बेटे को दलदल में डूबने से न बचाते, तो मेरा और मेरे परिवार का क्या होता?''

"मेरा बेटा घुड़सवारी का शौकीन है लेकिन अभी उसे घुड़सवारी करना सीखना है।"

"उसने एक नया घोड़ा बाहर निकाल लिया जिसपर घुड़सवारी अभी शुरू नहीं की गई थी। उसने सीधे उस पर लगाम कसी और सवारी करने की कोशिश की।"

"मेरे बेटे ने मुझे पूरी बात बताई, राजय्या। मैं तुम्हें अपने पूरे दिल से धन्यवाद देता हूँ। बहुत अधिक काम होने के कारण मैं तुम्हें धन्यवाद देने कल नहीं आ सका।"

राजय्या ने विनम्रता से उत्तर दिया, "मैंने कोई विशेष काम नहीं किया है। मुझे तो पता भी नहीं था कि वह आपका बेटा है। मैंने तो केवल मुसीबत में पड़े एक बालक की सहायता की थी।" जमींदार ने खुशी-खुशी सिर हिलाया। अचानक उसकी निगाह हाथ में बेलचा लिए खड़े वीरन्ना पर पड़ी।

"क्या यह तुम्हारा बेटा है, राजय्या?"

"हाँ महाशय" राजय्या बोला और अपने बेटे के सिर पर प्यार से हाथ रखकर कहा, "मेरा बेटा बड़ा होशियार है। मेरे साथ बराबरी से हाथ बँटाता है और मन लगाकर सब सीखता है। अभी यह दस साल का है। मैं कोशिश कर रहा हूँ कि इसे वह सब सिखा दूँ जो मुझे आता है। उम्मीद है, जल्दी ही यह मेरे खेती के काम में हाथ बँटा सकेगा।"

यह सुनकर जमींदार को बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला, "ये क्या कह रहे हो राजय्या! तुम अपने बेटे को भी किसान बनाना चाहते हो? मैं इसे अपने साथ लिए जाता हूँ। मैं इसे पहले अच्छी शिक्षा दिलवाऊँगा और फिर अपने दफ़्तर में नौकरी दूँगा। तुमने मेरे परिवार पर जो उपकार किया है उसका मुझे कुछ मोल चुका लेने दो।"

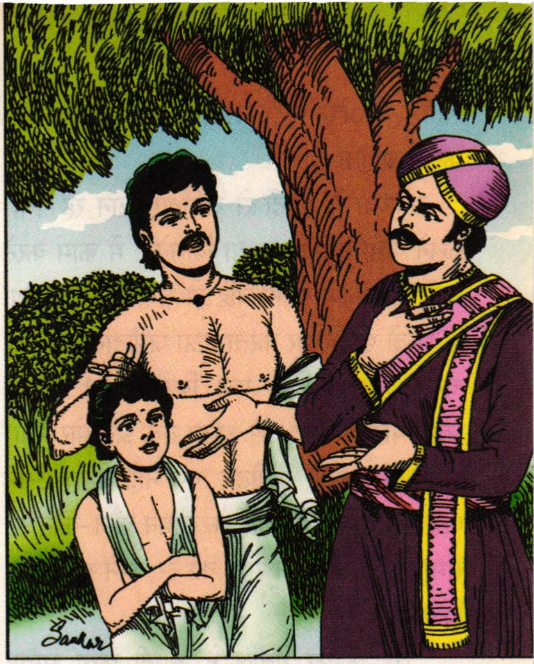

राजय्या ने विनम्रता से कहा, "मैंने आपके बेटे की सहायता किसी ईनाम के लालच में नहीं थी। मुझे तो ये अन्दाज़ा भी नहीं था कि यह लड़का आपका बेटा है। मदद करते समय मैंने इस बात पर कोई ध्यान नहीं किया था कि मुझे इसके बदले बालक के परिवार से कुछ प्राप्ति होगी। मदद करते समय मैं केवल मदद करते हैं, उसके बदले कुछ पाने की इच्छा नहीं करते।"

"जहाँ तक मेरे बेटे का सवाल है, महाशय, मैं उसे पहले ही बहुत अच्छी चीज़ें सिखा रहा हूँ। मैं यह नहीं मानता कि मैं उसे जो शिक्षा दे रहा हूँ उससे बेहतर भी कोई शिक्षा हो सकती है।"

"मैं अपने बेटे को बिना कुछ किए केवल कार्यालय में बैठकर दूसरों ने क्या किया यह पता लगाते और उन पर हुक्म चलाते नहीं देख सकता। मुझे लगता है कि अपने खाने का अन्न अपनी मेहनत का होना चाहिए। अतः, मुझे लगता है कि मेरे बेटे को उचित शिक्षा मिल रही है। माफ़ कीजिये,

लेकिन मैं अपने बेटे को अपने तरीके से शिक्षित करना चाहता हूँ।''

राजय्या के शब्दों से जमींदार हैरान रह गया। उसने कभी नहीं सोचा था कि खेतों में काम करने वाले किसान में इतनी बुद्दि हो सकती है। राजय्या के शब्दों पर विचार करता हुआ जमींदार अपने घर चला गया। लेकिन एक किसान का पढ़ाया स्वाभिमान का पाठ उसे अन्दर तक झकझोर गया।

वापस जाकर जमींदार चुप नहीं बैठा। उसने पता लगाया कि किसानों के सामने कौन-कौन सी समस्याएँ हैं और उन सभी को दूर करने का प्रयास किया।

''यह कहकर बेताल ने अपनी कथा समाप्त की। फिर उसने विक्रमार्क से पूछा, ''यह किसान राजय्या कोई बेवकूफ़ लगता है। अन्यथा उसने जमींदार के आगे रहकर उसके बेटे को सबसे अच्छी शिक्षा दिलाने का प्रस्ताव देने पर भी ऐसा उत्तर देकर अपने बेटे को इतने अच्छे मौके से वंचित क्यों किया। मेरे प्रश्न का उत्तर जानकर भी यदि तुम उत्तर नहीं दोगे, तो तुम्हारा सिर फटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।''

विक्रमार्क बोले, ''नहीं बेताल! राजय्या ने मूर्खता नहीं की। उसे पक्का यकीन था कि जो कुछ वह अपने बेटे को सिखा रहा था वह भी शिक्षा और ज्ञान था। जब जमींदार ने यह कहा कि उसने जो सुझाया है वह अच्छी शिक्षा है व राजय्या द्वारा दी जा रही शिक्षा उसके बेटे के लिए उचित नहीं, तो वह इस बात को स्वीकार न कर सका। और उसकी सोच सही भी थी। कार्यालय में बैठकर काग़ज़ बिगाड़ने की जगह खेती करके अन्न, सब्ज़ियाँ और फल उगाने की शिक्षा देकर वह अपने बेटे को उचित शिक्षा ही दे रहा था।''

''बेताल, आजकर बहुत से लोग मानते हैं कि केवल पढ़ना और लिखना ही शिक्षा है। लेकिन वास्तव में खेती और हस्तकलाओं जैसी कई शिक्षाएँ कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं, जिनसे कुछ बनता है। वह अपने बेटे को दूसरों को अन्न खिलाने वाला किसान बनाना चाहता था, केवल अन्न खाने वाला इंसान नहीं। इसलिये वह अपने बेटे को अपना पूरा ज्ञान दे रहा था।''

इस प्रकार विक्रमार्क का मौन भंग होते ही बेताल शव सहित गायब हो गया और पुनः पेड़ पर जा लटका।

- शिवरामप्रसाद द्वारा रचित

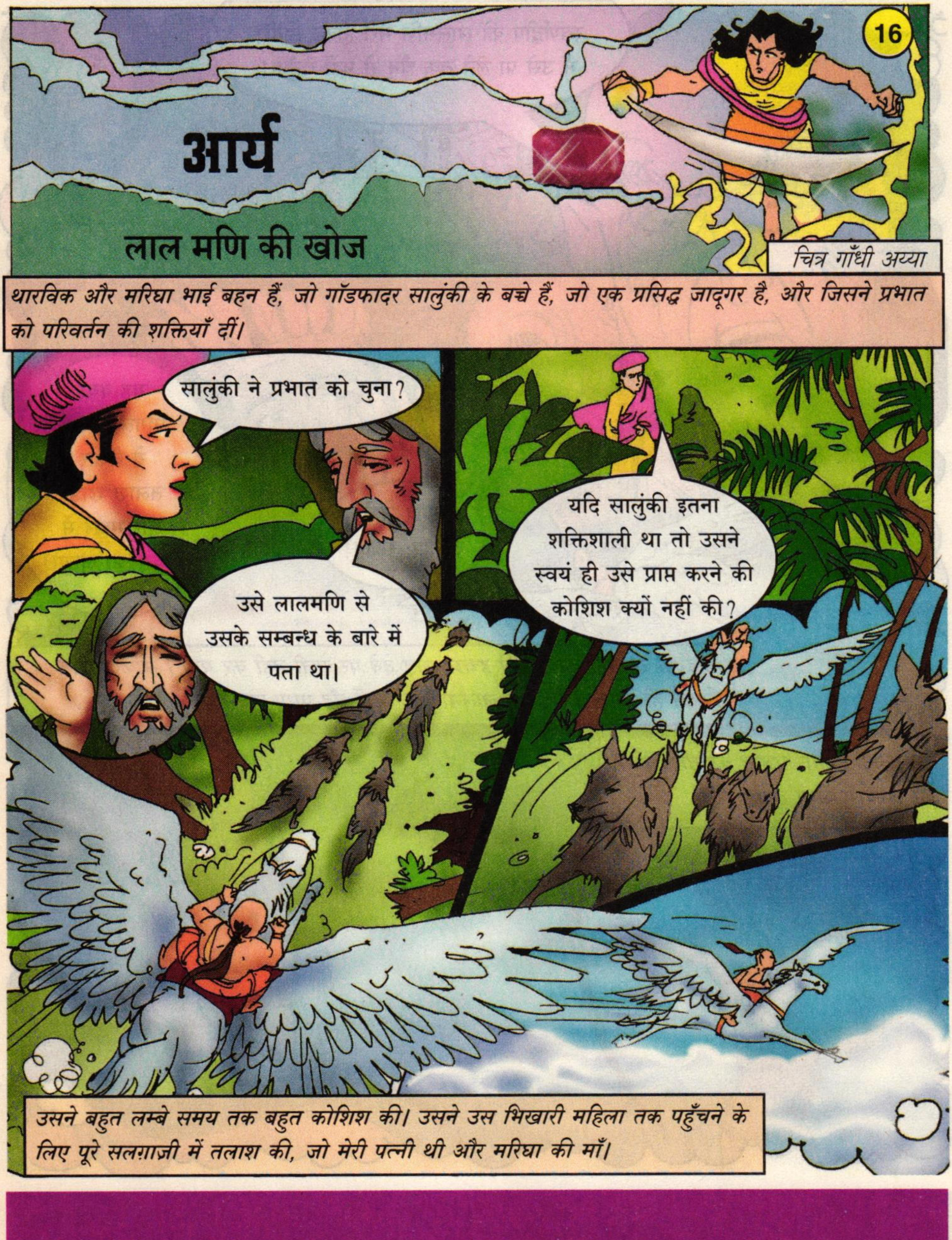
16
आर्य
लाल मणि की खोज
चित्र गाँधी अय्या
थारविक और मरिघा भाई बहन हैं, जो गॉडफादर सालुंकी के बच्चे हैं, जो एक प्रसिद्ध जादूगर है, और जिसने प्रभात को परिवर्तन की शक्तियाँ दीं।
सालुंकी ने प्रभात को चुना?
उसे लालमणि से उसके सम्बन्ध के बारे में पता था।
यदि सालुंकी इतना शक्तिशाली था तो उसने स्वयं ही उसे प्राप्त करने की कोशिश क्यों नहीं की?
उसने बहुत लम्बे समय तक बहुत कोशिश की। उसने उस भिखारी महिला तक पहुँचने के लिए पूरे सलग़ाज़ी में तलाश की, जो मेरी पत्नी थी और मरिघा की माँ।

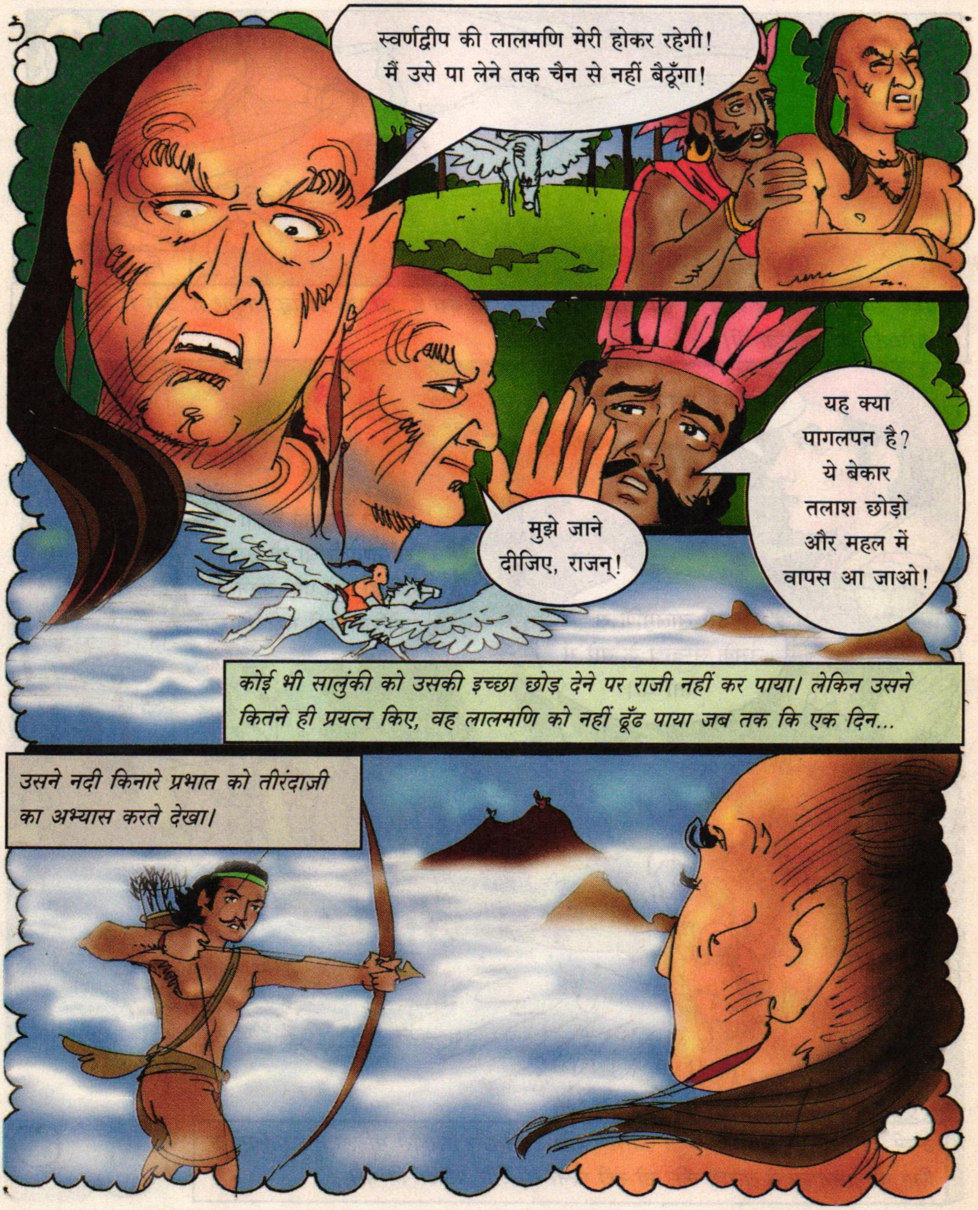
स्वर्णद्वीप की लालमणि मेरी होकर रहेगी! मैं उसे पा लेने तक चैन से नहीं बैठूँगा!
यह क्या पागलपन है? ये बेकार तलाश छोड़ो और महल में वापस आ जाओ!
मुझे जाने दीजिए, राजन्!
कोई भी सालुंकी को उसकी इच्छा छोड़ देने पर राजी नहीं कर पाया। लेकिन उसने कितने ही प्रयत्न किए, वह लालमणि को नहीं ढूँढ पाया जब तक कि एक दिन...
उसने नदी किनारे प्रभात को तीरंदाज़ी का अभ्यास करते देखा।

किसी तरह सालुंकी को प्रभात के प्रति लगाव था। दोनें एक दूसरे के साथ घंटों बिताया करते थे।
कृपया मेरे पिता से मिल लें।
नहीं मैं नहीं मिलूँगा। हमारी मित्रता एक राज़ होनी चाहिए।
सालुंकी को पता लगा कि मेरे भी कुछ राज़ थे। उसकी उत्कंठा बढ़ी।
मुझे बहुत अफसोस है। क्या तुम्हें ज्यादा चोट लगी?
एक दिन, प्रभात को तलवारबाज़ी सिखाते समय उसने ग़लती से उसकी भुजा पर वार कर दिया। खून बहने लगा।
वह मेरे बारे में पता लगाना चाहता था। उसने और जानकारी लेने के लिए जादू का सहारा लिया।
तुम खुद को सुरक्षित रखकर लालमणि नहीं पा सकते।

क्यों?
लालमणि केवल रक्त बहने पर ही किसी और हाथ में जाती है। यदि वह तुम्हें वैसे ही मिल गई तो तुम मारे जाओगे।
क्या तुम मुझे ये कह रहे हो कि मेरे सारे प्रयत्न व्यर्थ गए?
वह लड़का मरिघा का भाई है। उसका उपयोग करो।
लेकिन जब वह उसे हासिल कर लेगा, तो मैं वह लालमणि उससे कैसे लूँगा?
उसे अपना पुत्र बना लो।
(क्रमशः)

रामायण

उत्तरकांड - ३

अगले दिन राम सभा में थे कि कोई कुत्ता बाहर आकर भौंका। लक्ष्मण यह जानकर कि कुत्ता राम से कोई फरियाद करना चाहता था, राम की अनुमति पर उसको सभा में ले गए।

कुत्ते को, जिसके सिर पर जबर्दस्त चोट लगी हुई थी, देखकर राम ने कहा - ''तुम अपने कष्ट के बारे में निर्भय होकर बताओ।''

''सर्वार्थसिद्धि नाम के भिक्षु ने मेरा सिर तोड़ दिया है। मैंने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था।'' कुत्ते ने कहा। राम ने तुरंत उस भिक्षु को बुलाकर पूछा - ''तुमने इस कुत्ते का सिर क्यों तोड़ा? इसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?''

''राजा, मैं भिक्षा के लिए सुबह से घर-घर घूम रहा था । मुझे कहीं कोई भीख नहीं मिली? उस हालत में यह कुत्ता मेरे रास्ते में आया। मैंने इसे बहुत मना किया। पर यह माना नहीं। यह सच है कि मैं अपना गुस्सा काबू में न रख सका और मैंने उसके सिर पर मार दिया। इसका जो भी कुछ दण्ड है मुझे दीजिये।'' सर्वार्थसिद्धि ने कहा।

राम ने सभासदों से पूछा कि उसको कैसा दण्ड दिया जाना अच्छा होगा। सभा में वहुत से पण्डित थे, पर किसी ने भी दिए जाने योग्य दंड के लिए कोई तर्कपूर्ण और स्पष्ट उत्तर न दिया। राम को पूरे दरबार से कोई उत्तर न मिल सका।

तब कुत्ते ने राम से कहा - ''हे राम, इसने मेरा बुरा किया है। अतः इसको जो दण्ड मैं बताऊं, वह दिया जाए। कालंभर नामक स्थल में इसको कुलपति का काम दो।'' राम ने कुत्ते के कहे अनुसार न्याय

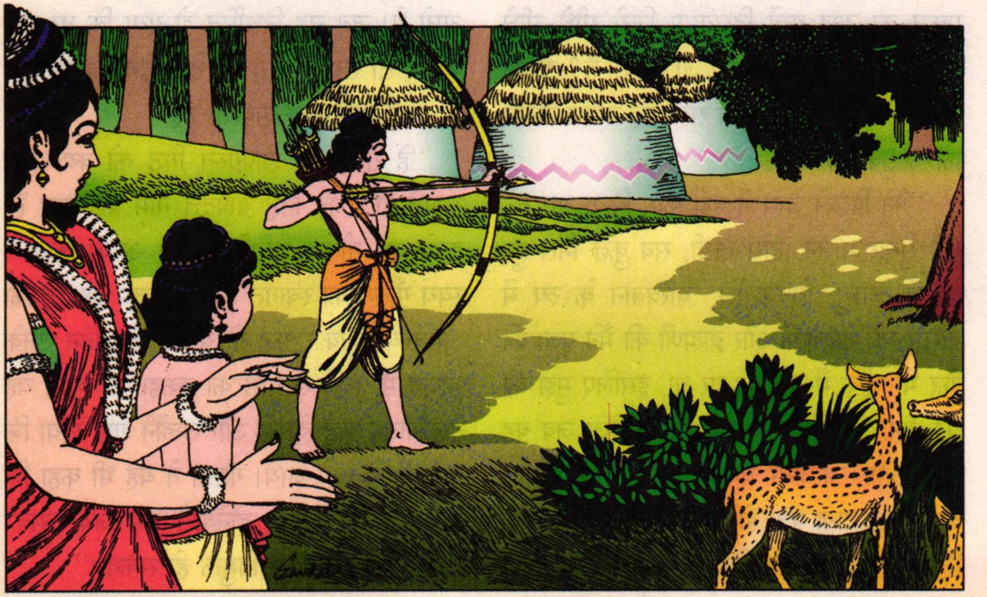

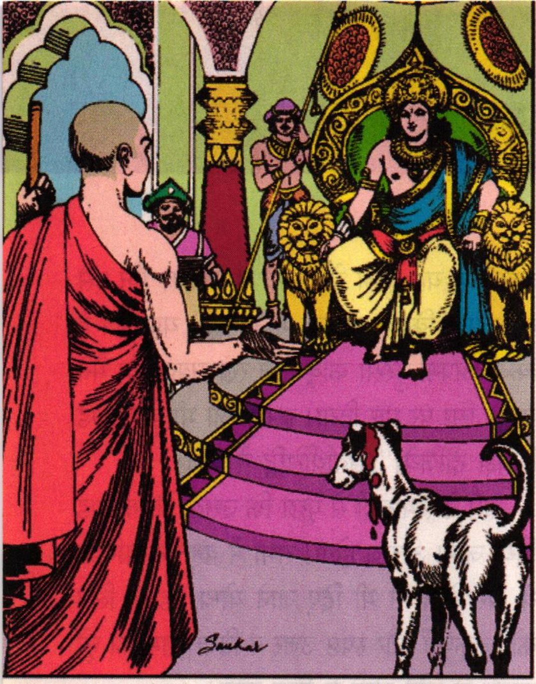

कर दिया। भिक्षु को वह काम दिया और हाथी पर सवार करके उसे भेज दिया। भिक्षु भी बड़ा प्रसन्न हो चला गया।

उसके चले जाने के बाद, राम और मन्त्रियों ने उस कुत्ते से पूछा - "इस भिक्षु को तुमने इस प्रकार का दण्ड क्यों दिलवाया जिसे सीधे-सीधे दंड की जगह पुरस्कार माना जा सकता है? इसका अवश्य कोई कारण है। हम सभी वह कारण जानने को उत्सुक हैं।"

"मैंने पिछले जन्म में वहीं काम किया था। तब मुझे सुन्दर भोजन, दास दासी, सब कुछ मिले हुए थे। मैं दयालु, विनयशील, चरित्रवान के रुप में प्रसिद्ध था। देवताओं और ब्राह्मणों की मैंने पूजा की फिर भी चूंकि मैं उस पद पर था, इसलिए मुझ को यह हीन जन्म लेना पड़ा। महाकोपी भिक्षु जव वह काम करेगा, तो जन्म जन्मान्तर में नरक में सड़ेगा। यह अच्छी तरह पता होने के कारण ही मैंने उसके लिए यह दंड निर्धारित किया है," कुत्ते ने कहा।

कुत्ते के चले जाने के बाद, एक उल्लू और गिद्ध में झगड़ा हुआ और वे राम के पास फैसले के लिए आये। एक जंगल में एक घर था, दोनों पक्षी यह कहकर झगड़ने लगे कि वह घर उसका था।

राम ने दोनों पक्षों की बात सुनी किन्तु कुछ निर्णय न ले सके। यह निर्धारित करने के लिए कि वह घर किसका था, वे पुष्पक विमान में अपने मन्त्रियों के साथ सवार होकर उस जगह आये जहाँ वह घर था।

"इस घर को तुमने कब बनाया था?" राम ने गिद्ध से पूछा।

"भूमि पर जब मनुष्य पैदा हुए तब मैंने यह अपना घर बनाया था। यह तभी से मेरा ही घर है।" गिद्ध ने कहा।

तुरंत उल्लू ने कहा - "हे राम, जब पृथ्वी पर पेड़ पैदा हुए तब मैंने यह घर बनाया था।"

तुरंत राम के मन्त्रियों ने निर्णय किया कि वह घर उल्लू का ही था, चूंकि पृथ्वी पर पहिले वृक्ष आये थे। जब यह निर्धारित हो गया कि घर उल्लू का है, तो राम ने गिद्ध को दण्ड देने की सोची।

तभी वहाँ आकाशवाणी हुईः

"हे राम! इस शापग्रस्त गिद्ध को क्यों और सताते हो? यह गिद्ध ब्रह्मदत्त नाम का राजा है। इसके घर गौतम अतिथि बनकर आये। राजा ने स्वयं गौतम का स्वागत किया। गौतम ब्रह्मदत्त का आतिथ्य स्वीकार कर रहे थे कि एक दिन उनके भोजन में, कहीं से मांस का टुकड़ा आ गया। यह देख गौतम क्रुद्ध हो उठे और उन्होंने शाप दिया कि ब्रह्मदत्त गिद्ध हो जाये। गौतम ने यह भी कहा कि ईक्ष्वाकु वंश में पैदा होनेवाले राम जब उसको छुयेंगे, तब वह शाप-विमुक्त हो सकेगा।"

यह सुनकर राम ने उस गिद्ध को छुआ। तुरन्त गिद्ध एक दिव्य पुरुष बन गया। वह पुरुष राम को अपनी कृतज्ञता दिखाकर चला गया।

एक दिन यमुना तट के वासी सौ से अधिक मुनि राम के दर्शनार्थ आये। राम ने उनके लाये हुए फलों आदि के उपहारों को स्वीकार किया, उनको आसन दिया और पूछा कि वे किस काम से आये थे?

मुनियों ने राम को बताया कि लवणासुर नामक असुर उनको बहुत तंग कर रहा था। वन में और नदी किनारे ईश्वर उपासना या हवन-यज्ञ में रत किसी भी मुनि को वह चैन से नहीं बैठने देता था। यज्ञ विध्वंस करना और साधुओं को परेशान करना उसका प्रिय काम था। अतः वे चाहते थे कि राम उसके उत्पात से उन्हें बचायें।

यह लवणासुर मधुव राक्षस का लड़का था। मधुव ने बहुत लंबे समय तक रुद्र की तपस्या की और उनको सन्तुष्ट किया। तब रुद्र ने अपने त्रिशूल में से एक और त्रिशूल बनाकर उसको देते हुए कहा - ''यह जब तक तुम्हारे साथ है, तब तक तुम्हें कोई नहीं जीत सकता। फिर मधुव ने शिव से प्रार्थना की कि यह त्रिशूल हमेशा उसी के वंश में सुरक्षित रहे।''

''तुम्हारे बाद यह त्रिशूल तुम्हारे लड़के के पास ही रहेगा। लेकिन उसके बाद यह वहाँ नहीं रहेगा।'' शिव ने कहा। इस मधुव ने रिश्ते की रावण की छोटी बहिन कुम्भीनस से विवाह किया। उनके घर लवण पैदा हुआ। वह छुटपन से ही महा पापी था। मधुव उसको अच्छे मार्ग पर न ला सका। मधुव ने वरुण लोक जाते हुए शिव का दिया हुआ त्रिशूल लवण को दे दिया। लवण उसकी अद्भुत शक्ति से

परिचित था ही इसलिए वह और उद्धत हो गया। वह मुनियों को भी बहुत सताने लगा।

मुनियों की बातें सुनकर राम ने उनसे कहा - ''लवणासुर का वध मैं करवाऊँगा। आप लोग निश्चिन्त रहें।'' इसके बाद उन्होंने अपने भाइयों को देखकर पूछा - ''लवणासुर को मारने का काम कौन करेगा?''

भरत ने इस काम को करने का बीड़ा उठाया। लेकिन शत्रुघ्न को यह बात पसंद नहीं आई। उन्होंने कहा कि उनके होते भरत का कष्ट उठाना अच्छा न था अतः यह वह काम करेंगे। उन्होंने कहा कि जो कुछ कष्ट भरत को उठाने थे, वे उन्हें पहले ही नन्दीग्राम में रहते समय झेल चुके हैं। अतः अब उन्हें कष्टप्रद कार्य शत्रुघ्न को सौंप देने चाहिये।

राम इसके लिए मान गये। उन्होंने कहा कि किसी एक राजा के मर जाने पर, तुरन्त उसका राज्य भार उठाने के लिए कोई और योग्य व्यक्ति उपलब्ध होना चाहिये। अतः उन्होंने शत्रुघ्न को

मधुपुर का राजा नियुक्त करने की व्यवस्था की।

शत्रुघ्न के राज्याभिषेक उत्सव समाप्त होते ही, राम ने उन्हें एक बाण देते हुए कहा - "इस बाण ने मधुकैटभ को मारा है। इसका मैंने रावण पर भी उपयोग न किया था। इससे तुम लवणासुर को मारो। एक और बात। लवण के पास शिव के त्रिशूल-सा एक त्रिशूल है । जब तक वह उसके हाथ में है, तब तक उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। लवण अपना त्रिशूल अपने घर में ही रखता है। इसलिए, जब वह नगर छोड़कर कहीं गया हुआ हो, तुम नगर को घेर लेना। जब वह वापस आये, तो नगर के द्वार पर ही उससे मुकाबला करना और उसको मार देना। किसी भी परिस्थिति में वह नगर के अन्दर न जाये और त्रिशूल उसके हाथ में न आने पाये।"

यही नहीं, राम ने शत्रुघ्न से कहा कि वह पहले अपनी सेना भेज दें और बाद में अकेले जाएँ। लवण को यह न पता लगे कि कोई उसे मारने आ रहा था। ग्रीष्म ऋतु में सेनाओ को गंगा पार करके, उस तरफ पड़ाव करना चाहिये । शत्रुघ्न वर्षा के आरम्भ में युद्ध के लिए सज्जित होकर जाएँ और लवणासुर को मारें।

तदनुसार शत्रुघ्न ने पहिले अपनी सेना भेज दी। एक मास बाद वे स्वयं निकले। रास्ते में दो दिन के लिए वे वाल्मीकी आश्रम में रहे। वाल्मीकी ने उसको आतिथ्य दिया। फिर संध्याकाल में मुनि कई प्रकार के इतिहासों का वर्णन करते रहे। शत्रुघ्न सभी बातें विनयपूर्वक और बड़ी रुचि के साथ सुनते रहे। मुनि ने शत्रुघ्न को बताया कि कभी वह आश्रम रधुवंशवालों का ही था। इसके पीछे की कथा मुनि ने यूँ सुनाईः

रघुवंश में कभी सुदासु नाम राजा हुए थे। उनका लड़का वीरसह बड़ा बलवान था। छुटपन में ही एक बार जब वह शिकार खेलने गया, तो उसने दो राक्षसों को देखा। वे राक्षस शेर के रूप में इधर उधर घूमते और जानवरो को खाया करते। जानवरों मो मार-मार कर उन्होंने सारा जंगल ही मानो निर्जीव-सा कर दिया। कहीं भी कोई जानवर न रहा। यह देख वीरसह को बड़ा गुस्सा आया। उसने उन राक्षसों को देखते ही उनमें से एक को मार दिया। तब दूसरे ने कहा - "पापी, तुमने मेरे साथी को मार दिया। देखो तुम्हारा क्या करता हूँ?" कहकर वह तब अदृश्य हो गया।

कुछ समय बीता। उस राजा ने इसी आश्रम में एक बहुत बड़ा अश्वमेघ यज्ञ किया। वशिष्ट मुनि ने उस यज्ञ का पौरोहित्य किया। यज्ञ पूरा होने को था कि वह राक्षस वशिष्ट के रूप में, राजा से बदला लेने आया। "राजा, यज्ञ पूरा हो गया है। मुझे अच्छे मांस का भोजन दो ।"

राजा ने सन्तुष्ट होकर रसोइये को बुलाकर कहा - ''गुरु जी के लिए यज्ञ के मांस से भोजन तैयार करो।'' इस बीच राक्षस ने रसोइये का रूप धारण कर लिया। नर मांस से भोजन तैयार करके, राजा को दिखाकर उसने कहा - ''देखिये, यज्ञ के मांस से मैंने कितना अच्छा भोजन बनवाया है?'' राजा ने अपनी मन्त्री से वह नरमांस परोसवाया। वशिष्ट के पास कई तरह की शक्तियाँ थक्षं औ वे त्रिकालदर्शी थे। मांस को देखकर वे तुरन्त समझ गए कि वह यज्ञ का नहीं बल्कि नरमांस है। यह देखकर, क्रुद्ध होकर मुनि ने राजा को शाप दिया - ''तुम नरभक्षी हो जाओ।'' राजा को गुस्सा आया। उसने भी वशिष्ट को शाप देने के लिए हाथ में पानी लिया। पर इससे पहिले कि वह शाप देता, उसके मन्त्री ने उसे रोका। वह बोला - ''वे हमारे लिए देवतुल्य है। आप उनको शाप न दीजिये।'' तब राजा ने अपने हाथ का पानी अपने पैरों पर ही डाल लिया। उस पानी के कारण, राजा के पैर कल्मशपूर्ण हो गये। तब से उसका नाम कल्मशपाद पड़ा।

बाद में मुनि वशिष्ट को इस पूरी घटना के पीछे की बात पता लगी। सब जानकर उन्होंने कल्मशपाद पर शाप की अवधि बारह वर्ष तय कर दी। वह बारह वर्ष तक नरभक्षक के रूप में जीता रहा और शाप के खतम हो जाने के बाद, वह हमेशा की तरह राज्य पालन करने लगा।

इस प्रकार कई इतिहास सुनकर शत्रुघ्न अपनी पर्णशाला में जा रहे थे कि उसी समय आश्रम में रह रही माता सीता ने दो जुड़वे बच्चों को जन्म दिया। सीताजी को जुड़वां पुत्रों की प्राप्ति पर वशिष्टाश्रम में उत्सव का महौल हो गया। मुनिकुमारों से सूचना मिलने पर ऋषि वाल्मीकी वहाँ गये। चन्द्रमा की तरह तेजवान् बच्चों को देखकर, उन्होंने बड़े का नाम कुश रखा और दूसरे का लव।

राम के पुत्रों के जन्म का यह वृत्तान्त ठीक

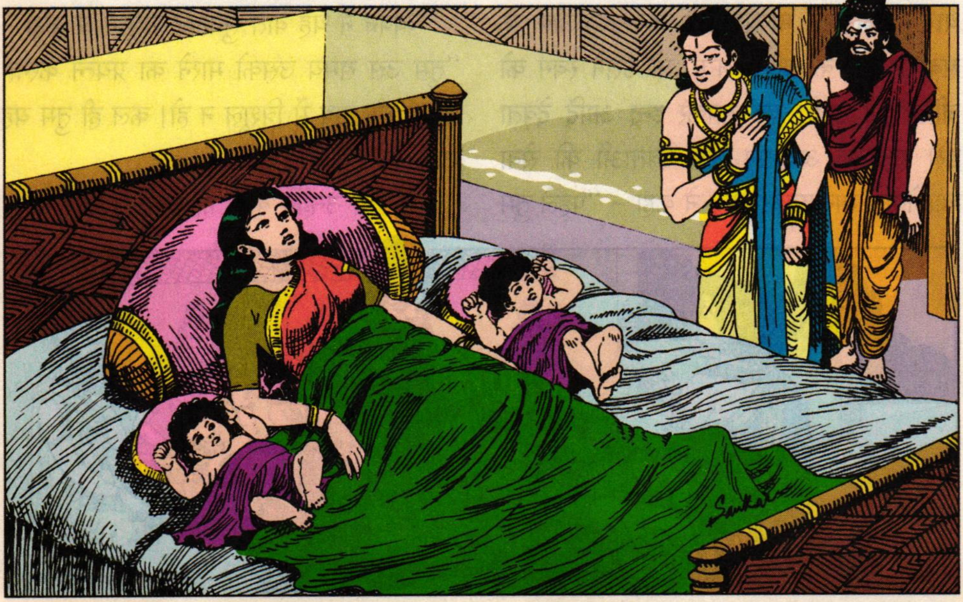

आधी रात के समय हुआ। आश्रम में मौजूद शत्रुघ्न भी यह पता लगते ही तुरन्त सीता और दोनों बालकों को देखने गए। अपने वंश की अगली पीढ़ी देखकर बहुत खुश हुए। इस अवसरपर अपने परिवार के एक सदस्य का मौचूद होना सीताजी के लिए भी सन्तोष का विषय था।

अगले दिन शत्रुघ्न ने पश्चिम की ओर कूच किया। सात दिनों की यात्रा के बाद वे यमुना के किनारे पहुँचे। वहाँ पहुँचकर उन्होंने मुनियों के एक आश्रम में रात काटी।

अगले दिन सवेरा होते ही शत्रुघ्न ने च्यवन महर्षि से लवणासुर और उसके त्रिशूल के बारे में पूछा। ऋषि ने बताया कि उस राक्षस ने अपने त्रिशूल का बहुत अधिक दुरुपयोग किया था। उसने कई लोगों पर बहुत अत्याचार किए थे। इसी कड़ी में मुनि ने मान्धाता का वृतान्त विवरण के साथ बताया।

अयोध्या के राजा युवनाश्व का लड़का मान्धाता था। महाबलवान मान्धाता ने जब पृथ्वीलोक के सब राजाओं को जीत लिया, तो उसने स्वर्ग को जीतने की ठानी। यह सुनकर इन्द्र आदि देवता डरे। इन्द्र का अर्यासन और देवताओं की सेवा चाहनेवाले मान्धाता से इन्द्र ने कहा - ''पहले तुम भूलोक को पूरी तरह जीत लो। तब देवलोक मैं स्वयं तुम्हें दे दूँगा।''

''यह क्या? भूलोक तो मैंने पहिले ही जीत लिया है। वहाँ मेरे मुकाबले का कोई नहीं है?'' मान्धाता ने कहा।

''मधुबन में लवणासुर है। क्या वह तुम्हारे आधीन है ?'' इन्द्र ने मान्धाता से पूछा।

सुनकर मान्धाता लज्जित हुआ। सिर झुकाकर वह वापस भूमि पर आया। आकर अपनी सेना के साथ लवण को हराने निकला। दूत को भेजकर उसने लवणासुर से उसका आधिपत्य स्वीकार करने के लिए कहा। किन्तु लवणासुर उसके दूत को ही पकड़कर खा गया।

जब बहुत समय तक दूत वापिस न आया, तो मान्धाता ने लवण से युद्ध छेड़ दिया। लवण मान्धाता को देखकर हंसा। जब उसने अपने त्रिशूल का उपयोग किया, तो मान्धाता और उसकी सारी सेना भस्म हो गई ।

च्यवन ने यह बात सुनाकर शत्रुघ्न से कहा - ''तुम उस समय उसको मारने का प्रयत्न करना, जब उसके हाथ में त्रिशूल न हो। कल ही तुम यह काम कर सकोगे!''

वह रात उन्होंने बातों ही बातों में काट दी ।

मित्र भेद - ६

करटक ने दमनक को आषाढ़भूति के भाग जाने का समाचार सुना कर आगे यों कहा: "आषाढ़भूति के प्रति पूर्ण विश्वास होने के कारण देवशर्मा कालकृत्यों की पूर्ति के लिये थोड़ी दूर गया। भेड़ों की एक रेवड़ घास चर रही थी। अचानक उनमें दो नर भेड़ लड़ने लगे।"

मेढ़ों, यानि नर भेड़ों की लड़ाई बड़ी अलग सी होती है। वे दोनों दौड़ते दौड़ते आकर अपने सर टकरा देते, फिर पीछे जाकर दौड़ते आते और जोर से अपने सर टकरा देते। उनके सिर फूट कर जमीन पर खून बह रहा था। खून को चाटने के लिये एक सियार आ पहुँचा। उस वक्त दोनों भेड़े पीछे हट गये।

देवशर्मा ने मन में सोचा "यह सियार वेवूकूफ है। इस बार जब दोनों भेड़ें अपने सिर लड़ा देंगे तब यह जरूर उनके सिरों के बीच दबकर मर जाएगा।" ऐसा ही हुआ।

देवशर्मा के सोचने के ही अनुसार दोनो भेड़ों ने दौड़ते-दौड़ते आकर सिर टकरा दिये। खून चाटनेवाला सियार उन भेड़ों के सिरों के बीच दब कर मर गया।

मरे हुए सियार के बारे में सोचते हुए देवशर्मा ने जल्दी-जल्दी स्नान किया और अपने शिष्य के पास पहुँचा। पर वहाँ उसका शिष्य आषाढ़भूति दिखाई न दिया। देवशर्मा को खुटका हुआ। उसके कपड़ों की गठरी वहीं पड़ी थी लेकिन सोने की गठरी न थी। देवशर्मा को बहुत बड़ा झटका लगा।

"उफ़! मेरा सोना चला गया।" यों कहते देवशर्मा बेहोश हो गया। थोड़ी देर में जब उसे होश आया, तब वह यह कहते रोने लगा, "अरे आषाढ़भूति! मुझे धोखा देकर कहाँ चले गये हो? जवाब तो दो!"

उसके मन में अतीव दुःख था। बहुत देर तक वह कुछ समझ नहीं पाया। कर्त्तव्यविमूढ़ सा एक पत्थर पर बैठा रहा और उस क्षण को कोसता रहा जब उसने आषाढ़भूति पर विश्वास किया।

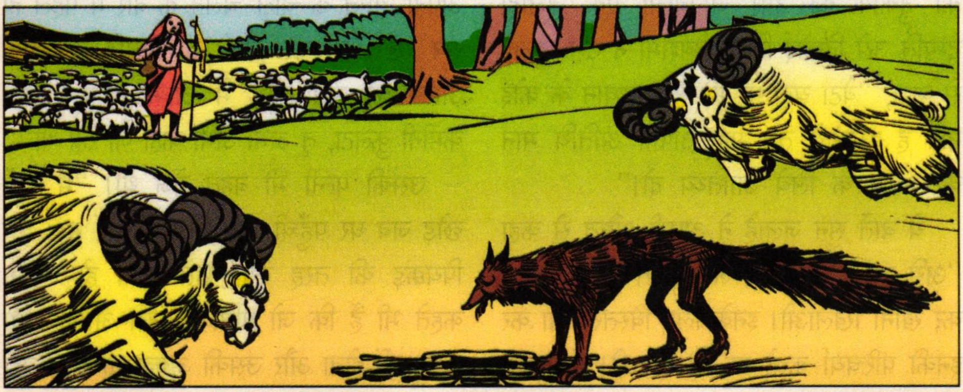

अचानक उसे कुछ याद आया। फिर आषाढ़भूति के पैरों के चिन्हों को देखता उस रास्ते चल पड़ा जिधर आषाढ़भूति गया था। जंगल में पैरों के निशानों का पीछा करना बहुत मुश्किल काम था, लेकिन देवशर्मा ने सोना वापस पाने का अधिकतम प्रयास करने का निश्चय किया था।

शाम तक देवशर्मा एक गाँव में पहुँचा। गाँव के किनारे पर ही ताड़ी की एक दुकान थी। ताड़ी की दुकान की ओर जानेवाला एक जुलाहा दम्पति उसे दिखाई दिया। देवशर्मा ने उस जुलाहे से कहा, ''बेटा यहाँ पर मेरे जानपहचान के कोई नहीं हैं इसलिये तुम मुझे अपना अतिथि मान कर आज के लिये आतिथ्य दो।''

ये बातें सुन जुलाहे ने अपनी औरत से कहा ''अरी इनको हमारे घर ले जाओ। इनके पैर धो कर खाना खिलाओ। इनके लिए बिस्तर लगा कर इनकी परिचर्या करते घर पर ही रहो। मैं तुम्हारे लिये थोड़ा मांस और ताड़ी लेता आऊँगा।''

जुलाहे की औरत कुलटा थी। वह यह सोच कर बड़ी खुश हुई कि उसे अपने प्रिय देवदत्त से मिलने के लिये एक अच्छा मौका मिल गया है। वह देवशर्मा को साथ ले अपने घर पहुँची। घर पहुँचते ही उस औरत ने देवशर्मा के लिये एक टूटी खाट डाल दी। बोली, ''मेरी एक सखी आज ही अपने गाँव से आयी हुई है। उससे बात करके अभी आ जाती हूँ। मेरे लौटने तक आप घर की रखवाली कीजिये। यों कहकर उसने अच्छे-अच्छे कपड़े व गहने पहन लिये और देवदत्त से मिलने चली गई।

मगर रास्ते में उस औरत का पति खूब ताड़ी पीने के कारण, लोटते, लड़खड़ाते, बाल बिखेरे, हाथ में ताड़ी का लोटा लिये लौटते दिखाई दिया।

उसे देख वह बड़ी तेजी के साथ घर की ओर दौड़ आई, अपने अच्छे कपड़े व गहने उतार कर पुराने कपड़े पहन लिये।

लेकिन जुलाहे ने अपनी औरत को अच्छे कपड़े व गहने पहने देख कर भी ऐसा अभिनय किया, मानो उसने उसे देखा तक नहीं। उसने अपनी औरत के चाल-चलन के बारे में पहले ही सुन रखा था। घर लौटते ही जुलाहे ने अपनी औरत को देख क्रोध में आकर पूछा, ''अरी कमीनी कुलटा, तू अभी अभी कहाँ जा रही थी?''

उसकी पत्नी भी बहुत तेज थी। ''मैं तुम्हें छोड़ जब घर पहुँची, तब से कहीं नहीं गई। तुम पियक्कड़ की तरह क्या बातें करते हो? लोग कहते भी हैं कि जो पीता है, उसे अपनी जीभ क़ाबू नहीं होता और उसकी अक्ल भी काम नहीं

करती। यह बात सच मालूम होती है।'' जुलाहे की औरत ने कहा।

अपनी पत्नी के मुँह से झूठी बातें सुनकर जुलाहे का गुस्सा और बढ़ गया। तब उसने कहा, ''मैंने तुम्हारी बदचलनी के बारे में पहले ही सुन रखा था। आज मैंने अपनी आँखों से देखा भी है।'' यों कह कर उसने लाठी ले कर अपनी औरत को खूब पीटा, और रस्सा लेकर उसे खम्भे से बाँध दिया और नशा चढ़ जाने के कारण सो गया।

जुलाहे की औरत की एक सखी नाइन थी, जो पहले से ही बदचलन थी। वह जुलाहे के घर आई, उसने देखा कि जुलाहा सो रहा है, तो जुलाहे की औरत से बोली, ''देवदत्त तुम्हारे इंतजार में बैठा है, जल्दी जाओ।''

''मैं कैसे जाऊँ? देखो तो किस हालत में हूँ। मेरे मर्द तो घर में ही है।'' जुलाहे की औरत ने जवाब दिया।

''मैं तुम्हारे बन्धन खोल देती हूँ। तुम्हारा मर्द कल सुबह सूर्योदय तक जागेगा नहीं, चाहे तो तुम मुझे अपनी जगह बाँध दो। अगर रात के वक़्त तुम्हारा मर्द जाग पड़े तब भी नशे की हालत में देख समझेगा कि तुम्हीं हो। तुम देवदत्त के पास जाकर जल्दी लौट आओ। नाइन ने समझाया।''

इसपर जुलाहे की औरत ने अपने बन्धन खुलवा कर अपनी जगह अपनी सखी को खम्भे से बाँध दिया और देवदत्त से मिलने चली गयी। उसके चले जाने के थोड़ी देर बाद जुलाहा जाग उठा, बोला, ''अरी बदजात! मुझे वचन दो कि आइन्दा तुम घर से नहीं निकलोगी और मेरे साथ

जीभ न लड़ाओगी, तब मैं तुम्हारे बन्धन खोल दूँगा।''

''नाइन ने यह सोच कर जुलाहे को कोई जवाब नहीं दिया कि वह उसके कँठ को पहचान जायेगा। जुलाहे ने यही सवाल दो चार बार किया लेकिन नाइन मौन रह गई। इसपर नाराज हो जुलाहा एक तेज चाकू लाया, नाइन की नाक काट कर बोला तुम हमेशा के लिये नककटी रह जाओ।''

इसके बाद वह जाकर सो गया। मगर सोना खो जाने की व्यथा के साथ भूख प्यास से परेशान हो जागनेवाला देवशर्मा यह सारा नाटक अपनी आँखों से देखता रहा।

''थोड़ी देर बाद जुलाहे की औरत लौट आई। उसने नाइन से पूछा तुम कैसी हो? क्या वह दुष्ट जाग गया था?''

''मैं तो अच्छी हूँ, पर तुम्हारे कम्बख्त मर्द ने बीच में उठ कर मेरी नाक काट दी है। फिर

उठ कर मेरे कान भी काटने के पहले मेरे बन्धन खोल कर मुझे अपने घर भेज दो।'' नाइन ने कहा।

जुलाहे की औरत ने नाइन के बन्धन खोल कर उसकी जगह अपने को बंधवा लिया, अपने मर्द को धिक्कारते चिल्ला उठी, ''अरे मूर्ख, मुझ जैसी शीलवती को विकृत करना तुमसे हो सकेगा? हे दिक्पाल! हे सूर्य! चन्द्र! हे वायुदेव! सुनिये! मेरे पति ने मुझपर इल्ज़ाम लगाकर बहुत बुरा किया है। साथ ही इसने मेरी नाक को चोट भी पहुँचाई है। अगर मैं पतिव्रता हूँ तो मेरी नाक को ठीक कीजिये।''

कुछ देर तक ऐसे चिल्लाने के बाद वह कहने लगी, ''अरे दुष्ट! क्या तुमने देखा? मेरी शीलता के बल पर मेरी नाक पहले जैसी हो गई है।''

जुलाहा बहुत गुस्से में तो था ही। उसने सोचा कि अगर उसकी औरत झूठ बोलती हो तो आज उसपर आग ही लगा देना है। वह अपने हाथ में जलती हुई लकड़ी लेकर आ पहुँचा। अपनी औरत की नाक को पहले जैसी ही पाकर वह चकित रह गया।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ये चमत्कार कैसे हो गया? उसे तो याद था कि उसने रात को एक चाकू से अपनी पत्नी की नाक पर बार किया था।

जुलाहे को अपनी याददाश्त पर शक होने लगा। कहीं ऐसा तो नहीं कि रात को ऐसा कुछ हुआ ही नहीं और मैंने कोई सपना देख लिया? लेकिन अगर वह यह माने कि उसने नाक काटी ही नहीं तो जमीन पर खून तो गिरा हुआ है ही।

उसे लगा कि शायद उससे कोई गलती हो गई है। उसकी पत्नी ने देवताओं से अपनी पवित्रता के एवज में नाक ठीक करना माँगा था और देवताओं ने उसकी बात सुन ली है!

उसने तुरंत अपनी औरत के बंधन खोल दिये।

''मैंने तुम पर ग़लत शक किया। यदि तुमने ऐसा कुछ किया होता तो देवता तुम्हारी मदद करने न आते। मेरे व्यवहार से तुम्हें जो दुःख हुआ है उसके लिए मुझे माफ़ कर दो!'' कहते हुए अत्यंत आनन्द में आकर उसने अपनी औरत का आलिंगन किया। फिर वह उससे हजार बार माफी माँग कर उस को खुश करने का हर तरह से प्रयत्न करने लगा।

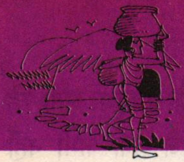

तुर्की की लोककथा

अबु और कडी

एक समय में इस्ताम्बूल में अबु नामक एक आदमी रहता था, जिसका पेशा सड़कें झाड़ना था। अबु एक हँसमुख आदमी था और इस कारण लोग खुशी-खुशी उसे कुछ सिक्के दे जाते थे।

एक दिन, अबु कुछ विशेष खुश था। उसने अपनी बचत का डिब्बा खोलकर देखा था और पैसे गिनने पर उसमें से कुल पाँच सौ सिक्के निकले थे! इस पर अबु खुशी से नाचने लगा। उसने थोड़ी और बचत करने का निश्चय किया और अपने परिवार से मिलने निकल पड़ा। परिवार से मिले उसे बहुत लम्बा समय हो चुका था और वह बेसब्री से उस यात्रा की प्रतीक्षा कर रहा था! लेकिन रात में, उसे चोरों का डर सताने लगा। "जाते समय मैं अपना धन घर में कहीं नहीं छुपा सकता। क्या करूँ?" उसने सोचा।

अबु पूरी रात जागता रहा। फिर उसे याद आया कि सारे शहर के लोग कडी पर बहुत विश्वास करते थे। अबु ने निश्चय किया कि वह उससे मदद माँगेगा। वह कडी से मिलने उसके घर गया। जब कडी ने अबु को दरवाजे पर इन्तज़ार करते देखा, तो उसने उसे भीतर बुलाया।

"मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ?" उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फिराते हुए पूछा।

"सलाम वालेकुम," अबु ने कहा। मेरे पास पाँच सौ सोने के सिक्के हैं। लेकिन मेरा घर सुरक्षित जगह पर नहीं है इसलिए यदि आप इजाज़त दें तो मैं वे सिक्के आपके पास छोड़कर जाना चाहता हूँ!

कडी ने अपना सिर हिलाया। "मैं जानता हूँ कि तुम्हारे लिए अपने धन की हिफ़ाज़त कितनी आवश्यक है! मैं अपने ही पैसों की तरह उनका ध्यान रखूँगा।" वह दृढ़ता से बोला। अबु ने उसे सैकड़ों बार धन्यवाद दिया और बताया कि वह अपने गाँव के लिए निकलने से पहले कडी से अपने सिक्के ले लेगा।

उसे क्या पता था कि कडी ने जो कहा है वही करके दिखाएगा!

अबु को लगा जैसे उसके सिर से एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो। वह खुशी-खुशी अपने काम पर चला गया। वहाँ उसे उसका एक दोस्त मिल गया।

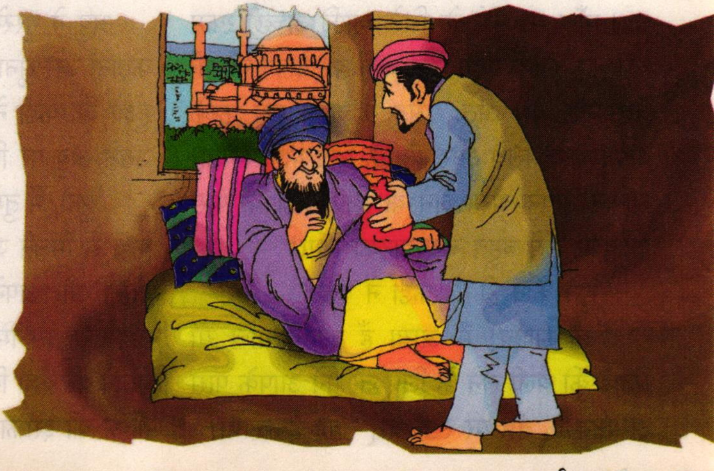

"क्या तुम मुझे बेवकूफ़ बना रहे हो? मैंने तुम्हें आज तक कभी नहीं देखा," कडी ने कहा और धड़ाम से दरवाज़ा लगा लिया।

अबु को बहुत गुस्सा आया। उसके दिल की धड़कन इतनी तेज़ हो गई कि उसे अपना दिल सीने की दीवारों से टकराता हुआ महसूस होने लगा। लेकिन वह क्या कर सकता था? लोग कडी को बहुत मानते थे और उसके कडी को पैसा देने का कोई गवाह ही नहीं था।

अबु ने एक गहरी ठंडी साँस भरी और वापस सड़कें झाड़ने चला गया। उसे लगा कि अब घर जाकर अपने परिवार को देखने में उसे बहुत समय लगेगा। उसका मन क्षोभ से भर गया।

"अबु, मैं गाँव जा रहा हूँ। तुम भी साथ क्यों नहीं चलते?" उसने पूछा। अबु ने इंकार में सिर हिलाया और बताया कि वह गाँव जाने से पहले थोड़ा पैसा इकट्ठा कर लेना चाहता है। लेकिन मित्र ने अबु पर काफी दबाव डाला। "साथ ही चलो अबु। अकेले-अकेले जाने से साथ जाना अच्छा होगा।" वह बोला।

सड़क की पत्तियाँ झाड़ते-झाड़ते अबु सोचता रहा। पाँच सौ सोने के सिक्के काफ़ी अच्छी रकम थी। वह अपनी बीवी और बच्चों को देखने को भी तरस रहा था। अतः, अबु ने जाना तय करके अपने कपड़े लिये और गाँव के लिए निकल पड़ा। लेकिन अपना पैसा लेने के लिए कडी के पास पहुँचकर उसे बहुत बड़ा झटका लगा!

"तुम कौन हो?" कडी ने पूछा।

"ओ साहब! मैं आया हूँ अपनी पाँच सौ सिक्कों की थैली लेने के लिए जो मैंने आपके पास अमानत के तौर पर रखी थी।" वह हकलाया।

एक महिला उसे अपने घर में से देख रही थी। वह कडी की पड़ौसी थी। उसने अबु को बुलाया।

"अबु, तुम तो हमेशा खुश रहते हो। आज क्या हो गया है? क्या तुम्हारी तबियत ठीक नहीं?" उसने मीठे स्वर में पूछा।

अबु ने गुस्से और दुःख के साथ अपनी पूरी कहानी उसे सुना दी। उस महिला को यकीन नहीं हुआ कि कडी ने ऐसी नाइंसाफ़ी की है। फिर भी उसने अबु पर विश्वास किया।

"सुनो, मैं तुम्हें एक तरक़ीब बताती हूँ। मैं अभी कडी से मिलने जा रही हूँ। तुम थोड़ी देर बाद वहाँ आना और अपने पैसे माँगना। फिर, उसने अपने नौकर से दस मिनट बाद कडी के घर आकर यह बताने को कहा कि उसका पति वापस आ गया है। नौकर को इसका कोई कारण समझ में नहीं आया

लेकिन उसने हाँ में सिर हिला दिया।''

तब वह महिला अपना गहनों का झोला लेकर कडी से मिलने उसके घर जा पहुँची। कडी ने गर्मजोशी से उसका स्वागत किया।

''मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'' उसने नम्रता से पूछा। उसका ध्यान महिला के हाथ में टँगे झोले पर था।

''मुझे आपकी मदद की आवश्यकता है श्रीमान्। मेरे पति मिस्र गये थे लेकिन बहुत समय बीतने के बाद भी आए नहीं। मैं उनकी खोज में जाना चाहती हूँ।,'' वह बोली।

''लेकिन मैं अपने गहनों के बारे में चिन्तित हूँ।'' उसने कहा, और फिर लगभग फुसफुसाते हुए बोली - ''और इतना विश्वासयोग्य व्यक्ति इस शहर में एक ही है, आप श्रीमान! इसलिए मुझे लगता है कि यदि मैं यहाँ न हूँ तो ये आभूषण मैं आपकी तहबील में रख दूँ। बस सोचती हूँ कहीं इनकी हिफ़ाज़त करना आपके लिए परेशानी का सबब न बने।''

''आप इसकी बिल्कुल चिन्ता न करें और आराम से जाएँ।'' कडी ने कहा।

जैसे-जैसे झोले से सोने की अँगूठियाँ, मोती के नेकलेस, और हीरे के बाजूबंद टपकने लगे, कैडी की आँखें खुशी से चमकने लगीं।

उसी समय, अबु कमरे में आया।

''श्रीमान्, मैं उन पाँच सौ सोने के सिक्कों के लिए आया हूँ, जो मैंने आपके पास बतौर अमानत रखे थे,'' अबु बोला।

कडी गुस्से से काँपने लगा लेकिन ज़बरदस्ती मुस्कुराया। ''क्यों नहीं, मैं अभी तुम्हारे सिक्कों की थैली ला देता हूँ।'' उसने कहा।

अबु को उसकी सिक्कों की थैली देते हुए कडी उस महिला की ओर मुड़कर बोला, ''देखा? इस शहर में सभी अपने सामान की हिफ़ाज़त के लिए मुझपर भरोसा करते हैं। मैं आपके सामान की भी अच्छे से रक्षा करुँगा।''

ठीक उसी क्षण, महिला का नौकर अन्दर आया और सबको सुनाकर बोला, ''मालकिन, मालिक वापस आ गए हैं!''

महिला उठ खड़ी हुई और खुशी से ताली बजाई। कडी का मुँह इतनी बड़ी निराशा से खुला का खुला रह गया।

''शुक्रिया! यदि भविष्य में कभी मुझे इस प्रकार अपने गहनों की हिफ़ाज़त की आवश्यकता हुई तो मैं आपके ही पास आऊँगी,'' उसने कहा और अबु की ओर आँख मार दी।

- रमा रमेश द्वारा पुनर्कथित

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो, जो दोनों चित्रों को एक दूसरे से जोड़ता हो?

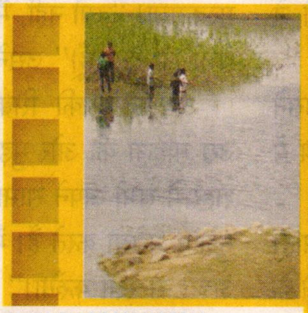

K. SUDARSAN VARMA

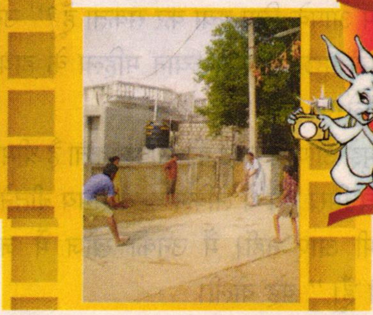

K. ARUNA

प्रविष्टि हमारे पास इस माह की २० तारीख तक इस पते पर पहुँच जाना चाहिए।
Editor, Photo contest, CHANDAMAMA INDIA LTD., B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093.
सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/- रु का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसकी घोषणा अगले अंक के बाद के अंक में की जाएगी।

बधाइयाँ

परांग घोरपड़े,
इटारसी.

विजयी प्रविष्टि

माता को वत्सों का राग
वत्स देखते माँ की राह

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१४ मार्च २०१० उत्तर:

१. ९, २. ज्युपिटर ३. नील आर्मस्ट्रॉन्ग, ४. युरेनस,
५. रशिया, ६. डॉग, लाइका, ७. मरकरी, ८. प्लूटो।

नोट: कोई भी पूर्णतः सही प्रविष्टि नहीं मिली अतः किसी को पुरस्कार नहीं दिया जा रहा है।

सुडोकू पहेली

जीतने के लिए नीचे दी गई सुडोकू पहेलियाँ हल करो और अपने समाधान हमें भेजो। रिक्त स्थानों को १ से ९ के बीच के अंकों से भरो। प्रत्येक पंक्ति, कॉलम और ३ X ३ वर्ग में हर अंक एक बार आना चाहिए। पहेलियों के समाधान जूलाइ'१० के अंक में प्रकाशित किए जाएँगे। सही प्रविष्टियों को ५०० रु का पुरस्कार दिया जाएगा।

पहेली-१

				2	8	1		
5	9		1	4		7		6
	8	4					9	
6		8	2	3				
		9			5		3	7
		3			4	2	6	
8		5		6	1			3
			7		2	4	1	
4		1					7	

पहेली-२

			6		7			
	2							7
	1			8		9		
			2				1	
		4	7		3		2	
2					4		9	5
	8	1		3	9			
	3	9			6			
	4							

अपनी प्रविष्टियाँ २५ मई २०१० से पहले इस पते पर भेजें: **Editor, SUDOKU PUZZLE, CHANDAMAMA INDIA LTD.,** B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093. या अपनी प्रविष्टियाँ इस पते पर ई-मेल करें : contests@chandamama.com

---

मार्च'१० का सही जवाब ये रहा :

क्या मार्च'१० के अंक में किलो से पाउंड बनाने वाले रूपान्तरण ने तुम्हारे दिमाग को उलझाया था? हमें मिले अधिकांश हल पारंपरिक गुणा पद्धति के थे। ये रहा रूपान्तरण का सबसे तेज़ संभव तरीका।

क्योंकि सभी कीमतें प्रति पाउंड दी गई हैं, अत: किलो वाली सभी वस्तुएँ पाउंड में बदल लो।

चरण १: श्रेया को ५ किलो चावल चाहिए।

अ. किलो के वज़न को २.५ ह्व २ = १०

ब. परिणाम को १० से भाग दो। १०/१० = १

स. दोनों परिणामों को जोड़ो। १०+१ = ११

५ किलो = ११ पाउंड

चरण २: चावल की कीमत है २ : प्रति पाउंड।

अत: ११ पाउंड चावल की कीमत होगी

११ ह्व २ = २२ £

सभी आइटम्स के लिए इसी प्रक्रिया को दोहराओ। तुम्हें ये मिलेगा: चावल = २२ £

थाई नूडल्स	= ६.६ £
ठंडी सब्ज़ियाँ	= २६.४ £
वॉशिंग पाउडर	= ८.८ £
चिकन	= १३.२ £
दही	= ४.४ £
कुल कीमत	= ८१.४ £

अत: बिल भर देने के बाद श्रेया के पास बची राशि = १०० - ८१.४ = १८.६ £

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - १६

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

Co-sponsored by FOUNDATION, Bangalore

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को २५० रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

***यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को रु.५० की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना है:

१. एक कागज पर उत्तर लिखो।

२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।

३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-१६** लिखो।

४. तुम्हारे उत्तर हमें ३० मई तक मिल जाने चाहिये।

५. सही उत्तर जुलाई २०१० के अंक में प्रकाशित होंगे।

सुपरहीरोज़ के बारे में सब-कुछ!

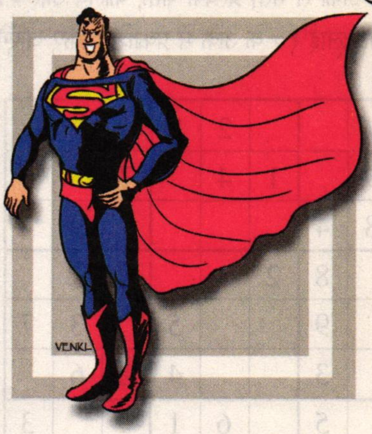

१. सुपरमैन किस गृह से है?

२. स्पाइडरमैन को उसकी शक्तियाँ कहाँ से मिलीं?

३. नाराज़ होने पर कौन से सुपरहीरो का रंग बदल जाता है?

४. ग्रीन गोबलिन और डॉ ऑक्टोपस किसके दुश्मन हैं?

५. वंडर वुमन की लासो का काम क्या है?

६. यह सुपरहीरो एक योद्धा राजकुमारी है।

७. कैटवुमन की बेटी का नाम क्या है?

८. पृथ्वी पर सुपरमैन का नाम क्या है?

९. किस कलाकार को एक सुपरहीरो मूवी में उनकी एक्टिंग के लिए ऑस्कर मिला था?

चन्दामामा को अपनायें!

अपने न्यूज़पेपर वाले से आपको नियमित रूप से चन्दामामा देने का अनुरोध करें। आप इसे आम न्यूज़-स्टैंड या प्रमुख बुक शॉप्स से भी ले सकते हैं। चन्दामामा के लिए www.chandamama.com पर लॉग करें।

कीलों का सन्तुलन बनाना

क्या तुम एक कील के सिरे पर एक दर्जन कीलों का सन्तुलन बना सकते हो? असम्भव लगता है! लेकिन ये आसानी से किया जा सकता है।

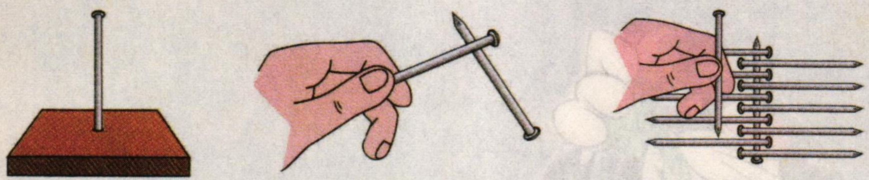

तुम्हें क्या चाहिए :

- १३ स्टील की कीलें (८ सेमी लंबी)
- ४ वर्ग सेमी का लकड़ी का टुकड़ा

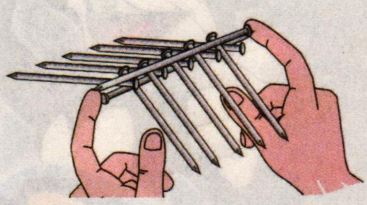

क्या करना है :

- एक कील को लकड़ी के टुकड़े में हथौड़ी की मदद से सीधा ठोक दो।
- चित्र में दिखाए अनुसार एक दर्जन कीलें जमाओ। पाँच कीलों के सिरे दाईं ओर और अन्य पाँच के बाईं ओर रहेंगे। अन्तिम कील सभी कीलों के सिरों के बीच टिकी रहेगी।
- पहली और आखिरी कील के दोनों सिरों को पकड़कर इस पूरे संयोजन को उठा लो। कीलें छत के आकार में सीधी उठी रहती हैं।

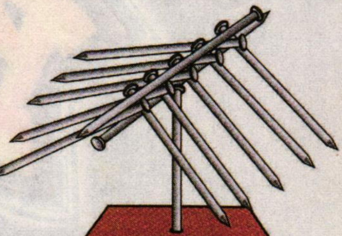

- पूरे संयोजन को सीधी ठोकी गई कील के सिरे पर रख दो। तुम्हें यह देखकर आश्चर्य होगा कि पूरा संयोजन एक ही कील पर टिक गया! यह संयोजन काफ़ी स्थिर होता है और कीलों को झूले की तरह हिलाया भी जा सकता है।

सिद्धान्त :

दिखाए अनुसार संयोजन करने से एक बहुत अच्छी इंटरलॉकिंग व्यवस्था बनती है। इसका उपयोग करके छत का सपोर्ट बनाया जा सकता है। यह व्यवस्था बहुत मजबूत होती है और तुम इसे हिला भी सकते हो।

(यह पृष्ठ, पूना के इंटर-यूनिवर्सिटी सेन्टर फ़ॉर एस्ट्रॉनॉमी एण्ड एस्ट्रोफ़िज़िक्स में अतिथि वैज्ञानिक, श्री अरविन्द गुप्ता ने लिखा है।)

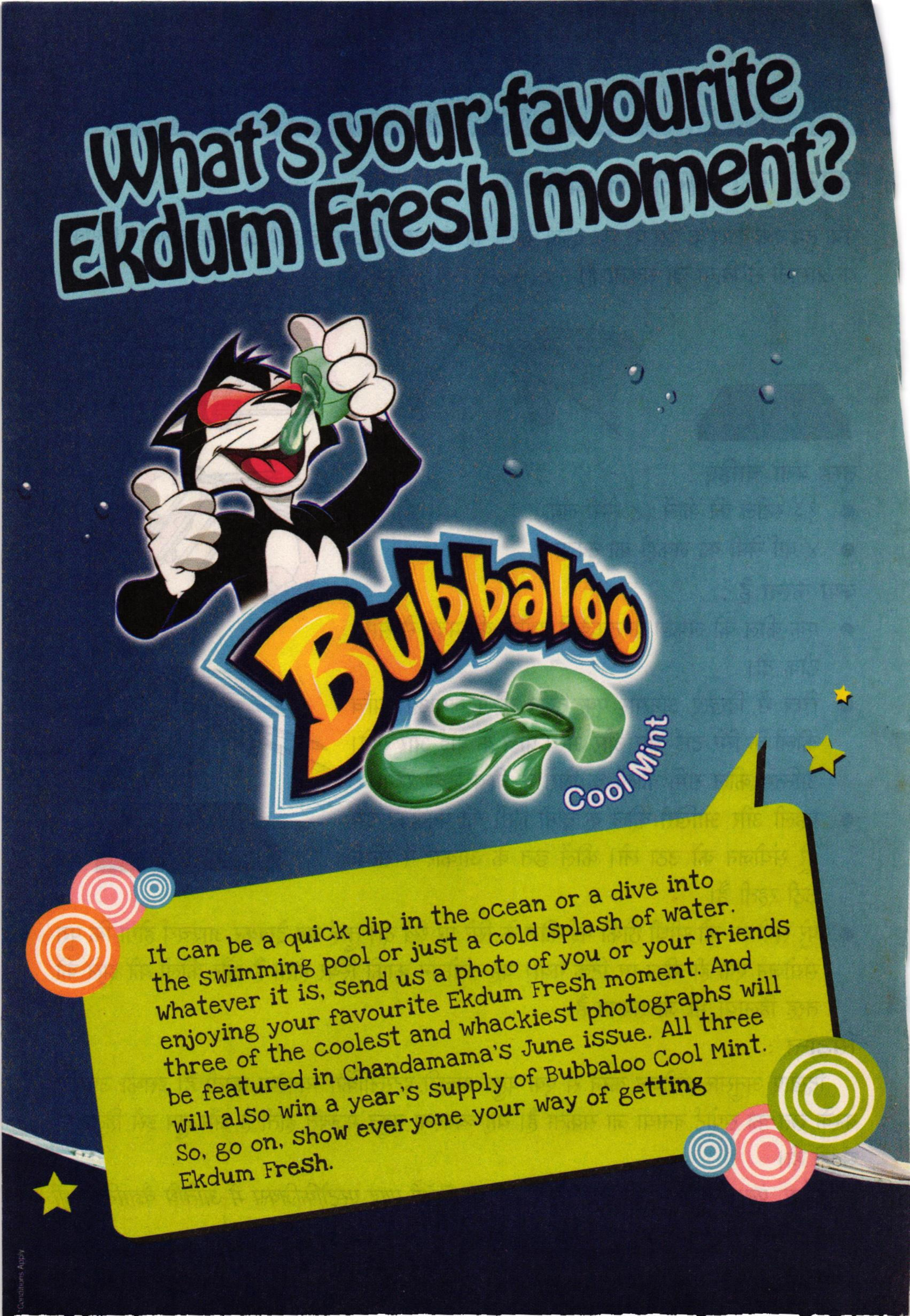
What's your favourite Ekdum Fresh moment?
Bubbaloo
Cool Mint
It can be a quick dip in the ocean or a dive into the swimming pool or just a cold splash of water. Whatever it is, send us a photo of you or your friends enjoying your favourite Ekdum Fresh moment. And three of the coolest and whackiest photographs will be featured in Chandamama's June issue. All three will also win a year's supply of Bubbaloo Cool Mint. So, go on, show everyone your way of getting Ekdum Fresh.
Conditions Apply

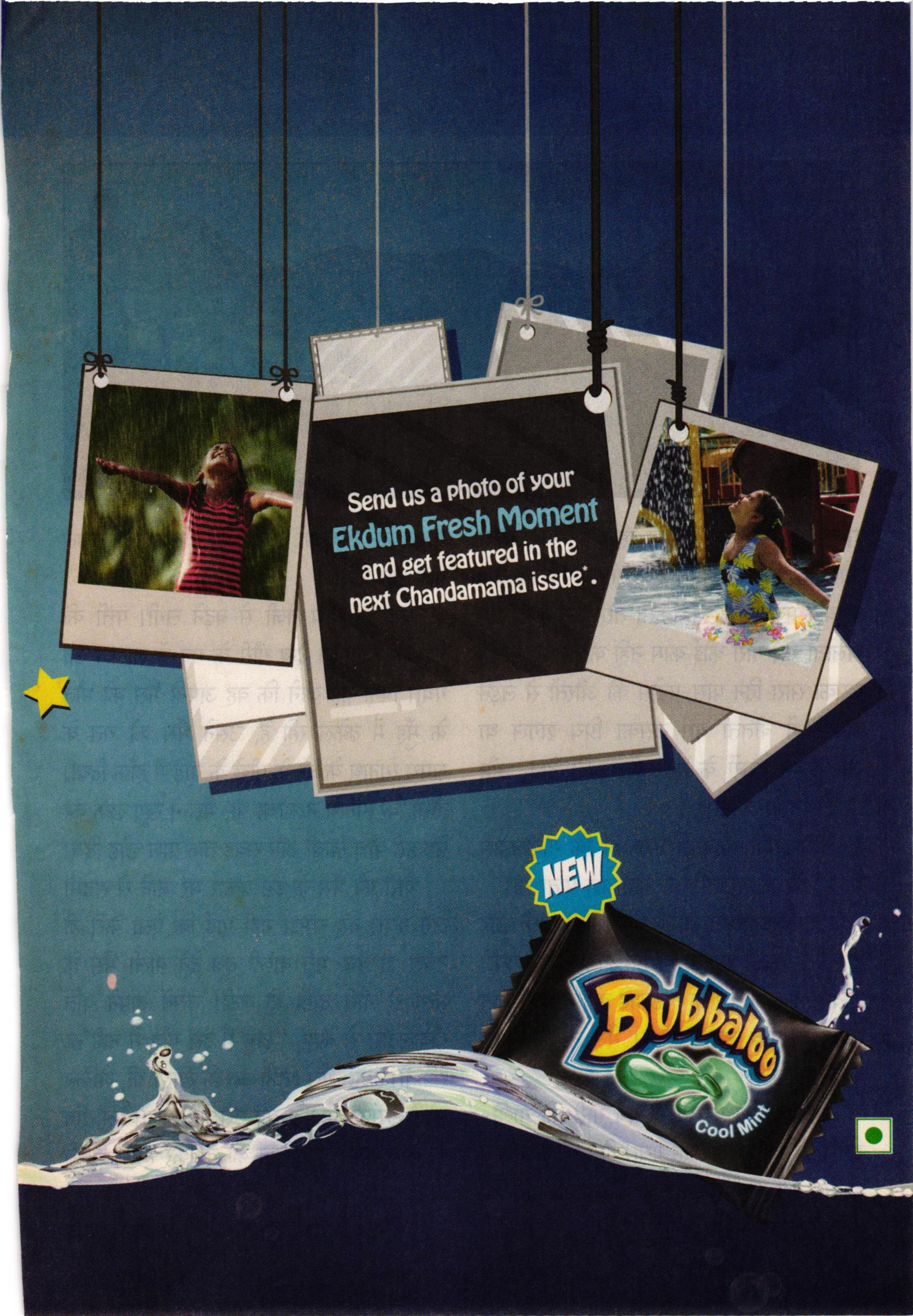
Send us a photo of your
Ekdum Fresh Moment
and get featured in the
next Chandamama issue*.
NEW
Bubbaloo
Cool Mint

परिवर्तन

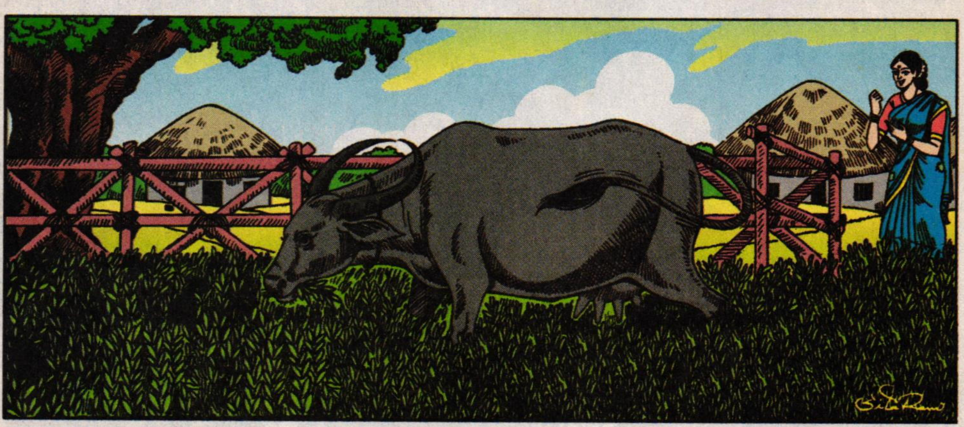

गजपतिनगर में एक दम्पति रहते थे- गोकुलदास और गौरी। गोकुलदास गरीब था और गाँव के किसानों के यहाँ मजदूरी कर के किसी तरह अपनी गृहस्थी चलाता था। गौरी कोई काम नहीं करती थी, बल्कि उसका सारा दिन पास-पड़ोस की औरतों से लड़ने झगड़ने में बीतता था। उसका प्रिय शगल था जानबूझकर दूसरों के काम में दख़ल देना, और उनकी निन्दा करना।

गौरी इतनी तुनक मिजाज़ थी कि गोकुलदास भी डर के कारण उसे कुछ नहीं कह पाता था।

एक दिन गौरी ने अपनी भैंस यों ही खुली छोड़ दी। भैंस पड़ोसी रंगनाथ के पिछवाड़े में घुस गयी। रंगनाथ ने अपने घर के पिछवाड़े कई तरह के साग सब्ज़ी के पौधे लगा रखे थे। भैंस ने अधिकांश पौधे चर डाले।

नुक़सान होने पर भी रंगनाथ गौरी की गाली-गलौज से डर कर चुप रह गया। फिर भी उसने मन ही मन इस बात का निश्चय किया कि गौरी को उचित सबक सिखाना चाहिए। उसने अपने पिछवाड़े में इस बार सब्ज़ियाँ न बोकर ज़हरीली पत्तियों वाले पौधे रोप दिये।

ज़हरीली पौध तेज़ी से बढ़ने लगी। पत्तों की चिकनी हरियाली देख गौरी के मन में लालच आ गया। बिना यह जाने कि वह अपनी भैंस को मौत के मुँह में ढकेल रही है, उसने भैंस को रात के समय रंगनाथ के घर के पीछे के बाड़े में हाँक दिया। जैसा कि रंगनाथ ने सोचा था, भैंस ने खूब छक कर वह हरी पौध खायी और सुबह तक प्राण छोड़ दिये।

गौरी को भैंस के इस प्रकार मर जाने से सदमा लग गया। वह समझ नहीं पाई कि ऐसा कैसे हो गया। दो वक्त भरी बाल्टी दूध देने वाली भैंस के मरने से गौरी दुखी हो उठी। उसने अपने पति गोकुलदास से कहा, ''अब मैं इस गाँव में नहीं रह सकती। हमारीं भैंस इतनी अच्छी ख़ासी थी, लेकिन लोगों ने मंत्र-तंत्र फूँक कर उसे मार डाला। इस गाँव के लोग हमारे सुख-चैन को देखकर हमसे जलते हैं।''

''गौरी, जो होना था, सो तो हो गया। हमारे

चिल्लाने अथवा शोर मचाने से अब क्या फायदा है?'' गोकुलदास ने शांत स्वर में कहा ।

पति की बातों से गौरी शांत न हुई, बल्कि उसकी क्रोधाग्नि भड़क गई। वह और भी उत्तेजित होकर बोली, ''यह गाँव नहीं, मसान है। कल सवेरे ही हम यहाँ से मेरी माँ के गाँव चले जायेंगे। मेरे पीहर में तुम्हें कोई न कोई काम मिल ही जायेगा। फिर हम वहीं रहेंगे।''

गोकुल गौरी की बात का विरोध न कर सका । दूसरे दिन सुबह ही सुबह उठकर गोकुल अपनी पत्नी को लेकर उसके पीहर रामपुर के लिए निकल पड़ा। जब ये दोनों अपने तालाब के पास से गुज़र रहे थे तो इन्होंने रमाकांत मछुआरे को मछलियाँ पकड़ते देखा। उसके पास एक टोकरी रखी थी। उस वक्त वह एक मछली को काँटे से निकाल कर टोकरी में डाल रहा था।

गौरी को यह दृश्य देख कर बड़ा अचरज हुआ। वह दाँतों तले उंगली दबा कर बोली, ''इस रमाकांत को हाथ-पैर मारे बगैर तालाब की मेड़ पर बैठे-बैठे ये मछलियाँ मिल जाती हैं और इन्हें यह मनमाने दामों पर बेच देता है। आओ, जरा पूछें, बालिश्तभर की इस मछली का यह क्या दाम बोलता है?''

यह कहते-कहते गौरी ने टोकरी में हाथ डाल दिया। उस टोकरी में मछलियों के साथ कुछ केकड़े भी थे। एक केकड़े ने गौरी की उंगली को काट लिया। गौरी पीड़ा से चीख उठी, फिर क्रुद्ध हो कर बोली, ''रमाकांत, तुम भी कैसे मछुआरे हो? केकड़े और मछलियों को क्या एक ही टोकरी में रखा जाता है?'' क्रोध और बढ़ने पर वह गालियाँ बकने लगी।

मछुआरा रमाकांत गौरी के शांत होने तक चुप रहा, फिर बोला, ''भाभी, ये केकड़े और मछलियाँ

इसी तालाब से निकले हैं। जैसे ये पानी में मिलजुल कर रहते हैं, वैसे ही इस टोकरी में भी रहते हैं। और मैं तो सच कहूँगा, अगर तालाब में ये मछलियाँ मुँह बन्द करके रहतीं और शिकार के लालच में न पडतीं, तो आज इन्हें अपनी जान से हाथ न धोना पड़ता। ये तालाब में ही आराम से रहतीं।''

''अच्छा, अच्छा! तुम अपना प्रवचन बन्द करो। ज़रा देखो तो सही, मेरी उंगली को केकड़े ने कैसा काटा है!'' गौरी ने तमक कर कहा।

रमाकांत मुस्करा कर बोला, ''कुछ लोगों का स्वभाव ही ऐसा होता है कि वे दूसरों से छेड़खानी कर झगड़ा मोल ले लेते हैं। केकड़े का स्वभाव भी कुछ ऐसा ही है। वह चाहे पानी में रहे या बाहर, उसका गुण बदलता नहीं। फिर भी मेरी बात सुनो, क्या इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं? तुमने टोकरी में हाथ डालकर उसे उकसाया क्यों?''

गोकुलदास अपने गाँव को छोड़ना नहीं चाहता था। केवल गौरी की बात रखने के लिये वह घर से

निकल पड़ा था। इस विषय पर बात शुरु हो जाने से उसे भी एक मौका मिला और उसने गौरी को समझाने के लिये कहा, ''गौरी, अपने रमाकांत भैया ने जो कहा, एकदम सत्य है। क्या तुमने उनकी बातों के मर्म को समझा? जब तक हमारा स्वभाव केकड़े की तरह है, हम चाहे गजपतिनगर में रहें या रामपुर में, हमें यही भुगतना पड़ेगा। तुमने आगे रहकर केकड़े को छेड़ा, इसलिये उसने अपने स्वभाव के अनुसार तुम्हारी उंगली में मुँह मार दिया। बोलो, यही हुआ है न?''

''और नहीं तो क्या हुआ है? देखो, अभी तक मेरी उंगली में दर्द है।'' गौरी बोली।

''रमाकांत ने अभी जो कुछ भी कहा, वह गूढ़ अर्थों वाला था। उसने केकड़े के माध्यम से तुम्हें यह बताया है कि तुम्हारी परेशानियाँ खुद तुम्हारे ही कारण अधिक हैं। उसकी सारी बातों का मतलब है, आप भले तो जग भला।''

''इतने बरसों तक हम इस गाँव में रहे। लेकिन हमारे झगड़े-फ़साद दिन पर दिन बढ़ते ही गये। तुम क्या सोचती हो कि हम नये गाँव में जाकर शांति से अपने दिन काटेंगे? ऐसा होने के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि हमारे स्वभाव में परिवर्तन हो। जब हम दूसरों के साथ शान्ति से व्यवहार करना सीख लेंगे, तो दूसरे भी हमें वैसा ही आदर-सम्मान देंगे।'' गोकुलदास ने प्रेम से कहा।

''पति की बात गौरी के अन्दर चली गई। वह कुछ में क्षण रुक कर बोली, चलो, हम अपने ही गाँव मे रहेंगे। शायद केकड़ा तो अपना स्वभाव बदल नहीं सकता। पर मनुष्य होने के नाते मैं अपना स्वभाव परिवर्तित करने का प्रयत्न करूँगी। आज से मैं सब के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार करूँगी। और तुम मुझमें इस परिवर्तन को इस क्षण से ही देखोगे।''

गौरी की बातें सुनकर गोकुलदास की आँखें भर आईं। उसकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। उसने गौरी के इस परिवर्तन पर भगवान को धन्यवाद दिया और खुशी-खुशी उसके साथ घर लौट पड़ा।

गोकुलदास के मन में पहले शंका थी कि शायद अपनी आदत की मजबूरी के कारण गौरी अपने स्वभाव को बदल न सकेगी। पर गौरी ने अपने आपको मिले सबक को व्यर्थ नहीं जाने दिया। उसका सभी के साथ व्यवहार बदल चुका था। इसके बाद कभी किसी ने उसे किसी से लड़ते-झगडते नहीं देखा।

अहंकार

राजा बलवन्त सिंह काफी वृद्ध हो चुके थे। उन्होंने भाव्यग्रन्थों की सहायता से श्रीमद्भगवद्गीता का अध्ययन किया और उसके अनुवाद को काव्य रूप में प्रस्तुत किया। काव्य-रचना पूर्ण होने के बाद राजा के मन में यह विचार आया कि उनसे बढ़कर और कोई कवि नहीं है। उस समय राज्य में विष्णुशर्मा को श्रेष्ठतम महाकवि माना जाता था। बलवन्त सिंह ने विष्णुशर्मा के पास यह सूचना भेजी कि जो राजा की समता कर सके, ऐसे कवि को राजधानी में राजा के पास भेजा जाये।

पहले तो विष्णु शर्मा काफी सोच विचार में पड़ गया, फिर उसने श्रीवत्स नाम के एक युवक को राजा के पास भेज दिया । राजा ने श्रीवत्स से कहा, ''तुम जैसे साधारण कवि से मेरा काम नहीं चलेगा। भगवद्गीता जब मेरे जैसे व्यक्ति की समझ में टीका ग्रन्थों और भाष्यों के अध्ययन के बाद आयी, तब तुम क्या समझोगे? फिर मैंने तो उसे काव्य का रूप दिया है जो और भी गूढ़ है। तुम अपने गुरु विष्णु शर्मा को मेरे पास भेज दो।''

थोड़े दिनों के उपरान्त विष्णु शर्मा स्वयं राजा के पास आया । राजा ने उससे श्रीवत्स नाम के उस युवक कवि की चर्चा की और कहा कि ऐसे नौसिखिये लोगों को उसे राजसभा में नहीं भेजना चाहिए था।

विष्णु शर्मा बोला, ''महाराज, आपने भगवद्गीता को समझने के लिए जो टीका-ग्रन्थ पढ़े हैं, वे मैंने ही आपको दिये थे और उन ग्रन्थों का रचयिता श्रीवत्साचार्य वही युवक है।''

राजा यह उत्तर सुनकर चकित रह गया । उसने विष्णुशर्मा से पूछा, ''पर उस युवक ने यह बात मुझे नहीं बतायी। क्या वह इतना विद्वान, इतना बड़ा कवि है?''

विष्णुशर्मा ने नम्र स्वर में कहा, ''सच्चे कवि और विज्ञ जन कभी आत्म प्रशंसा नही करते।'' यह सुनकर वृद्ध राजा बलवन्त सिंह का अहंकार जाता रहा।

उलझन की गाँठ

चन्द्रनाथ एक सम्पन्न व्यक्ति था, लेकिन दो वर्ष की बीमारी में उसका सब कुछ स्वाहा हो गया। जिस समय उसने अपने प्राण छोड़े, उसका इकलौता बेटा गिरिनाथ न केवल इस संसार में अकेला रह गया बल्कि पिता के ऋण के बोझ से दब गया था। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और नौकरी करने के ख्याल से पास ही के एक छोटे से शहर इन्द्रनगर की ओर चल पड़ा।

गिरिनाथ पैदल चल कर थोड़ी दूर गया ही था कि सड़क के किनारे एक पेड़ की छाया में एक बूढ़ा आदमी बैठा दिखाई पड़ा। उसने गिरिनाथ को रोककर कहा, ''बेटे क्या तुम शहर की तरफ़ जा रहे हो? मैं भी वहीं जाना चाहता हूँ लेकिन कोई सवारी नही मिल रही है। अगर तुम मेरे साथ चलो तो मुझे बहुत सहारा मिल जाएगा। एक तो मैं बूढ़ा हूँ ऊपर से दिल का रोगी। तुम्हारे इस उपकार को मैं कभी नहीं भूलूँगा।''

गिरिनाथ बेचारा खुद ही थका मांदा था लेकिन पैसे नहीं थे कि वह किराये की गाड़ी कर पाता। वह बूढ़े की बात सुन कर सोच में पड़ गया। अभी वह कुछ कहता, इसके पहले ही बूढ़ा बोला, ''बेटे मुझे गलत मत समझना, गाड़ी का किराया मैं दूँगा। मुझे सिर्फ तुम्हारे साथ की जरूरत है क्योंकि मैं रोगी हूँ और इधर कुछ कायर भी हो गया हूँ। अकेले कहीं भी जाते हुए मुझे डर लगता है। अगर तुम मेरी मदद करोगे तो मैं तुम्हारा आभारी रहूँगा।''

गिरिनाथ ने कहा, ''बाबा, आप कैसी बात कर रहे हैं। मैं आपका बेटा हूँ इसमे आभारी होने की क्या बात है? हम दोनों ही अकेले हैं। साथ साथ आराम से रास्ता कट जाएगा।''

थोड़ी देर बाद एक किराये की गाड़ी आई। बूढ़े ने गिरिनाथ से कहा, ''बेटे, अगर तुम बुरा न मानो तो मेरा सन्दूक उठा कर गाड़ी पर रख दो। मुझे वैद्यों ने भारी बोझ उठाने के लिये मना किया है।''

गिरिनाथ ने उस बूढ़े का सन्दूक उठा कर गाड़ी पर रख दिया और बूढ़े को अपने हाथ का सहारा दे

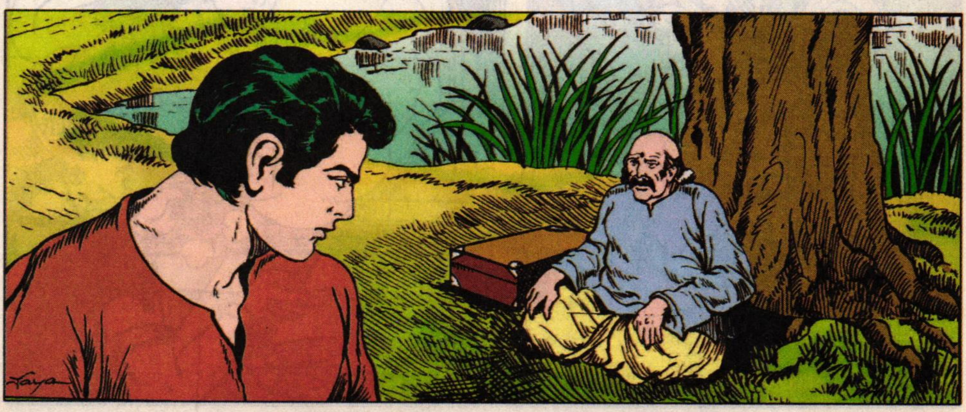

कर गाड़ी पर चढा दिया। गाड़ी जब शहर की सीमा पर पहुँची, उस समय सूरज डूबने को था।

गाड़ी के शहर की प्रमुख सड़क पर पहुँचने पर दो सिपाही गाड़ी के पास आ कर पूछने लगे, "तुम लोग कहाँ से आ रहे हो? हमें गाड़ी की तलाशी लेनी है।"

यह सुनकर बूढ़े का चेहरा पीला पड़ गया और वह घबरा कर बोला, "महोदय मैं दिल की बीमारी से पीड़ित हूँ। इलाज करवाने के लिये शहर जा रहा हूँ। अतः मुझे शीघ्र जाने दीजिये।"

"सिपाहियों ने कहा कि वे उसके माल की तलाशी लेंगे। और फिर वह कहीं भी जाने के लिये स्वतंत्र है।"

यह सुन कर बूढ़ा तुरन्त बोला, "यह सन्दूक मेरा नहीं है। सामने बैठे जवान का है। यह कह कर वह विस्मित युवक की ओर क्रोध भरी दृष्टि डाल कर बोला, "अरे तुम इतने आश्चर्य से क्या देख रहे हो? सन्दूक की चाभी उनके हाथ में दे क्यों नहीं देते?"

और भी आश्चर्य में भरकर युवक ने कहा, "चाभी मेरे हाथ में कैसे आई?" बूढ़ा खीझ कर बोला, "तुम्हारी सन्दूक की चाभी तुम्हारे पास नहीं तो किसके पास होगी?"

इस बीच गाड़ी वाले ने गिरिनाथ से कहा, "सन्दूक की चाभी जल्दी इनको दे दो क्योंकि मुझे शीघ्र ही अपने घर लौटना है।" गाड़ीवाले ने गिरिनाथ को स्वयं अपनी आँखों से सन्दूक गाड़ी में रखते हुए देखा था। और वह समझ रहा था कि सन्दूक गिरिनाथ का ही है।

कुछ भी न समझ पाने पर गिरिनाथ चिन्ता में डूब गया। तब परेशान हो कर सिपाहियों ने ताला

तोड़ कर सन्दूक खोल लिया। उसमें बहुत से पुराने वस्त्र भरे थे। कपड़ों को हटाने पर उन्हें एक थैली प्राप्त हुई जिस में अनेक स्वर्ण आभूषण भरे हुए थे। सिपाहियों ने गिरिनाथ को अपराधी समझ कर डांटना शुरु कर दिया, "चोर कहीं के! लगता है तुम्हीं ने मिर्जापुर के जमींदार के घर को लूटा होगा, लेकिन छुपाने से क्या चोरी का माल छिप सकता है?"

गिरिनाथ डर से कँपकँपाता हुआ बार-बार विश्वास दिलाने की कोशिश कर रहा था। "यह सन्दूक इस बूढ़े का है, मेरी बात पर विश्वास कीजिये। इतना सुनते ही बूढ़ा रौद्र रूप धारण करके बोला, अरे बदमाश कहीं के? तुम मेरे ऊपर चोरी का आरोप लगा रहे हो। तुम्हें मेरी बूढ़ी उम्र का भी ख्याल नहीं। जानते नहीं बड़ों के साथ कैसे बात करते हैं।"

उन दोनों की बातें सुनकर सिपाही भी उलझन

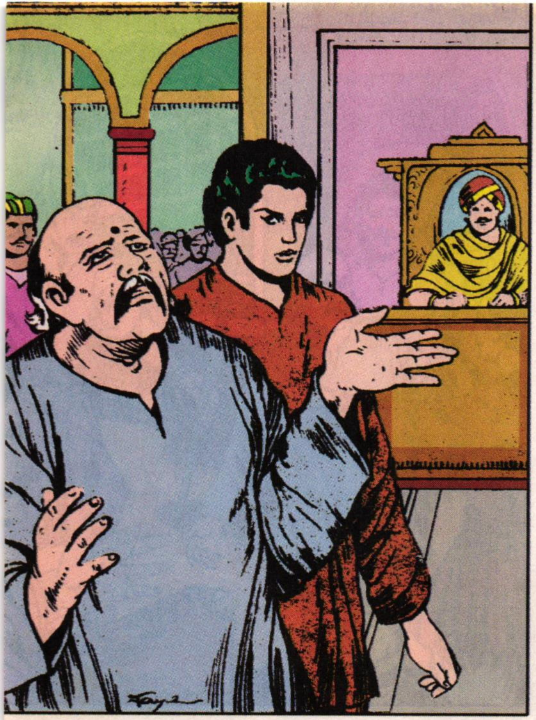

में पड़ गये और खीझ कर बोले, ''कुछ समझ नहीं आ रहा है, तुम में से कौन सच बोल रहा है और कौन झूठ? तुम दोनो को ही थाने में चलना है। वहीं इस बात का फैसला हो जाएगा।''

यह कह कर सिपाही दोनों को कोतवाली में ले गये। कोतवाल गाड़ी वाले को पहले से ही जानता था उसने उसे जाने दिया। इसके बाद बूढ़े और गिरिनाथ से पूछताछ शुरू की। वहाँ भी दोनों बराबर यही कहते रहे कि यह सन्दूक मेरा नहीं है, मेरा नहीं है। कोतवाल ने सिपाहियों को आदेश दे दिया कि दोनों को ही बन्दी बना लें। फिर बूढ़े और गिरिनाथ की ओर मुड़ कर बोला, ''तुम दोनों में से ही एक डाकू है। कल सवेरे मैं इसका फैसला करूँगा। यह कह कर वह अपने घर चला गया।''

कोतवाल रास्तेभर और खाना खाते वक्त भी यही सोचता रहा, दोनो में कौन डाकू है। यहाँ तक कि उसके चेहरे पर भी परेशानी के भाव थे। उसकी पत्नी ने उसकी परेशानी भाँप ली और उससे पूछा, ''आखिर क्या बात है, आप इतने परेशान क्यों हैं? कोतवाल ने सारा किस्सा सुना कर कहा, ''मैं इतने वर्षों से नौकरी कर रहा हूँ, लेकिन आज तक ऐसा नहीं हुआ कि अपराधी का पता न लग पाया हो।''

कोतवाल की पत्नी थोड़ी देर सोच कर बोली, ''आप इसे बहुत बड़ी उलझन की गाँठ समझ कर भ्रम में पड़ गये हैं। मेरी बात मान कर ऐसा कीजिए।'' यह कह कर उसने अपने पति के कान में कुछ कहा। कोतवाल ने दूसरे दिन थाने में पहुँचते ही गिरिनाथ को बुला कर उससे कहा, ''मुझे सूचना मिली है कि जमींदार के घर को लूटने वाला डाकू माल सहित पकड़ा गया है, अब तुम जा सकते हो। यह कहकर उसने बूढ़े का सन्दूक गिरिनाथ के हाथ में दे दिया। उस सन्दूक को देखकर वह युवक घबरा कर बोला,'' हुजूर, यह सन्दूक मेरा नहीं है, इस बूढ़े का है। ''आप मुझे क्यों दे रहे हैं? मैने पहले भी आप से निवेदन किया था।''

कोतवाल इतना सुनते ही क्रोध से बोला, ''गाड़ीवान की गवाही के अनुसार यह सन्दूक तुम्हारा है। जिसकी चीज़ है उसे उसी को सौंप देना हमारा कर्तव्य है। अब तुम ये सन्दूक लेकर यहाँ से चले जाओ। युवक ने परेशान होकर सोचा कि पहले थाने से बाहर चला जाय फिर यह सन्दूक उस बूढ़े को वापस किया जा सकता है। यह सोच कर वह सन्दूक लेकर बाहर चला गया।''

गिरिनाथ के बाहर जाते ही कोतवाल ने बूढ़े को बुलाकर कहा, ''आप निर्दोष हैं। हमने गलती से आप पर सन्देह किया। हमें असली डाकू मिल गया है। मैंने उस युवक को भी सन्दूक देकर यहाँ

से भेज दिया है, अब आप भी जा सकते हैं।''

सुनते ही बूढ़ा निराश हो गया। उसने सोचा, गिरिनाथ उसका सन्दूक गहनों सहित लेकर चला गया। लेकिन उसने निश्चय किया कि वह किसी भी हालत में उस नवयुवक को अपना सन्दूक नहीं ले जाने देगा। बूढ़ा उस युवक की खोज में चल दिया। अभी वह गली पार कर ही पाया था कि उसने देखा कि एक जगह वह युवक सन्दूक सहित बैठा हुआ है। बूढ़ा तेजी से उस युवक के पास पहुँचा और उसे डाँट कर बोला, ''कम्बख़्त! दस हजार के गहने अकेले ही हड़प जाना चाहते हो।''

गिरिनाथ बोला, ''नहीं दादा, मैं तो आप के सन्दूक को आपको ही सौंपने के ख्याल से यहाँ बैठा हुआ हूँ। लेकिन एक बात नहीं समझ आ रही है कि कोतवाल साहब ने तो कहा था कि इस सन्दूक में जो गहने हैं वह चोरी के नहीं हैं। फिर आपने इस सन्दूक को अपना मानने से क्यों मना कर दिया? चलिए, अच्छा हुआ आपका माल आपको मिल गया। अब हम दोनों के रास्ते अलग-अलग हैं। मुझे भी कोई नौकरी ढूँढनी है।'' यह कह कर वह युवक चलने को हुआ।

इतने में पीछे से आकर कोतवाल बोला, ''दिल के मरीज दादाजी थोड़ा रुक जाइए। इस सन्दूक में गहनें नहीं हैं, सिर्फ़ पुराने कपड़े हैं।'' और अपने पीछे आने वाले सिपाहियों को बूढ़े को दिखाकर बोला, ''यह बूढ़ा मशहूर डाकू है और जो गहने बरामद हुए हैं वे जमींदार के घर से ही चुराए हुए हैं। इसको इसी समय जेल में डाल दो।''

यह खबर सुनते ही गिरिनाथ खुशी से बोला, ''इसका मतलब सच्चा चोर पकड़ा गया। मुझे खुशी है कि मेरे निर्दोष होने का प्रमाण मिल गया।''

कोतवाल ने आगे बढ़कर युवक के कन्धे थप थपा कर कहा, ''इस घटना से तुम्हारे निर्दोष होने का ही नहीं बल्कि तुम्हारी ईमानदारी का भी सबूत मिल गया है। तुम्हारी ईमानदारी देख कर मैं तुम्हें थाने में नौकरी देना चाहता हूँ। क्या तुम करोगे?''

इतना सुनते ही गिरिनाथ बहुत प्रसन्न हो गया औऱ बोला, ''हुज़ूर इससे बढ़ कर मेरे लिए और क्या खुशी की बात हो सकती है?''

''आपने आज जो कुछ मेरे लिए किया है, उसे मैं जीवन भर याद रखूँगा। आपने मुझे एक झूठे इल्जाम से बचाया, साथ ही मुझ बेकार को नौकरी दे दी। मैं आपकी इस कृपा के लिए अत्यन्त आभारी हूँ।''

काले जादू से छुटकारा पाने के लिए मन्दिर

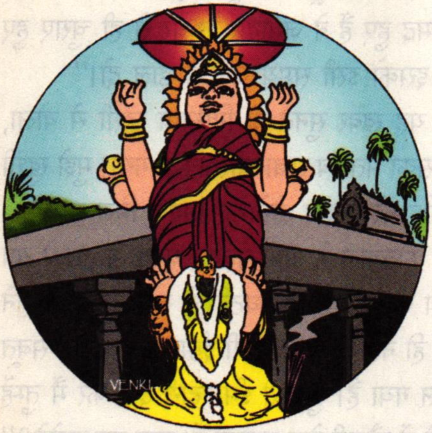

काले जादू से बचने के लिए लोगों के जत्थे के जत्थे तमिलनाडु में पोलाची के निकट स्थित मसानी अम्मन मन्दिर में आते हैं! मान्यता है कि देवी तीन सप्ताह में लोगों की विनती सुन लेती हैं।

कहानी कुछ यूँ है कि पोलाची के निकट अन्नामलाई नामक जगह पर नानन नामक एक अत्याचारी राजा का राज था। उसके बगीचे में एक विशेष आम का पेड़ था। लेकिन राजा उसके फल किसी को नहीं खाने देता था। एक बार एक लड़की ने पेड़ से एक फल खा लिया जिससे नानन को गुस्सा आ गया। उसने लड़की को मौत की सज़ा दी। बाद में, गाँव वालों ने उस मासूम लड़की की याद में कब्र में लेटी लड़की की मूर्त्ति बनवाई और उसे 'मसानी' नाम दिया।

आदिवासी महिलाएँ चला रही हैं बैंक

बैंक चलाना कोई आसान काम नहीं है, है ना? लेकिन झारखण्ड में, आदिवासी महिलाओं ने एक बैंक चलाने का तरीका खोज लिया है! झारखण्ड के गिरडीह जिले के बेंगाबाद विकासखण्ड में संथाली महिलाओं के एक समूह एक छोटा सा बैंक बना लिया है।

बदतमीज़ बैंक कर्मचारियों से परेशान होकर इन महिलाओं ने खुद अपनी मदद करने की ठानी। और जल्दी ही आणंद के इंस्टीट्यूट ऑफ़ रूरल मैनेजमेंट (आईआरएमए) की मदद से गाँव का एक बैंक खुल गया। बहुत सी ग्रामीण महिलाओं ने इस आईएफ़आई सीसीओ बैंक में अपनी मेहनत की कमाई बचत के रूप में जमा की है।

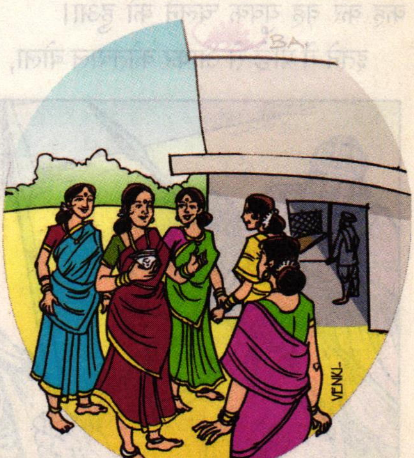

संगठित और सम्मिलित बुद्धिमत्ता के माध्यम से अपनी जीवनशैली को बदल डालने का यह प्रयास निश्चित ही सराहनीय है!

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama!
Go to www.chandamama.com & subscribe Now!!

Chandamama is available in English and 12 regional languages. Junior Chandamama for children below 9 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Santali ☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior

Name: ....

Date of Birth: .... Sex: ....

Address: ....

....

....

.... City: ....

State: .... Pin: ....

Telephone: ....

Mobile: ....

Email: ....

Subscription Number (for renewals): ....

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees..............................

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on..............................

..............................bank.

Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
B-3, Lunic Industries, Cross Road 'B', MIDC, Andheri (East), Mumbai-400093. Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at: www.chandamama.com

Get surprise gifts by subscribing this month **

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		**Rs. 60**	**Rs. 135**	**Rs. 240**	**Rs. 375**
REGIONAL (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 770	Rs. 900
You Save		**Rs. 50**	**Rs. 110**	**Rs. 190**	**Rs. 300**
JUNIOR (Rs. 15/- per copy)	Rs. 180	Rs. 325	Rs. 460	Rs. 575	Rs. 675
You Save		**Rs. 35**	**Rs. 80**	**Rs. 145**	**Rs. 225**

** conditions apply

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

चूँ चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब चन्दामामा के माध्यम से बहुत सी भाषाएँ जानें एवं आत्मविश्वास के साथ भारत भ्रमण करें! नीचे कोष्टक में दिए गये भाषा के शब्द पढ़ें। उसके बाद नीचे कोष्टक में देखकर अन्य भाषाओं में इन्हें किस तरह बोला एवं लिखा जाता है वह जानें।

English	Where are you going?	What do you want to eat?
Hindi	तुम कहाँ जा रहे हो?	तुम क्या खाना चाहते हो?
Telugu	మీరు ఎక్కడికి వెళుతున్నారు? मीरु एक्कडिकि वेलुतुन्नारु?	మీరు ఏం తినాలనుకుంటున్నారు? मीरु एम तिनालनुकुन्टुन्नारु?
Tamil	எங்கே செல்கிறீர்கள்? एन्गे सेलिरीन्गल?	என்ன சாப்பிட விரும்புகிறீர்கள்? एन्ना सापिदा विरुम्बुकिरीन्गल?
Bengali	তুমি কোথায় যাচ্ছ? तुमी कुथाय जाच्छो?	তুমি কি খেতে চাও? तुमी की खेते चाओ?
Marathi	आपण कोठे जाताय? आपण कोठे जाताय?	आपल्याला खाण्यात काय आवडेल? आपल्याला खाण्यात काय आवडेल?
Kannada	ನೀವು ಎಲ್ಲಿಗೆ ಹೋಗುತ್ತಿರುವಿರಿ? नीवु एल्लिगे होगुत्तिरुविरी?	ನೀವು ಏನು ತಿನ್ನಲು ಬಯಸುತ್ತೀರಿ? नीवु एनु तिन्नलु बयासुत्तीरि?
Oriya	ତୁମେ କୁଆଡେ ଯାଉଛ ? तुमे कुआदे जौछा?	ତୁମେ କଣ ଖାଇବାକୁ ଚାହୁଁଛ ? तुमे काना खाइबाकु चाहुन्चा?
Gujarati	તમે ક્યાં જાવ છો? तमे क्यां जाव छो?	તમને શું ખાવાનું ભાવશે? तमने शुं खावानुं भावशे?
Assamese	আপুনি কোনফালে যায়? आपुनि कुनफले जाइ?	আপুনি কি খাব বিচাৰিছে? आपुनि कि खाबो बिसारिसे?
Malayalam	നിങ്ങൾ എവിടേക്കാണ് പോകുന്നത്? निन्गाल एविदेक्कानु पोकुन्नाथु?	നിങ്ങൾക്ക് എന്താണ് കഴിക്കാൻ വേണ്ടത്? निन्गालक्कु एन्थानु काझिक्कान वेन्दथु?
Santali	ᱚᱠᱟ ᱛᱮᱵᱤᱱ ᱥᱮᱱᱚᱜ ᱠᱟᱱᱟ? ओका तेविन सेनोग काना?	ᱪᱮᱫ ᱡᱚᱢ ᱥᱟᱱᱟ ᱤᱫ ᱵᱤᱱᱟ? छेद जोम साना इद बीना?
Sanskrit	त्वम् कुत्र गच्छसि? त्वम कुत्र गच्छसि?	त्वम् किम् खादितुम् इच्छसि? त्वाम किम खादितुम इच्छासि?

English	Please wait here.	How far is the school from here?
Hindi	कृपया यहाँ प्रतीक्षा करें।	यहाँ से स्कूल कितनी दूर है?
Telugu	దయచేసి ఇక్కడ వేచివుండండి. दयाचेसि इक्कड वेचिवुन्डन्डि.	ఇక్కడి నుంచి పాఠశాలకు ఎంతదూరం? इक्कडि नुन्चि पाठसालकु एन्तदूरम?
Tamil	தயவுசெய்து இங்கு காத்திருங்கள். धावायु सैथु इन्गु काथिरुन्गल.	இங்கிருந்து பள்ளி எவ்வளவு தூரத்தில் உள்ளது? इन्गिरुन्थु पल्लि एवालाकु धूरथिल उल्लाथु?
Bengali	দয়া করে এখানে অপেক্ষা করো। दया कोरेय एखाने अपेक्षा करो.	স্কুলটা এখান থেকে কতো দূর? स्कूल ता एखान थेके कातो दुर?
Marathi	कृपा करून इथे वाट बघा. कृपा करून इथे वाट बघा.	इथून शाळा किती लांब आहे? इथून शाळा किती लांब आहे?
Kannada	ದಯವಿಟ್ಟು ಇಲ್ಲಿ ಕಾಯಿರಿ. दायाविट्टु इल्लि कायिरी.	ಇಲ್ಲಿಂದ ಶಾಲೆ ಎಷ್ಟು ದೂರವಿದೆ? इलिन्दा शाले एश्टु दूराविदे?
Oriya	ଦୟାକରି ଏଠାରେ ଅପେକ୍ଷା କରନ୍ତୁ । दया कारि एथारे अपेक्षा करन्तु.	ଶିକ୍ଷକଙ୍କ ଷ୍କୁଲ କଣ ? एथारु स्कूल केते दूर?
Gujarati	કૃપા કરી અહીં રાહ જુઓ. कृपा करी अहीं राह जुओ.	અહીંથી શાળા કેટલી દૂર છે? अहिंथी शाळा केटली दूर छे?
Assamese	অনুগ্ৰহ কৰি ইয়াত অপেক্ষা কৰক। अनुग्रोह कोरी एयात ओपेक्खा कोरोक.	ইয়াৰ পৰা স্কুলখন কিমান দূৰত? एयार पोरा स्कूल-खोन किमान दुरोत?
Malayalam	ദയവായി ഇവിടെ കാത്തുനിൽക്കുക. धायवायी इविदे कातुनिक्कुका.	ഇവിടെ നിന്ന് സ്കൂൾ എത്ര അകലെയാണ്? इविदे निन्नु स्कूल एथरा अकालेयानु?
Santali	ᱱᱚᱸᱰᱮ ᱛᱟᱹᱝᱜᱤ ᱤᱧ ᱵᱤᱱ। नोन्दे तान्गी इन्ज बीन.	ᱱᱚᱸᱰᱮ ᱠᱷᱚᱱ ᱟᱥᱞᱟ ᱛᱤᱱᱟᱜ ᱥᱟᱹᱱᱤᱡᱟ? नोन्दे खोन अश्ला तिनाग सान्गिजा?
Sanskrit	कृपया अत्र प्रतीक्ष। कृपया अत्र प्रतीक्ष।	इत: पाठशाला कियत् दूरम् अस्ति? इत: पाठशाला कियात दूरम अस्ति?

तेज़ फॉर्मूला परिणाम

आप सभी के सबमिशन्स के लिए धन्यवाद। एक भी सही प्रविष्टी नहीं मिल पाने की वजह से, मार्च'१० के अंक का पुरस्कार किसी को भी देना संभव नहीं है।

बोझ

कलकत्ता, ५ मार्च, १८७८ ईस्वी

उसने काग़ज़ के उस मुड़े-तुड़े टुकड़े की ओर देखा। यह जीवन बेकार है यदि यह अपनी मातृभूमि के काम न आ सके।

ये शब्द बहुत पहले लिखे गए थे। लेकिन इनके पीछे का दर्द तो जैसे वह अनन्तकाल से झेलता आ रहा था। "तुम कब तक ऐसे बैठे-बैठे इसे घूरते रहोगे?"

शिशिर कुमार घोष ने मुड़कर यह वाक्य कहने वाले की ओर देखा, जो अभी अभी कमरे में आया था और दरवाज़े से टिककर खड़ा था।

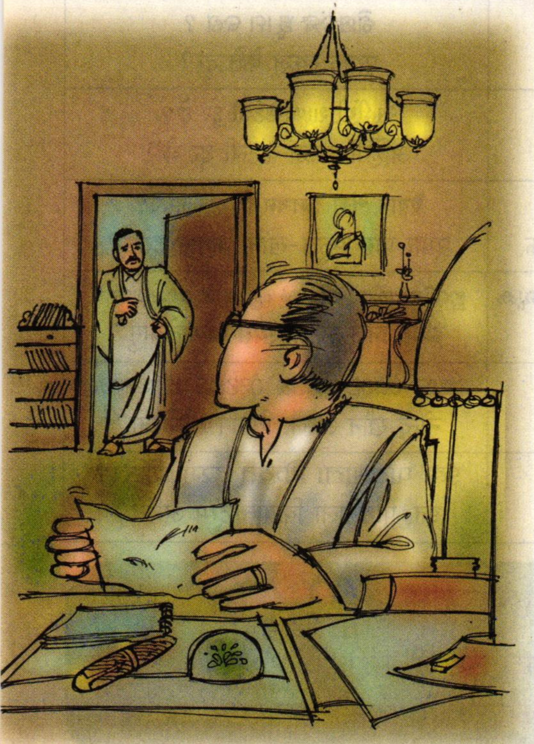

"नबीन! तुम्हें देखकर कितना अच्छा लग रहा है!"

नबीन चन्द्र सेन अन्दर आए और अपने मित्र के सामने एक कुर्सी खींचकर बैठ गए।

"पत्र को हज़ार बार पढ़ने से वह वापस नहीं आ जाएगा। हालाँकि हम ज़रूर चाहेंगे कि ऐसा ही हो। अगर मेरा भाई आज होता, तो वह हमें अब भी अंग्रेज़ों की गुलामी में देखकर बहुत नाराज़ होता।"

"उसकी कुर्बानी व्यर्थ नहीं जाएगी। हम उनसे आज़ाद होने का हर संभव प्रयास कर रहे हैं शिशिर। तुम्हारी पत्रिका के माध्यम से। अमृत बाज़ार पत्रिका अचानक बन्द हो गई है, नबीन। लॉर्ड लेटन और उसके भाषायी प्रेस अधिनियम ने इसे सुनिश्चित कर दिया है। कल से हम बंगाली में मुक्त विचारधारा या स्वतंत्रता के बारे में कुछ नहीं छाप सकेंगे। यह अधिनियम पत्रिका को ध्यान में रखकर पारित किया गया है। वे हमें तुरन्त गिरफ़्तार कर लेंगे। क्या तुम्हें मालूम है उन्होंने बिजॉय की प्रिंटिंग प्रेस बन्द करवा दी है?"

नबीन का चेहरा इस धक्के से पीला हो गया। "तो क्या सब खत्म हो गया शिशिर? वो फुसफुसाने के स्वर में बमुश्किल बोल पाए "हमारा सारा काम?"

* * *

पोलोमागुरा, जिला जैसोर,
बंगाल प्रान्त, २० दिसम्बर १८६८ ई

शिशिर एक काग़ज़ लेकर लगभग भागते से आए।

"नबीन! ज़रा इसे देखो तो तुम क्या सोचते हो?"

नबीन ने बिना कोई रुचि दिखाए बेध्यानी में काग़ज़ ले लिया, "मैं अपनी एक कविता में सुधार कर रहा हूँ। ये क्या है? सम्पादकीय।"

नबीन ने शुद्ध बंगाली में लिखे उस काग़ज़ पर नज़र डाली। बंगाली हर कदम पर अंग्रेज़ों के ज़ुल्म का विरोध करने को तत्पर हैं। दूसरे व्यक्ति ने सीटी बजाई। "अरे ये तो एकदम..." वह सही शब्द न मिलने के कारण रुक गया।

"विस्फोटक है न हरि? नबीन मुस्कुरा दिए। शिशिर ने कन्धे उचकाए। क्या तुम जानते हो नबीन, मैंने आनन्द बाज़ार पत्रिका क्यों शुरू की थी? मैं अपनी टिप्पणियों में आवाज़ जितनी बुलन्द रख पाउँगा, रखूँगा।"

"तुम अच्छी तरह जानते हो कि अँग्रेज़ सरकार इस तरह की भाषा को पसन्द नहीं करेगी," हरि नारायण बोले।

"कौन-सी नई बात है," शिशिर बोले। और हम तो पता नहीं कब से अधिक कठोर संपादकीय छापते आ रहे हैं। "बिजॉय का कहना है कि हमारी प्रिंटिंग प्रेस कभी भी अचानक बंद की जा सकती है।" नबीन ने अपने मित्र की ओर प्रश्नवाक दृष्टि से देखा।

"तुम क्या करने का प्रयास कर रहे हो शिशिर? हम सबको जेल भिजवाने का? शिशिर मुस्कुराए।" यदि ऐसा ही होना है तो होता रहे।

* * *

मजिस्ट्रेट कोर्ट, जिला जैसोर, ११ मई, १८७० ई, बंगाल राज्य

"**य**ह पहली बार नहीं है कि उसके संपादक शिशिर कुमार घोष ने सरकार के विरुद्ध संपादकीय प्रकाशित किए हैं," सरकरि वकील ने कहा। इस बर्ष में तीन बार अमृत बाज़ार पत्रिका ने शासकों और शासित वर्ग के बीच के सतत संघर्ष के बारे में लिखा है। इसके अलावा, घोष बाबू ने लिखा है कि न केवल जिला मुख्यालयों में, बल्कि घनी आबादी वाले गाँवों में भी राजनीतिक हत्याएँ होना चाहिए। "कहने की ज़रूरत नहीं कि उन्होंने ऐसी गतिविधियों में समन्वय स्थापित करने के लिए कलकत्ता में एक केन्द्रीय समिति की आवश्यकता की भी वकालत

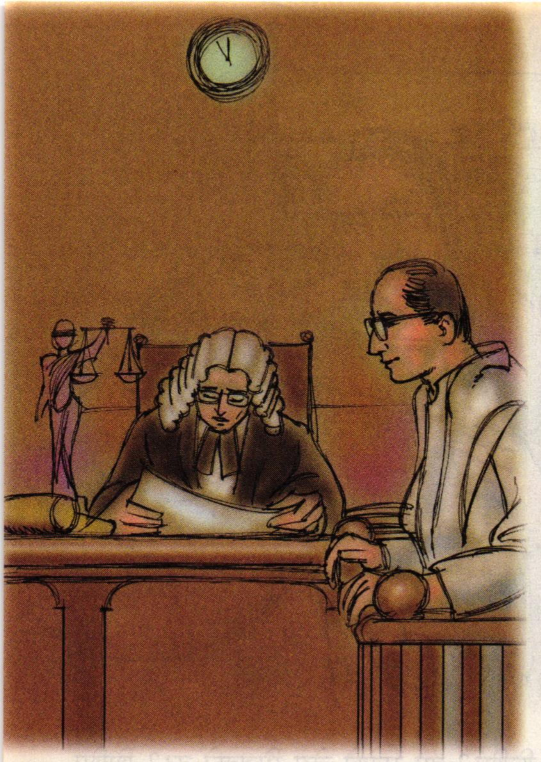

की है। और यह इनके जुर्मों की सूची में सबसे नया इजाफ़ा है। इे प्रका'' थोड़ी उखड़ी हुई साँस के साथ सरकारी वकील ने अपनी बात खत्म की।

''कोई और नया जुर्म?'' मजिस्ट्रेट ने कटघरे में निस्पृह भाव से खड़े मुजरिम की ओर देखते हुए नाक से निकलते स्वर में पूछा।

''अपने आपको कवि कहने वाले सुजॉय गांगुली की करों से बचने में दो वर्ष तक सक्रिय रूप से सहायता करना। गांगुली बाबू इंकलाबी पाठ और कविताएँ प्रसारित करते हैं। घोष बाबू ने इस क्षेत्र के कर एकत्र करने वाले अफसर श्री गिलमोर के विरुद्ध अपमानजनक आरोप प्रकाशित करने में गांगुली बाबू की सहायता की।''

''ये तो गंभीर आरोप हैं घोष बाबू।''

इस शिशिर ने मद्धिम मुस्कुराहट के साथ कहा, ''लेकिन ग़लत हैं माय लॉर्ड। मजिस्ट्रेट ने आश्चर्य के भाव से देखा। मैंने सुजॉय की मदद नहीं की असल वाकया एकदम इसके विपरीत था। श्री गिलमोर दोगुनी राशि वसूलना चाहते थे; स्थानीय अधिकारियों के मदद करने से इंकार करने पर मैंने केवल उनका पर्दाफ़ाश किया। इसमें जुर्म क्या है?''

''घोष बाबू जुर्म कानून को अपने हाथ में लेने से होता है। माय लॉर्ड, यदि आप कर के रिकॉर्ड देखेंगे, तो आप पाएँगे कि मैं सही हूँ।'' वे मुस्कुराए।

इस प्रकार कार्यवाही चलती रही, और घोष बाबू अपने को घेरने के प्रयासों को विफल करते रहे।

तीन घंटे के अदालती दाँव-पेंचों के बाद, बहुत ही हल्का महसूस कर रहे सुजॉय गांगुली शिशिर को कोटिश: धन्यवाद दे रहे थे। ''मेरे पास तुम्हें धन्यवाद देने के लिए उपयुक्त शब्द नहीं हैं शिशिर! और पता है सबसे अच्छा क्या हुआ? गिलमोर के कामों की पूरी तरह जाँच होने वाली है।''

शिशिर मुस्कुराए, ''इससे भी अच्छा यह हुआ कि वे पूरे समय मुझसे पार पाने में इतने व्यस्त रहे कि गुप्त कविता लेखन की ओर उनका ध्यान ही नहीं गया,'' वे रुके।

क्या तुम सच में नहीं चाहते कि पत्रिका तुम्हरी कविताएँ छापे? हमें तुम जैसे ही लेखक की तलाश थी।''

सुजॉय ने इंकार में सिर हिलाया। ''मैं समझता हूँ शिशिर, लेकिन पत्रिका यूँ भी काफ़ी बोझ उठाए है। हम नहीं चाहते कि उस पर और भी

बोझ पड़े। आज़ादी के आन्दोलन को अभी बहुत आहूतियाँ चाहिए, लेकिन अलख जगाने वाली पत्रिका की आहूति दे देना गलत हो जाएगा।''

''अच्छी लग रही है तुम्हारे मुँह से पत्रिका की तारीफ़। लेकिन स्वतंत्रता के लिए लड़ना कोई बोझ नहीं होता, सुजॉय। पत्रिका को अपना अच्छा काम करते रहना चाहिए। बस, पत्रिका में लिखते रहो। जितना तुम प्रयास करोगे, परिणाम उतने ही अच्छे होंगे।''

सुजॉय हँस पड़े, ''वाह क्या तरीका है।''

* * *

कलकत्ता, १३ मार्च, १८७८ ई

दूसरे समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ भी बन्द हो गए हैं। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अन्त है। ''क्या वाकई?'' शिशिर मुस्कुराए।

''किसलिए मुस्कुरा रहे हो? हम बरबाद हो गए हैं शिशिर!''

''नहीं। नव प्रभात आएगा।''

* * *

कलकत्ता, १४ मार्च, १८७८ ई

सूर्य की किरणे बादलों को गुलाबी रंग दे रही थीं। और कई घरों में आश्चर्य की लहरें दौड़ रही थीं। अमृत बाजार पत्रिका छपकर आ गई थी, जो एक नए दिन का संकेत था।

''अरे यह तो पूरी अंग्रेज़ी में है!!'' नबीन खुशी से चिल्ला पड़े।

हँसते हुए शिशिर अपने मित्र को अन्दर लाए।

''यदि लॉर्ड लेटन यह निर्णय लेते हैं कि बंगाली में स्वतंत्र सोच अपराध है, तो मैं उन्हें इससे रोकने वाला कौन? इसलिए मैंने सबका जितनी जल्दी हो सका, अनुवाद कर दिया। भाषायी प्रेस अधिनियम केवल क्षेत्रीय भाषाओं पर लागू होता है, नबीन। यदि मैं उसी सामग्री को अंग्रेज़ी में छाप दूँ, तो वे कुछ नहीं कर सकते। पत्रिका स्वतंत्र है।''

''श्री गांगुली से मिलिए,'' शिशिर ने एक मनोहर लगने वाले व्यक्तित्व का परिचय दिया। ''ये कवि हैं, ऑक्सफ़र्ड से स्नातक हैं और पिछले चार वर्षों से एक प्रिंटिंग प्रेस चला रहे हैं।''

नबीन रुके, ''गांगुली...सुजॉय?''

शिशिर मुस्कुराए। नव प्रभात आ गया है।

- पवित्रा श्रीनिवासन

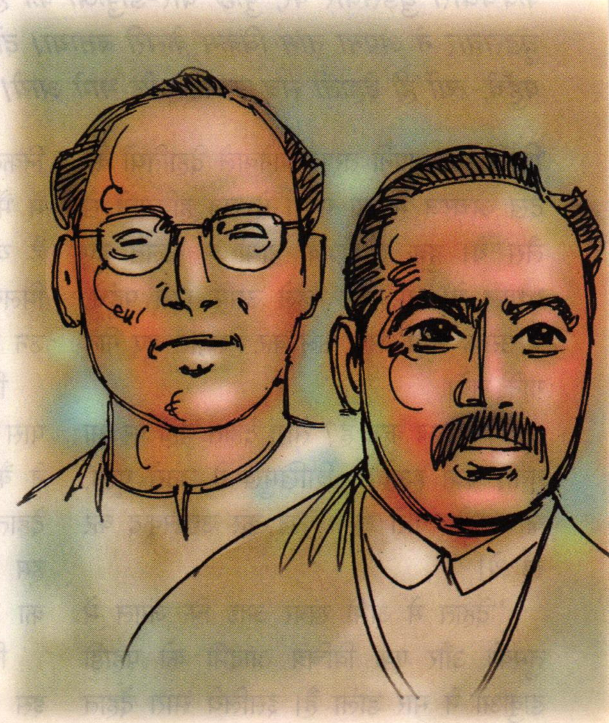

शिथिलालय - १

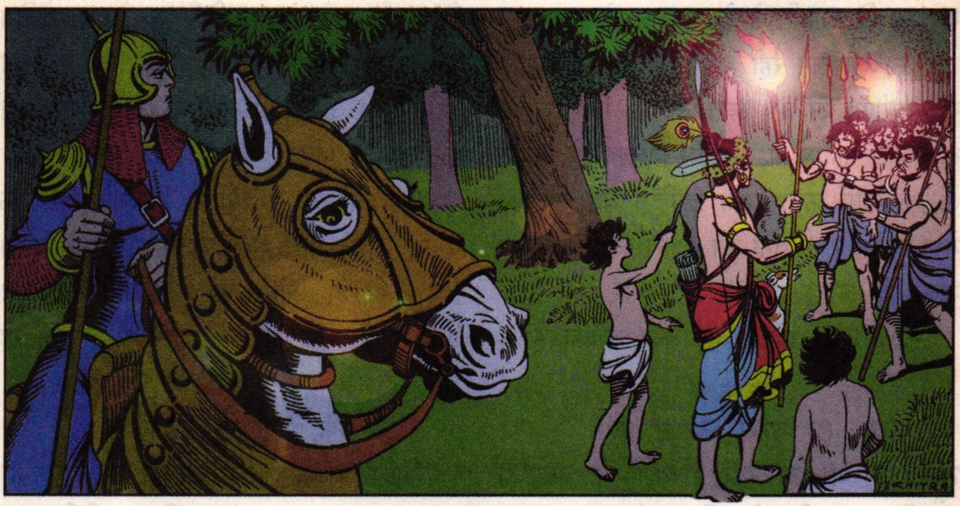

(शिखिमुख नामक एक शबर-युवक जंगल में शिकार खेलने गया। वहां पर उसने एक कवचधारी घुड़सवार पर, कुछ चोर-डाकुओं का हमला होते देख उसकी मदद की। उस घुडसवार ने अपना नाम विक्रम केसरी बताया। दोनों उस अँधेरे में ज्यों ही गाँव के पास पहुँचे, त्यों ही देहाती सब उनकी ओर भागे आये। इसके आगे)

शिखिमुख अपनी तरफ आनेवाले देहातियों को देख अचरज में आ गया। वे सब हथियारों से लैस थे। कुछ लोगों के हाथों में जलते हुए मशाल थे। जो शबर पहले उसके पास पहुँचे, वे उसके चारों तरफ़ फैल कर चिल्लाते हुए गीत गाने लगे।

"यह सब क्या है? सारा देहात यहाँ पर आ गया। क्या हुआ?" शिखिमुख ने उनसे पूछा, जो उसके चारों तरफ फैल कर उछलकूद कर रहे थे।

"देहात में अभी खबर आई कि जंगल में तुमको और एक विचित्र आदमी को पहाड़ी डाकुओं ने मार डाला है। इसलिये सारा देहात निकल पड़ा है। अब लगता है कि या तो जंगल में भैंस चरानेवाले देहाती बच्चों का कहना झूठ है या तुम और उस कवचधारी आदमी ने मिलकर पहाड़ी डाकुओं को मार डाला होगा।" उन लोगों ने कहा।

शिखिमुख जोर से हँसते हुए विक्रमकेसरी के पास जाकर बोला, "देखा! हमारे देहात के बच्चों ने कैसे तिल का ताड़ बना रखा है। उन्होंने देहात में जाकर कहा है कि डाकुओं के हाथों हम मारे गए। उन बच्चों ने तुम्हारा नाम लोहे का आदमी रखा है।"

विक्रमकेसरी को यह सब विनोद सा लगा। इस बात की उसे खुशी हुई कि देहातियों में

आपस में अच्छे सम्बन्ध हैं और वे अपने नेता के बेटे से बहुत स्नेह और प्रेम रखते हैं। वह युवक बहुत खुश हुआ। उसके मन में यह विचार आया कि उसके पिता ने जो बहुत बड़ा साहस का कार्य करने का बीड़ा उठाया है, उसमें शबरों की बहुत मदद मिल सकती है। यह विचार आते ही उसका मस्तिष्क पुनः अपने पिता की कही बात और जल्दी ही शिवाल से होने वाली बातचीत की ओर मुड़ गया। उसे किसी भी सूरत में शबरों का साथ चाहिये था।

शिवाल अपने कुछ साथियों के साथ अपने बेटे के पास आया। उसको देख शिखिमुख के चारों तरफ फैलकर हो-हल्ला मचानेवाले सब हट गये। इससे साफ़ था कि बूढ़े शिवाल का अपने साथियों पर बहुत प्रभाव था। शिवाल ने अपने बेटे के पास जाकर उसे गले लगाया। उसी समय मशाल की रोशनी में विक्रमकेसरी पर उसकी दृष्टि पड़ी।

शिवाल पल-भर के लिये चकित हुआ। वह विक्रमकेसरी की ओर एकटक देखता रहा। फिर दो क़दम आगे बढा कर बोला, "कौन, प्रभु विक्रमकेसरी?" उसके कँठ में आनन्द और आश्चर्य झलक रहा था। विक्रमकेसरी ने उसके पास जा कर नमस्कार करते हुए कहा, "मैं विक्रमकेसरी ही हूँ। लेकिन आप मुझे नहीं पहचानते।"

शिवाल ने विक्रमकेसरी की ओर विचित्र दृष्टि दौड़ाते हुए कहा, "जी हाँ! चालीस साल पहले की बात है। वह प्रभु भी मेरी उम्र का है। अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ तो निश्चित ही वह

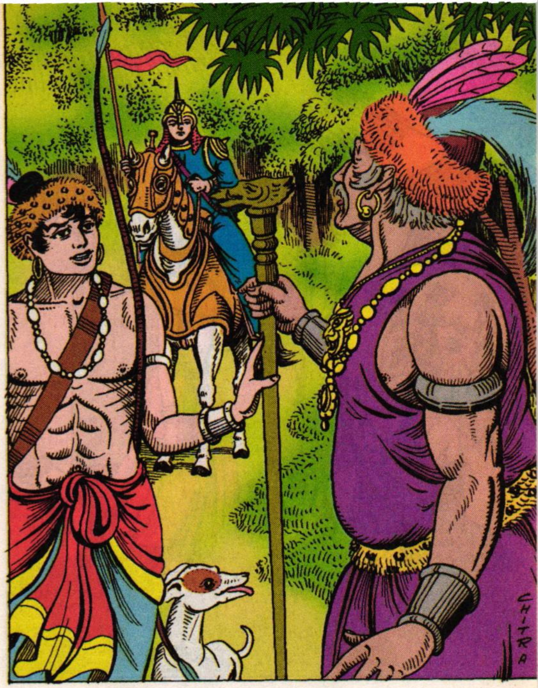

भी बूढ़ा हो गया होगा।" शिवाल पुरानी सुनहरी यादों में खोने को तत्पर था।

"हम दोनों जब तुम्हरी उम्र के थे, तब सम्राट की फौज में भर्ती होकर उत्तर में ब्रह्मपुत्र नदी की घाटियों तक विजय-यात्रा करके, सम्राट को हमने अपार धन और यश दिलाया। असल में तुम कौन हो?"

"मैं इस भ्रम में पड़ा हूँ कि आज फिर उस विक्रमकेसरी को देख रहा हूँ जिसके साथ मैंने चालीस साल पहले बहुत आनन्ददायक समय व्यतीत किया है।"

"आपने इस चेहरे को तुरन्त पहचान लिया इसका मुझे बहुत सन्तोष है। लगता है मैं सही जगह पर आया हूँ और पिताजी ने मुझे यहाँ भेजने का निर्णय लेकर सही काम किया है।"

"मैं विक्रमकेसरी का पोता हूँ; मेरा नाम भी विक्रमकेसरी ही है। मैं अपने पिता के आदेश

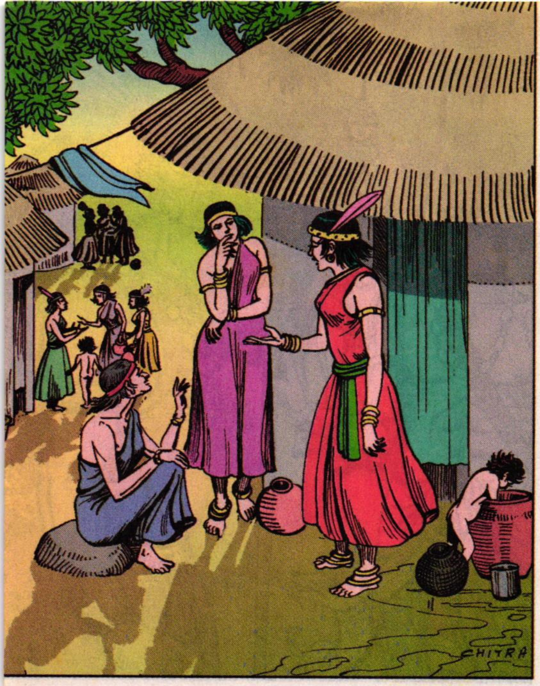

पर आपसे कुछ खास बातों पर चर्चा करने आया हूँ।'' विक्रमकेसरी ने कहा।

''आश्चर्य है! मैंने सुना है तुम्हारे दादा अब नहीं रहे हैं। फिर भी तुम्हरि यह शक्ल-सूरत मुझे भ्रम में डाल रही है।'' शिवाल बोला।

''तुम्हारे पिताजी जयपाल कुशल हैं न? उन्होंने इस शबर को याद ही नहीं रखा बल्कि एक खास बात की चर्चा के लिये अपने पुत्र को ही भेजा। मेरा अचरज दूना होता जा रहा है। एक राज्य के अधिपति, तुम्हारे पिताजी के लिये इस शबर गाँव के मुखिया से चर्चा करने के लिये कौन खास बात हो सकती है? तिसपर भी इतनी महत्वपूर्ण जिसके लिए उसे अपने बेटे को भेजना पड़े?'' शिवाल ने पूछा।

''वह सारा समाचार देहात में पहुँचने पर बताऊँगा। मुझे तुम्हारे गाँव में पहुँचने से रोकने की कुछ दुष्टों ने जंगल में बड़ी कोशिश की। विक्रमकेसरी ने कहा।''

''यह समाचार जान कर ही हम सब जंगल के लिये रवाना हुए। लेकिन मुझे यह मालूम न था कि शिखिमुख के साथ मेरे पुराने मालिक का पोता भी है। बच्चों ने कोई लोहे का आदमी बताया। अच्छी बात है। दोनों खैरियत से हैं। चलिये, गाँव चलते हैं।'' शिवाल ने कहा।

आधे घंटे बाद जब सब लोग गाँव पहुँचे, तो शिवाल के घर के लोगों के अलावा गाँव के लगभग सभी लोग वहाँ उपस्थित थे।

लोहे के आदमी' को जानने की उत्कंठा गाँव में चरम पर थी। लोग विक्रम केसरी को कम-से-कम एक झलक ही देख लेना चाहते थे। शिवाल के घर के रास्ते पर दोनों ओर गाँव-भर के बच्चे, बूढ़े और औरतें मशालें लेकर खड़े हुए जंगल से आए काफ़िले को देख रहे थे।

शिवाल के घर पहुँचकर इस काफ़िले ने देखा कि वहाँ आस-पास कई औरतें जमा होकर जोर-जोर से बोलती-चिल्लाती बातें कर रही हैं।

उन सब के हाथों में पानी से भरी गगरियाँ थीं। शिवाल और बाकी देहातियों के पूछने पर औरतों ने बताया कि वे पानी लाने तालाब पर गईं थीं। तभी वहाँ पर कुछ अजनबी आ गए। उन लोगों ने शिवाल के घर का पता पूछा। देखने में वे डाकू-लुटेरे जैसे लगते थे। सब के हाथों में हथियार थे।

एक दो बार पूछने पर औरतों ने उन अजनबियों की पोशाकों का वर्णन किया। चरवाहों ने जो बातें बताई थीं वे उनकी बातों से मेल खाती थीं। शिवाल झट घर पहुँचा और

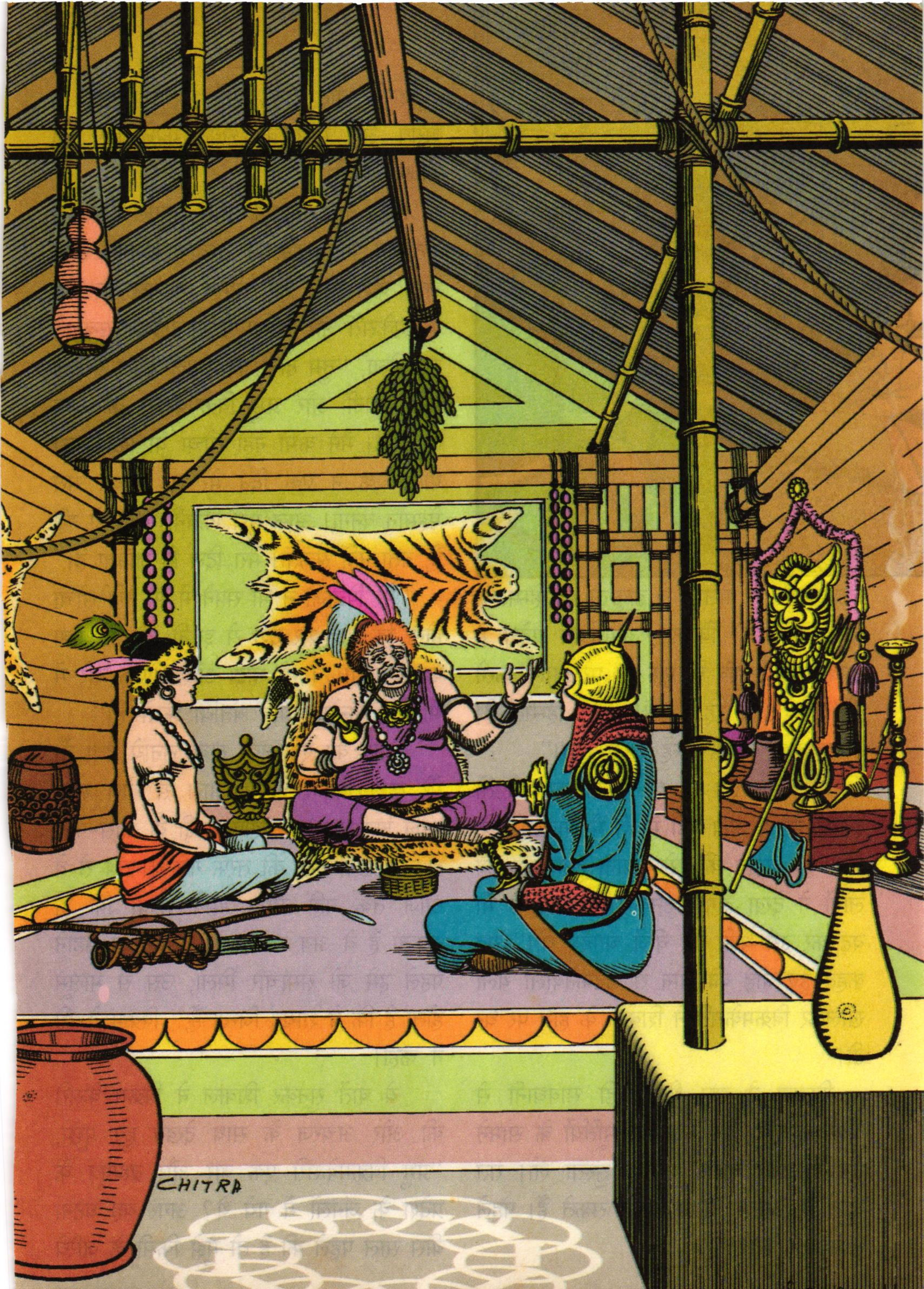
CHITRA

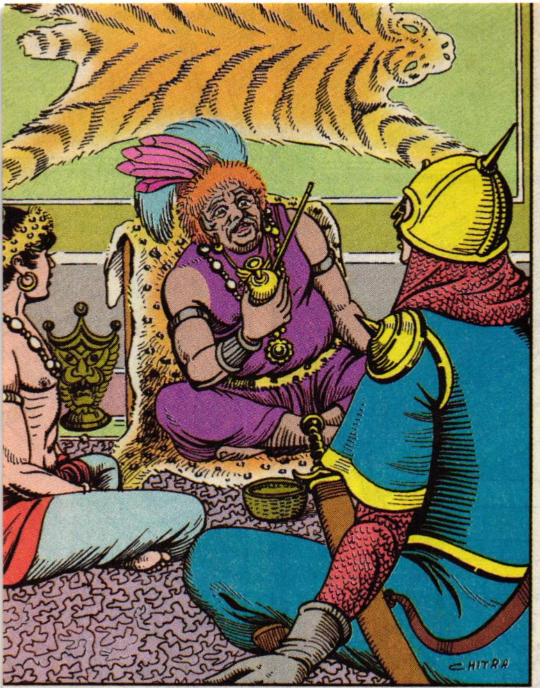

विक्रमकेसरी से बोला, "वे डाकू तो बड़े हिम्मतवर मालूम होते हैं। बिल्कुल अपरिचित प्रदेश में आकर, शबर-गाँव के एक घर पर हमला करने की बात सोच रह हैं, हुँ! कैसी हिम्मत है! इसका फल तो मैं उन्हें चखा दूँगा।"

"वे अगर इस घर पर हमला करते हैं तो इसका कारण आप नहीं मैं हूँ। मैं शिखिमुख के साथ जब देहात की ओर रवाना हुआ तब उन लोगों ने देखा होगा। उनको मेरी जान से भी बढ़ कर इस थैली की चीज़ें चाहियें थीं।" यह कहते हुए घोड़े की जीन से लटकनेवाली थैली खोलकर विक्रमकेसरी ने शिवाल के हाथ पर धर दी।

शिवाल ने उस थैली बड़ी सावधानी से कमरे के एक कोने में स्थित मूर्तियों के सामने रख दी और बोला, "थोड़ा सुस्ता लो। रात बहुत है, आराम से बात कर सकते हैं। पहले खाना तो खावें!"

इसके बाद सब लोगों ने तरह-तरह के शराब और मांस का सेवन करते हुए खूब भोजन किया।

इसके बाद महफिल जमी। शिवाल दीवार से सट कर बैठा, हुक्के में तम्बाकू डालकर आग लगा कश लेते हुए सामने कम्बल पर बैठे विक्रमकेसरी और शिखिमुख को देखकर मुस्कुराते हुए बोला, "तुम दोनों को अगल-बगल में देख मुझे अपनी और प्रभु विक्रमकेसरी की याद आती है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि उनका पोता एक न एक दिन मेरे घर आकर मेरा मेहमान बनेगा। आज मुझे कितनी खुशी हो रही है, बता नहीं सकता। मेरा दिल ही जानता है।"

"मेरे पिताजी ने भी सपने में भी नहीं सोचा होगा कि मुझे शूर देश से इतनी दूर की यात्रा करनी पड़ेगी। वे मेरे दादा और आपके बारे में भी कई अनोखी बातें बताया करते हैं।"

"आप को एक नयी खबर सुनाये देता हूँ। मेरे दादा विक्रम केसरी आज से बीस साल पहले फिर एक बार ब्रह्मपुत्र नदी के आस-पास के कामाख्या नगर की तरफ गये थे। तब से वे आज तक नहीं लौटे। हमने सोचा कि हो सकता है वे अब न रहे हों। लेकिन दो महीने पहले हमे जो समाचार मिला, उस से मालूम होता है कि वे शायद जिन्दा हैं," विक्रम केसरी ने कहा।

ये बातें सुनकर शिवाल ने विक्रम केसरी की ओर अचरज के साथ देखते हुए पूछा, "प्रभु विक्रमकेसरी एक बार और ब्रह्मपुत्र के प्रदेश के जंगलों में गये थे? अगर यह घटना बीस साल पहले की है तो मुझे किसी के जरिये

खबर कर देते। मैं भी उनके साथ जाता! हम दोनों ही पहले उन जंगलों और प्रदेशों में घूम चुके हैं। साथ रहकर उनका जो भी लक्ष्य था उसे जल्दी हासिल कर सकते थे।''

''मुझे उन्होंने खबर तक क्यों न दी? मेरी समझ में नहीं आता। मैं सोच कर भी जवाब नहीं पाता हूँ। जल्द बताओ, मेरे प्रभु फिर उतनी दूर क्यों गये?''

''और ऐसा क्या कारण हो सकता है जिसकी वजह से वे अकेले गए और मुझ जैसे सेवक को साथ ले जाने का भी ख्याल उन्हें नहीं आया।''

''उन्होने मेरे पिता से कहा है कि वह कोई गुप्त समाचार है। और उनकी मृत्यु के पहले उसे साधा जाना आवश्यक है। इससे अधिक विवरण नहीं दिया। वे वहाँ क्यों रहते हैं? ऐसा कौन समाचार है जो हमें भी बता नहीं सकते थे?''

''बरसों तक हम उनके किसी समाचार की प्रतीक्षा करते रहे, लेकिन हमें कुछ भी ज्ञात न हुआ। अभी दो महीने पहले हमारे दरबार के एक पंडित उत्तरदेश से लौटे। उन्होंने मेरे दादा की कुछ चीजें पिताजी को सौंप दीं। उनमें ताड़पत्रों की पांडुलिपियाँ ज़्यादा हैं। उसके कहने से मालूम होता है कि मेरे दादाजी वहाँ के पहाड़ों में कहीं सन्यासी बनकर रह रहे हैं। तो भी इसके लिये कोई खास सबूत नहीं मिलता।'' विक्रमकेसरी ने समझाया।

शिवाल थोड़ी देर तक सर झुकाये सोचता रहा और फिर पूछा, ''तुम्हारी बातें सुनकर मैं पागल होता जा रहा हूँ। मेरे प्रभु फिर उन

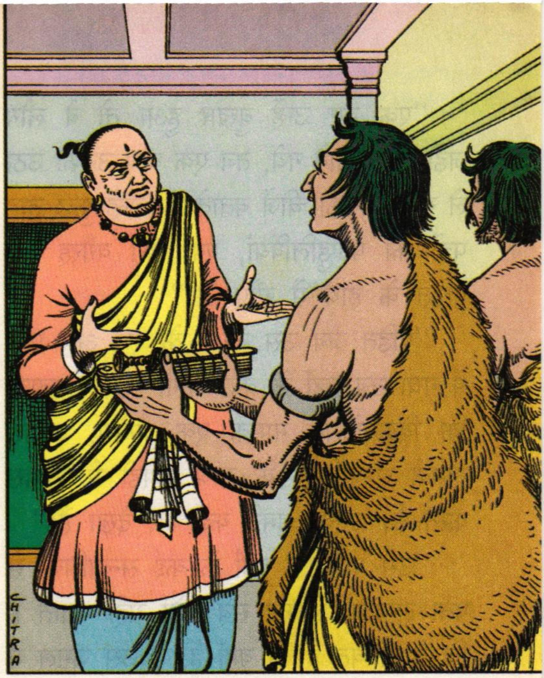

भयंकर जंगलों में क्यों चले गये? वह गुप्त समाचार क्या है? उनकी चीजें दरबारी पंडित को कैसे मिलीं?''

विक्रमकेसरी ने पंडित की कही सारी बातें आदि से अंत तक कह सुनायीं। वह पंडित छोटी उम्र में घर छोड़ कर, कई राज्यों में घूमता रहा। वहाँ अनेक विद्याएँ सीख कर बुढ़ापे में घर लौटा। वह ब्रह्मपुत्र नदी के आस-पास के वनप्रदेशों में बहुत समय तक रहा। वहाँ की जंगली जाति के लोगों को दवा-दारू देकर बीमारियों में उनकी मदद करता रहा। उनमें कई जाति और भाषाओं के लोग हैं।

''उनमें इभ्यु नामक हाथियों को पालतू बनानेवालों से पंडित का परिचय हुआ। तब उन लोगों ने उसके राज्य का समाचार जान कर बताया कि उनके गाँव में उसी राज्य के विक्रमकेसरी नामक एक क्षत्रिय अपने नौकर के साथ रहते थे।''

''एक बार उन्हें बुखार हुआ तो वे लोग जड़ी बूटी लाने गये, तब एक बाघ उनको उठा ले गया। उनकी चीजें बताते हुए उन्हें कुछ ताड़ पत्रों की पाण्डुलिपियाँ, एक छुरी वगैरह उस पंडित के हाथ में सौंप दी।''

''पंडित जब उस जंगल के एक और प्रांत में गया तब वहाँ के कुछ लोगों ने उसे बताया कि विक्रमकेसरी नामक एक क्षत्रिय, अघोरी नामक सन्यासियों के साथ पहाड़ों में निवास करते हैं। उनको हमने कई बार देखा है।''

''उस पंडित ने वहाँ के कई सन्यासियों से पता लगाया, लेकिन सब कोई यही बताते हैं कि वे जीवित हैं। वे वहाँ हैं, वे उस जंगल में हैं,'' उन पहाड़ों में हैं।

''लेकिन किसी को उनका सही पता-ठिकाना मालूम न होने से उन तक पहुँच पाना असम्भव लगता है। यह सब सुनने के बाद मेरे पिताजी ने दादाजी की सभी चीजें इस थैली में डालकर आप से बात करने मुझे भेज दिया है। ताड़पत्रों की कुछ पांडुलिपियाँ मेरे दादा की लिखी हुई हैं।''

उनको पढ़ने से आपको मालूम होगा कि वे किस गुप्त समाचार की खोज में उस प्रदेश में गए हैं। इसके अलावा पिताजी को आशा है कि उनसे यह भी मालूम होगा कि दादाजी ज़िन्दा हैं या नहीं।

विक्रमकेसरी कर बातें ध्यान से सुनकर शिवाल थोड़ी देर तक सोचता रहा, फिर अचानक बोल उठा, ''कहीं प्रभु विक्रमकेसरी का गुप्त समाचार शिथिलालय से संबंधित तो नहीं? अगर यह सच है तो उस आलय तक पहुँचने के बदले हिमालय के कैलास की चोटी पर चढ़ना आसान है। शिखिमुख, वह थैली ला।'' शिवाल ने अपने बेटे को आदेश दिया।

शिखिमुख उठकर कुलदेवताओं की मूर्तियों के आगे रखी थैली लाकर अपने पिता के हाथ देने लगा।

इतने में गली की तरफ वाले दरवाज़े पर अँधेरा सा छा गया। लगा जैसे कोई मूर्ति हिल रही है।

काली पोशाक पहने एक आदमी, जो साढ़े छः-सात फुट ऊँचा और पतला था, जिसके सिर पर उल्लू का शिरस्त्राण था, उनके सामने आ खड़ा हुआ। शिवाल, शिखिमुख और विक्रमकेसरी, सभी उस विकृत आकार को देखकर चकित हुए। ***(जारी)***

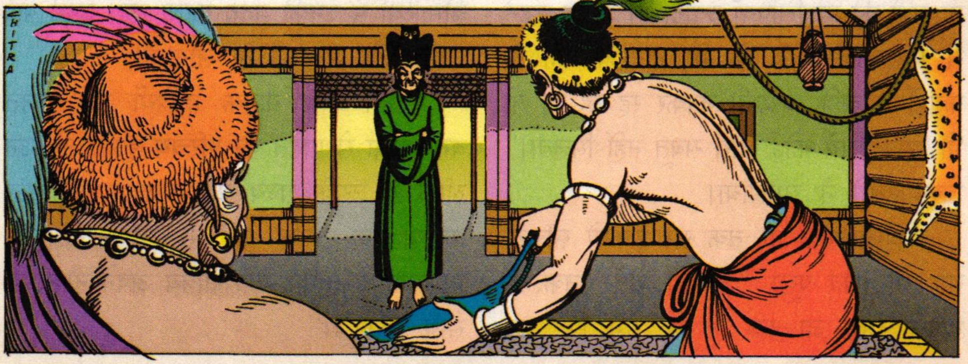

परिस्थिति से तालमेल

(मैंने आतुरता से सभी चेहरों को देखा। मेरे पाता-पिता उनमें नहीं थे। मुझे थोड़ी निराशा हुई, लेकिन साथ ही थोड़ी राहत महसूस हुई। उम्मीद कर सकते हैं कि इसका अर्थ यह है कि वे कहीं न कहीं सुरक्षित होंगे। मैं खड़ा होकर तमाशा देख ही रहा था कि साइबेरियाई चीते ने आगे बढ़कर सभी इंसानों को घेर लिया। इसके लिए उसे कुछ बोलना नहीं पड़ा। वह केवल उनके पास जाकर हल्का सा गुर्राया और सभी इन्सान डर के कारण एक दूसरे के से चिपककर खड़े हो गए।)

जब सबका एक समूह बन गया, तो मयूरी ने कहा, ''मेरे पीछे आओ, मैं तुम्हें खुद उन गुफाओं तक ले चलूँगी।''

शान्तनु थोड़ा विचलित दिखाई दिया, लेकिन बाकी सबके चेहरे एकदम सपाट थे। मैंने ध्यान से देखा, वहाँ लगभग ७० पुरुष और ३० महिलाएँ थीं। अधिकांश भारतीय दिखाई पड़ते थे। निश्चित ही अंतरिक्षयानों को देशों के हिसाब से श्रेणीबद्ध किया गया था। औरोच की गर्म साँस मेरे कानों में जा रही थी। मैं मुड़ा और पाया कि मैं उसकी विशाल, पशुवत् आँखों में देख रहा हूँ।

''हाय,'' मैं बुदबुदाया। ''हेलो'' उसने आश्चर्यजनक रुप से मीठी आवाज़ में कहा और एक ओर हट गई। मैं शान्तनु से बात करने गया। उसने अपने हाथ में निम्मी का हाथ कस कर पकड़ रखा था। यह ज़रुर इसकी बेटी होगी, मैंने सोचा।

''शिवा,'' वह बोला, ''यदि ये लोग सच कह रहे हैं, तो हमारा अन्त निकट है, है ना?''

''मुझे ऐसा नहीं लगता,'' मैंने धीमी आवाज़ में कहा, ''इनमें से सभी मनुष्यों से नफरत नहीं करते। यदि हम हिम्मत न हारें और इन्हें जता दें कि हम इनका नुकसान नहीं करना चाहते, तो हमारे जीवित रहने की संभावना बहुत बढ़ जाएगी।''

''वाह-वाह! क्या ख़ज़ाना है यहाँ!'' वह बड़बड़ाया।

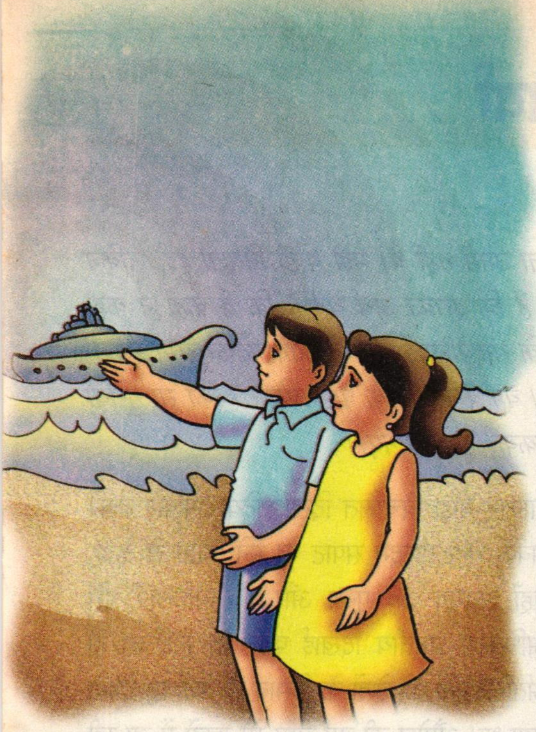

"कैसा ख़ज़ाना?" मैंने चकित होकर उसकी तरफ मुड़ा।

"तुम नहीं देख रहे? यहाँ ऐसी कई प्रजातियाँ हैं जिन्हें, हम समझते थे कि हमने हमेशा के लिए खो दिया है। ज़रा सोचो! यदि मैं इनके जीन्स इकट्ठे करके वापस पृथ्वी पर ले जा सकता, तो हम अपने गृह पर इन्हें फिर से पैदा कर सकते थे!"

मैंने नज़दीक से उसके चेहरे की ओर देखा। उसकी आँखों में एक अजीब सा जुनून था जिससे मैं थोड़ा विचलित हो गया।

"लेकिन यह कैसे संभव है? अनुनिर्वा की बात अलग है क्योंकि इस स्थान का चमत्कार एक ही मौसम, तापमान और स्थान पर सबको साथ रहने देता है। और इसमें तो कोई बताने लायक बात भी नहीं है कि आज पृथ्वी की जैसी हालत है, उसमें वहाँ ले जाए जाने पर इनका क्या हाल होगा!" मैंने कहा।

"ये तो केवल कुछ रुकावटें हैं! ऐसी रुकावटें जिनसे पार पाना है!"

मुझे अब ये अच्छा नहीं लग रहा था। साइबेरियाई चीते के शान्तनु की ओर आने से मुझे इस भावना से निजात मिली - "मुझे लगता है चलना चाहिए," चीता आकर बोला।

सभी मनुष्य मयूरी के पीछे चल पड़े। वह बड़ी आसानी से और शिष्टतापूर्वक उस जगह को पार कर रही थी। अधिकांश मानव बुझे हुए से थे। निम्मी और उस लड़के, जिसे वह हर्ष कहती थी, के अलावा इस समूह में कोई और बच्चे नहीं थे।

वे उत्तेजित और उत्सुक दिख रहे थे। मैं उनके आश्चर्यचकित चेहरों को आनन्दपूर्वक देखते हुए उनके पास चल रहा था।

मैं बहुत समय से अनुनिर्वा में नहीं था लेकिन उनकी तुलना में मुझे बहुत अधिक अनुभव था!

उनके पास बहुत से सवाल थे और मैंने उनके अपनी क्षमतानुसार सटीक जवाब देने की कोशिश की। हर्ष ने थोड़ा डरते-डरते मेरा हाथ पकड़ लिया और मैंने उसे पकड़ने दिया। उसका ऐसा विश्वास दिखाना मुझे बहुत अच्छा लगा।

धीरे-धीरे हम प्रचंड समुद्र के पास पहुँच गए। किनारे पर खड़ी होकर मयूरी अपनी आँखें बन्द करके धीमे स्वर में कोई पाठ करने लगी।

एक जहाज एक शान्त भूत की तरह पानी से बाहर निकला। मयूरी निरन्तर पाठ करती रही।

जहाज किसी हंस की तरह उसकी ओर तैरने लगा। निम्मी और हर्ष उत्तेजना से पागल हुए जा रहे थे।

"वाह-वाह!" हर्ष के मुँह से निकला। निम्मी आतुरता से जहाज को किनारे पर आते देखती रही।

"इसमें तो कोई नहीं है!" वह आश्चर्यचकित सी बोली। मैं मुस्कुराया। मेरे अनुभव के मुताबिकअभी तो उन्हें कई और आश्चर्यजनक बातों से दो-चार होना था!

"चढ़ जाओ," मयूरी ने कहा। वह विशेषकर शान्तनु से मुखातिब थी। मैंने उसकी ओर देखा, और मन में विचार किया कि क्या मुझे भी बाकी लोगों के साथ जाना चाहिए? ऐसा लगा जैसे मयूरी बिना मेरे एक शब्द भी कहे मेरे मन की बात जान गई। उसने सहमति में सिर हिलाया और मैं भी दूसरों के साथ जहाज पर चढ़ गया।

"ठीक है," कमान संभालते हुए ओमन बोला। "ठीक है। अब हम पानी के नीचे चलेंगे। सभी लोग कृपया सहयोग करें। क़ागा जो मास्क दे रहा है उन्हें पहनें। और वहीं रहें जहाँ आप हैं। अपनी जगह न छोड़ें!" उसने आखरी तीन शब्दों पर इतना ज़ोर दिया कि खुद अपनी जगह से गिर पड़ा। मैंने बहुत कोशिश करके अपनी हँसी रोकी और सबको अपने-अपने मास्क पहनते देखने लगा।

"कहीं ये ज़हरीले तो नहीं?" मैंने एक छोटे कद के आदमी को पास खड़ी महिला से कहते सुना। "ऐसा नहीं है," मैंने तुरन्त जवाब दिया। "मास्क से आप पानी के नीचे साँस ले सकेंगे और बात कर सकेंगे।

उसने कन्धे उचकाए, लेकिन उसके चेहरे पर मेरे कहे का भरोसा नहीं दिखा। फिर भी उसने मास्क पहन लिया और घबराया सा खड़ा हो गया।

"बहुत अच्छे!" लेमन ने इस भीड़ की ओर देखते हुए कहा। "अब मैं तीन तक गिनूँगा...१, २, ३...!"

कुछ भी नहीं हुआ। "चार!" निम्मी ने दृढ़

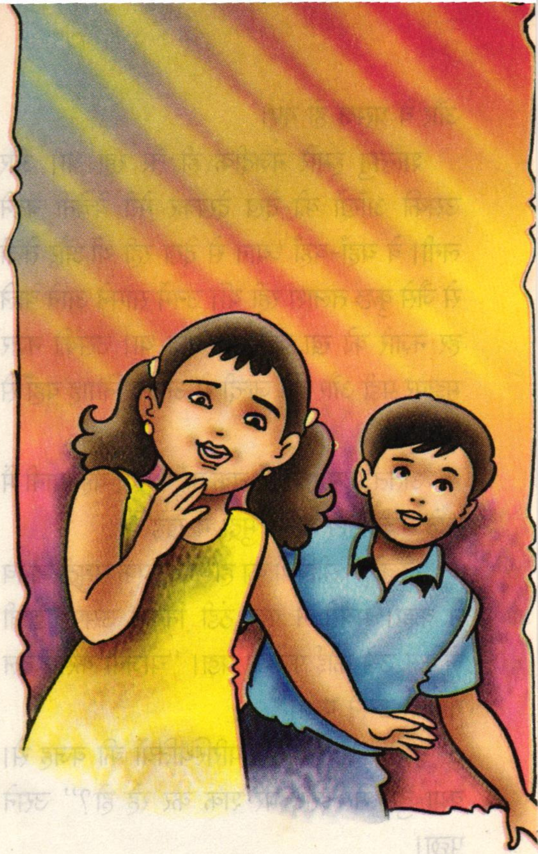

आवाज़ में कहा। लेमन ने आग बरसाती निगाह निम्मी पर डाली लेकिन उसके चेहरे पर कोई शिकन नहीं आई। और फिर शुरु हुई - वही मुश्किल और सुन्दर, चाँदी की बारिश। हम जहाज पर खड़े रहे और पानी की बूँदें फर्श पर बारीक छिद्र बनाती रहीं। ओमन ने व्हील संभाल रखा था और वह उसे घुमाने लगा। सब लोग जड़वत् खड़े रहे और जहाज धीरे-धीरे डूबने लगा...जैसे मखमल।

जल्दी ही हम पानी के नीचे थे। मुझे अपने चारों तरफ घबराई और चौंधियाई हुई आँखें दिखाई दे रही थीं। रबर के मास्क उनकी उत्कंठा को छिपा नहीं पा रहे थे। मयूरी बड़ी आसानी से गुफ़ाओं की ओर तैरी और हम सब उसके पीछे चले। मैंने निम्मी और हर्ष को शैवाल से बनी कुछ सुन्दर आकृतियाँ दिखाईं

और वे प्रसन्न हो गए।

शान्तनु हमारे नज़दीक ही तैर रहा था। और उसकी आँखों को देख देखकर मेरी बेचेनी बढ़ने लगी। वे यहाँ-वहाँ ध्यान से देख रही थीं और तेज़ी से जैसे कुछ तलाश रही थीं। उनमें सामने आने वाले हर नज़ारे को खा जाने का भाव था। उसकी नज़र मुझपर पड़ी और मैंने जल्दी से अपनी निगाह वहाँ से हटा ली।

अंततः हम गुफ़ाओं तक पहुँच गए। वहाँ पानी में रहने वाले लोग शान्त मुद्रा में खड़े थे।

''रुको,'' सीपियों का हार पहने एक समुद्री मानव ने कहा। मयूरी ने एक ठंडी निगाह उसपर डाली लेकिन उसे कोई फर्क न पड़ा। ''योजना कैसे बदल गई?'' उसने पूछा।

''कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियों की वजह से। क्या तुम मेरे इरादे पर शक कर रहे हो?'' उसने पूछा।

''हम मानवों के इरादों से सरोकार नहीं रखते,'' समुद्री मानव बोला। मानव शब्द पर उसने खास ज़ोर दिया था। मुझे मयूरी की आँखों में चिंगारियाँ दिखाई दीं। उसे मानव कहलाना अच्छा नहीं लगता था और ऐसा प्रतीत होता था कि इस समुद्री मानव को यह बात बहुत अच्छी तरह पता थी।

''तुम्हें अच्छी तरह पता है कि मानवों की विलुप्ति की योजना उतनी सफल नहीं हुई जितना मैंने सोचा था।'' मयूरी बोली।

मैंने शान्तनु को मयूरी के इन शब्दों पर गहरी साँस लेते सुना।

''प्रथम सर्वज्ञ है। या ऐसा हमें सिखाया गया है,'' समुद्री मानव ने कहा। मैंने मयूरी के सामने खड़े रहने के उसके साहस की मन ही मन प्रशंसा की।

''मनुष्य, दूसरों की तुलना में अधिक उन्नत प्रजाति हैं।'' मयूरी ने कहा।

इसपर नीले मगरमच्छ की ओर से विरोधस्वरूप एक आवाज़ आई। मुझे झटका सा लगा। मयूरी कुछ ऐसा स्वीकार कर रही थी जो अनुनिर्वा के लोगों के लिए असहनीय था!

''कुछ अर्थों में यह सही है,'' वह नीले मगरमच्छ की ओर मुड़कर बोली। ''और हमें यह मान लेना चाहिए। वैसे कई दूसरे मायनों में वे बुरी तरह विफल भी हैं। मैं किसी भी तरह उन्हें महिमा-मंडित नहीं कर रही हूँ।''

''लेकिन उन्होंने हमारी योजना को पहले ही भाँप लिया और अपने भाग्य से बच निकलने का प्रयास किया। मैं ये नहीं कहूँगी कि वे सफल हो गए, पर सबकुछ

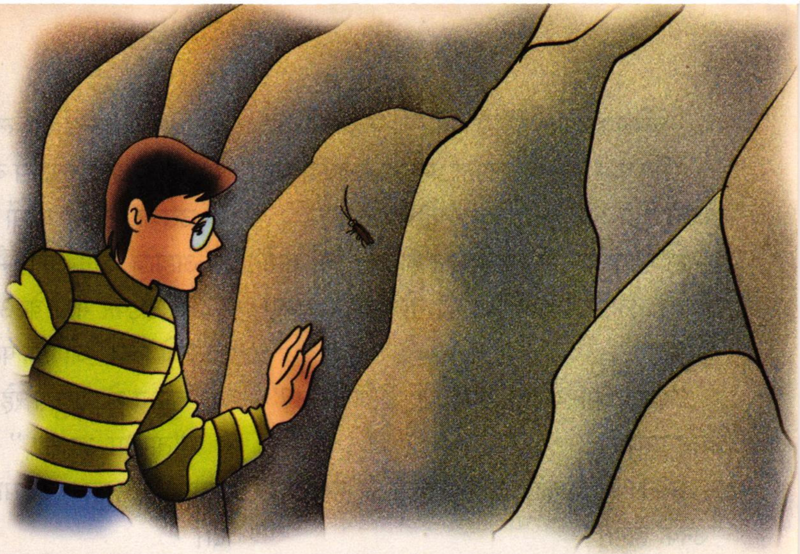

ठीक वैसा नहीं हो पाया जैसा हमने सोचा था।''

अचानक मुझे दादाजी और लड्डू की याद आई। समुद्री लोगों ने उन्हें छोड़ देने का वादा किया था। मैंने खुद ही थोड़ी खोजबीन करने का निश्चय किया। मैं धीरे-धीरे खिसकता हुआ सबके बीच से बाहर निकल गया। मुझे किसी ने नहीं देखा क्योंकि सबका ध्यान मयूरी और समुद्री मानव पर था।

पानी की ठंडक अच्छी लग रही थी। दादाजी और लड्डू कहाँ हो सकते थे? क्या समुद्री लोगों ने उन्हें गुफ़ाओं में छुपा दिया था? वे कहीं भी हो सकते थे और मेरा रास्ते से भटके बिना उन्हें खोज पाना संभव नहीं था।

अन्दर जाने के रास्ते के पास खड़ा होकर सोचते सोचते मुझे गुफ़ा की दीवार पर रॉबिन कॉकरोच दिखा। उसने मित्रत्व भाव से मेरी ओर अपने फ़ीलर हिलाए। मुझे याद आया कि गुफ़ाओं के बीच के रास्ते रॉबिन ही सबसे अच्छी तरह जानता था। लगा जैसे यह तय हो गया कि अब मैं दादाजी और लड्डू को देख सकूँगा।

मैं नीचे झुककर बोला, ''क्या तुम अन्दर आने में मेरी सहायता करोगे?''

उसने अपने फ़ीलर फड़फड़ाए और बोला, ''तुम क्या खोजना चाहते हो?''

''मैं दादाजी और उनके कुत्ते को देखना चाहता हूँ...क्या तुम्हें पता है वे कहाँ हैं?

''बिल्कुल पता है,'' वह उत्साह से बोला।

''क्या तुम मुझे वहाँ ले जा सकते हो?''

''बिल्कुल नहीं!''

मैंने उसके छोटे से शरीर को देखा और सोचा कि मैं कैसे उसे रिश्वत देकर वह काम करवा सकता हूँ।

''क्या तुम मुझे रिश्वत देने की सोच रहे हो?'' उसने पूछा। मैंने हिचकिचाते हुए हाँ में सिर हिलाया।

''अरे, तो पहले क्यों नहीं बताया?'' वह खुश होकर बोला।

क्या कॉकरोचों में दिमाग होता है? मुझे इसका जवाब तो पता नहीं था लेकिन ये ज़रूर पक्का पता था कि मैं एक अध-पगले कॉकरोच से बात कर रहा था।

''तो मुझे अपना प्रस्ताव बताओ!''

मुझे उसका भाव समझने में कठिनाई हो रही थी। फिर भी मुझे लगा कि वह कोई आकर्षक चीज़ लेकर खुश हो जाएगा। मैंने अपनी जेबें तलाशीं। उनमें एक चाबी थी (जो दादाजी के घर में रखी मेरी अल्मारी की थी), और मेरा ट्रेन का टिकट, जिसे मेरे पिताजी ने एक प्लास्टिक के कवर में डाल दिया था।

''बोलो तुम्हें इनमें से क्या चाहिए?'' मैंने लालच देते हुए पूछा।

''कुछ नहीं।''

"लेकिन इस वक्त मेरे पास और तो कुछ नहीं है!"

"मैंने कहा था मुझे अपना प्रस्ताव बताओ। यह किसने पूछा कि तुम मुझे क्या दे सकते हो?"

निश्चित तौर पर वह पागल ही था। "मैं तुम्हें समुद्र दे दूँगा," अब मैं खुद को भी बेवकूफ़ समझ रहा था।

"समुद्री मानवों के साथ या उनके बिना?" उसने पूछा।

उसकी इच्छा का अनुमान लगाते हुए मैंने कहा, "उनके बिना।"

"बहुत बढ़िया!" वह हँसा, "अन्दर आ जाओ।"

"तुम्हारे लोग अभी भूत मेंढक की मेहमान नवाज़ी में हैं।"

मैं धीरे-धीरे रॉबिन के पीछे चल पड़ा। दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था। गुफ़ा की दीवारों पर चिपके जुगनू जगमगा रहे थे।

मैं बड़ी मुश्किल से फर्श पर भागते रॉबिन की गति से चल पा रहा था। रास्ता ठीक नहीं था और गुफ़ाओं में कई जगह या तो पत्थर निकले हुए थे या छत नीची थी। कई जगह मुझे अपना सिर गुफ़ा की दीवारों से टकराने से बचाने के लिए चारों हाथ-पैरों पर चलना पड़ा।

अंत में हम एक छोटी सी खुली जगह पर पहुँच गए। मैं आश्चर्य से सब तरफ देखता रहा। इतना चलने के बाद भी दादाजी और लड्डू के कोई चिह्न नहीं हैं।

अचानक मुझे एक कराह और स्वागत करने वाली भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। लड्डू ने मेरी गंध पहचान ली थी। वह कूदकर गुफ़ा से बाहर आया और पास आते ही उसकी पूँछ मेरे घुटनों पर टकराती हुई ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ करने लगी। मैंने उसकी गर्दन सहलाई।

मैं दौड़कर गुफ़ा के अन्दर आया और वहाँ मुझे दादाजी दिखे...जो एक पत्थर से टिककर बैठे थे और बड़े सुकून से मुस्कुरा रहे थे।

"तो तुम आ गए," वे बोले। मैंने उन्हें गले से लगाया और तुरन्त ही सारी कहानी सुनानी शुरु कर दी।

"क्या नाम बताया? शान्तनु?" जब मैंने मनुष्यों के वहाँ आने के बारे में बताया तो वे चौंके।

"हाँ, क्यों।"

"वह तो मेरा पुराना मित्र है," दादाजी ने कहा। लेकिन कहने के लहजे से मुझे ऐसा लगा जैसे उन्होंने जो कहा, उसका सीधा-सादा अर्थ नहीं था। वे उसे दोस्त तो नहीं ही बताना चाहते थे।

(जारी)

-सौम्या राजेन्द्रन

समाचार झलक

मंगल के लिए नया कॉम्पैक्ट रोवर

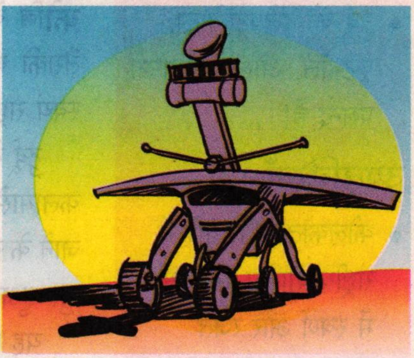

इलिनॉस की एक डिज़ाइन कन्सल्टिंग फर्म ने मंगल गृह पर भेजने के लिए एक नया स्पेस रोवर बनाया है। इसमें अंतरिक्ष यात्री तीन सप्ताह तक मंगल पर रहते हुए आसानी से काम कर सकते हैं, सो सकते हैं और कसरत कर सकते हैं। मॉन्टगोमरी डिज़ाइन इंटरनेशनल के मालिक ग्रेग मॉन्टगोमरी के अनुसार, ''रोवर को खुली अवस्था में मंगल पर भेजना होगा।''

कैलिफ़ोर्निया के अर्गोनॉमिक सिस्टम्स डिज़ाइन के डॉ स्टीवन केसी के साथ काम करके इस टीम ने एक कॉम्पैक्ट और आरामदेह मॉड्यूलर वाहन बना लिया।

इस वाहन को मिशन की आवश्यकताओं के मुताबिक बनाया गया है। इसमें विशेष बैटरियाँ हैं जो अन्य रोवर, उपकरणों और रहने के स्थानों से कनेक्ट की जा सकती हैं।

नासा का मानना है कि २०३७ तक मंगल पर मानव को भेजना संभव होगा।

दुनिया का सबसे छोटा जीवित मानव

काठमांडू का एक नेपाली आदमी, जो केवल ५६ सेमी ऊँचा है, गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रेकाड्र्स में दुनिया के सबसे छोटे जीवित आदमी के रुप में अपना नाम दर्ज करवाने यूरोप जा रहा है।

खगेन्द्र थापा मगर और उसके पिता इटली जाएँगे जहाँ वे लंदन की गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रेकाड्र्स में मगर का नाम दर्ज करवाने का प्रयास करेंगे।

जब वह १४ वर्ष का था, तब मगर के परिवार ने गिनीज़ बुक के समक्ष यह दावा किया था, लेकिन इसे इसलिए मान्य नहीं किया गया क्योंकि वह वयस्क नहीं था। मगर का जन्म १९९२ में नेपाल के बागलंग जिले में हुआ था। उसने आठ वर्ष की उम्र में चलना शुरु किया और ग्यारह की उम्र में उसका बढ़ना रुक गया।

विश्व के सबसे छोटे इंसान होने का रेकॉर्ड अभी चीन के हे पिंगपिंग के नाम है, जो ७३ सेमी ऊँचा है।

उदीयमान सितारा

छोटी-छोटी बातें :

- टुर्बू को इलेक्ट्रॉनिक्स, फुटबॉल, और वॉटर पोलो पसन्द हैं!

उपलब्धियाँ :

- कोलकाता और पुणे में राष्ट्रीय शालेय स्पर्धाओं में स्वर्ण और रजत पदक
- सबजूनियर राष्ट्रीय जलीय प्रतिस्पर्धा, बंगलुरु में स्वर्ण पदक
- जूनियर राष्ट्रीय जलीय प्रतिस्पर्धा, अमृतसर में स्वर्ण पदक (५० मी और २०० मी बैकस्ट्रोक) व रजत पदक (१०० मी बैकस्ट्रोक)
- रजत पदक (५० मी बैकस्ट्रोक) व कांस्य पदक (१०० मी बैकस्ट्रोक) दक्षिण एशियाई तैराकी प्रतिस्पर्धा, इस्लामाबाद
- जिमनासियाड, क़तर में भारत का प्रतिनिधित्व

टुर्बू वी

कोच्चि के कक्षा दसवीं के छात्र टुर्बू ने अपने पिता के कहने पर तैराकी को अपना कैरियर बनाने का निश्चय किया। उनके पिता स्वयं राष्ट्रीय स्तर के तैराक रहे हैं।

टुर्बू ने पाँच वर्ष की उम्र में तैराकी शुरु की। बाद में, केरल की कलामासेरी राजागिरी स्विमिंग अकादमी के खेल प्रभाग द्वारा चुने जाने के बाद इस संस्थान के माध्यम से उनका औपचारिक प्रशिक्षण शुरु हुआ।

यह मेहनती लड़का प्रतिदिन ६ घंटे अभ्यास करता है। पूल पर प्रशिक्षक श्री उन्नी कृष्णन् नायर के साथ किया जाने वाला वर्कआउट बहुत सी भिन्नताएँ लिए होता है।

टुर्बू के अनुसार, किसी भी तैराक के लिए सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं सुविधाओं और अधोसंरचना की कमी। ''किस्मत से, मेरे पास बहुत अच्छी अभ्यास की सुविधाएँ हैं और सर्वश्रेष्ठ कोचिंग भी!'' वे कहते हैं।

टुर्बू के आदर्श हैं, बैक स्ट्रोक के पूर्व राष्ट्रीय चैम्पियन, टीके सेन्थिलकुमार। सेन्थिलकुमार की ही तरह, टुर्बू ने बैकस्ट्रोक में काफी पदक जीते हैं। टुर्बू तैराकी को अपना पेशा बनाने के लिए तत्पर हैं और फिलहाल उनका ध्यान एशियाई खेलों में पदक जीतने और ओलम्पिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने पर है!

माह के इस उदीयमान सितारे को चन्दामामा की ओर से शुभकामनाएँ।

हँसते - हँसते हो जा लोट पोट

रोहन : तुम १००० रु का चेक लिख रहे हो, लेकिन तुमने इसपर हस्ताक्षर नहीं किए।

मोहन : यह मेरी बहन के जन्मदिन का है, लेकिन मैं नहीं चाहता कि वह इसे देख कर पहचान जाए कि किसने भेजा है।

जज : तुम फिर यहाँ आ गए? शायद तुमको अहसास हुआ हो कि खराब संगत का क्या असर होता है।

कैदी : योअर ऑनर, यह खराब संगति कैसे हुई? यहाँ तो केवल पुलिसवाले और जज ही मिलते हैं।

नीलू : टेल्स कहाँ उगती हैं?

कमल : जानवरों पर।

नीलू : लेकिन हमारी टीचर कहती हैं कि टेल्स लेखकों के सिर में उगती हैं। जरूर अजीब प्राणी होते होंगे!

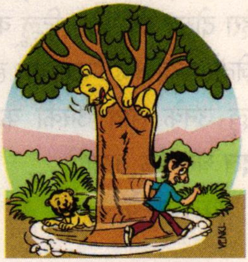

शेरनी : बेटा तुम क्या कर रहे हो?

बच्चा : मैं एक पेड़ के आस-पास एक आदमी के पीछे दौड़ रहा हूँ।

शेरनी : मैंने तुमसे कितनी बार कहा है कि अपने खाने से खेल मत किया करो!

दत्तू

रोमांचक पड़ोस

सौवीं बार टिल्लू को इस बात का अफ़सोस हुआ कि उसके पिताजी का तबादला घोलापुर हो गया था। जब से वह रोज़ी और जमाल से मिला था, हर दिन नई और मजेदार बातें हुईं!

जब वह पहली बार स्कूल गया था तब थोड़ा शरमा रहा था। तभी रोज़ी से उसकी मुलाकात हुई थी और उसने जमाल को टिल्लू से मिलवाया था और उसे अपने समूह में शामिल होने का प्रस्ताव दिया था। इस प्रकार टिल्लू जमाल और रोजी का गहरा दोस्त बन गया। टिल्लू को कभी रोज़ी जितना मज़ेदार कोई नहीं मिला था। हर रोज़ स्कूल के बाद टिल्लू उनके साथ उनकी कहानियाँ सुनता हुआ पैदल घर तक आता।

एक घर के निकट से गुज़रते समय रोज़ी फुसफुसाई, "क्या तुम्हें पता है यहाँ कौन रहता है?"

"नहीं," टिल्लू बोला।

"ये केशव सर का घर है! जमाल हमने आज तक इस बारे में टिल्लू को कैसे नहीं बताया?" रोज़ी ने पूछा। जमाल ने कन्धे उचकाए और बोला, "हाँ बताओ इसे।"

"टिल्लू, चलो हम इस रास्ते से जाकर उनका बगीचा देखते हैं। मैं तुम्हें वहाँ कुछ दिखाऊँगी," रोज़ी ने कहा।

"क्या हम इस रास्ते से चलें?" काँटों वाली झाड़ियों के बीच से गुज़रते समय टिल्लू बोला। वे एक ऐसी जगह पर पहुँच गए जहाँ से वे बागड़ में से अन्दर झाँक सकते थे। रोज़ी ने ज़मीन की ओर इशारा किया जिसमें गड्ढा खुदा हुआ था।

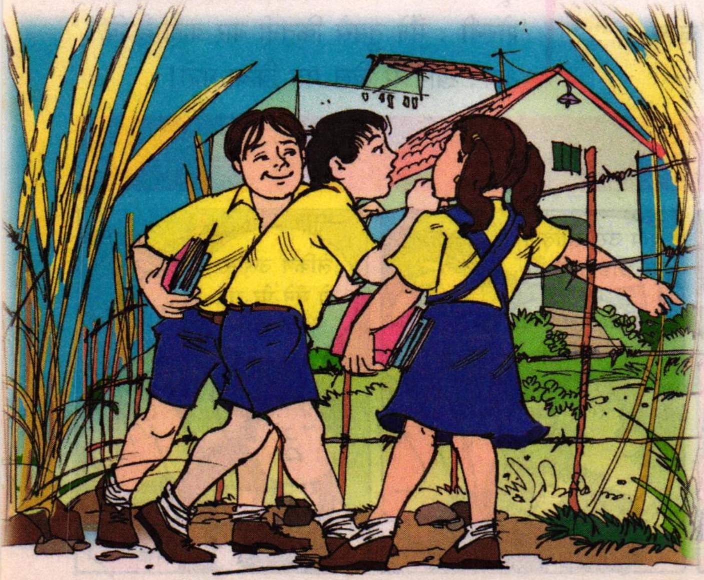

"तुम कभी अन्दाज़ा नहीं लगा पाओगे कि केशव सर रविवार की दोपहर में क्या करते हैं!" वह बोली।

"वे यहाँ आते हैं और इस जगह पर बेलचे से खुदाई करते हैं!" जमाल बोला।

"क्यों?"

"पता नहीं, शायद वे किसी ख़ज़ाने की तलाश में हैं।" रोज़ी ने कहा।

"यह हमारा विशेष सीक्रेट है,

टिल्लू। किसी से नहीं कहना।'' जमाल ने चेतावनी दी। जब वे दूसरी ओर गए तो उसे बगीचे में पड़ी एक गेंद दिखी। जब उसने दरवाज़ा खोलने की कोशिश की तो उसमें तेज़ आवाज़ हुई। जमाल और रोज़ी ने आग बरसाती नज़रों से उसकी ओर देखा।

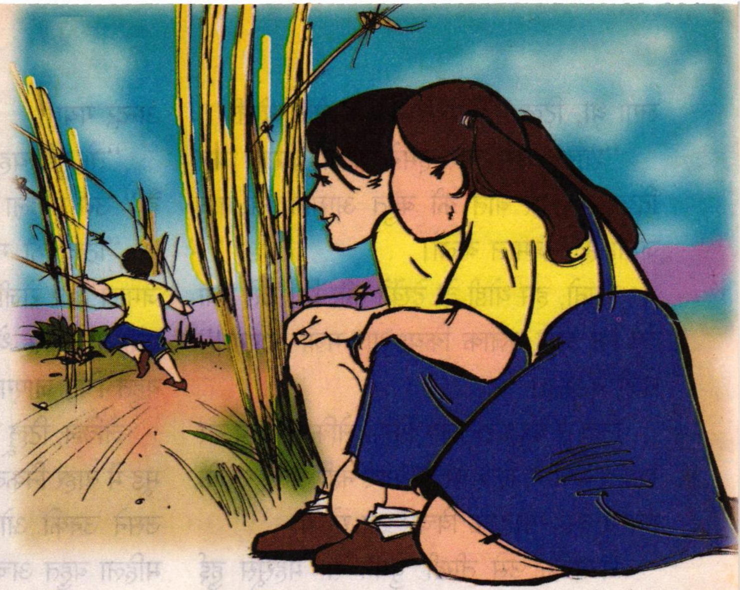

''तुम क्या करना चाहते हो?'' जमाल ने गुस्से में पूछा।

''मैंने सोचा मैं गेंद उठा लूँ।'' टिल्लू बोला।

''और घर के भीतर की अजीब सी औरत द्वारा देख लिए जाने का खतरा उठाऊँ।'' रोज़ी ने कहा।

''औरत? कौन सी अजीब औरत? तुमने इस बारे में तो मुझे कुछ कहा नहीं था! अब ये क्या नया चक्कर है?'' टिल्लू ने अपना विरोध दर्ज कराया।

''इस मकान में एक औरत रहती है जो थोड़ी पागल है,'' रोज़ी बोली। ''यहाँ दिखाई देने वाले किसी भी व्यक्ति को वह घर के भीतर घसीट ले जाती है!''

''और फिर वह उस व्यक्ति से विचित्र तरीके की बात करती है!'' जमाल ने जोड़ा।

''कैसे?'' टिल्लू ने पूछा।

''वह हू आर यू की जगह हू आर्ट दाउ कहती है, और आपको भी वैसे ही जवाब देना होगा नहीं तो वह नाराज़ हो जाती है!'' रोज़ी बोली।

''और फिर वह अपने मुँह पर एक मुखौटा लगा लेती है। बाप रे!! चलो हम यहाँ से चलें,'' जमाल ने कहा।

''लेकिन तुम लोगों को इतनी सब बातें कैसे पता हैं? टिल्लू ने पूछा।

''हम यहाँ बरसों से रहते हैं,'' रोज़ी ने गर्व से सिर उठाकर कहा।

अगले दिन टिल्लू ने केशव सर को अतिरिक्त ध्यान से देखा। वे पुरातात्विक महत्व के स्थानों के बारे में बता रहे थे।

''पुराने ज़माने के सबूतों के लिए खुदाई करने से अधिक रोमांचक कुछ भी नहीं!'' वे उत्तेजना में लगभग चीख पड़े। टिल्लू ने अपने दोस्तों की ओर गर्व से देखा और उन लोगों के लिए दुःख महसूस किया जिन्हें राज़ पता नहीं था। उसने निश्चय किया कि वह छुपकर केशव सर को खुदाई करते देखेगा और फिर अपने दोस्तों को सारी बातें बताएगा। टिल्लू को मन ही मन योजना जम गई।

उस रविवार की दोपहर में टिल्लू अपने साहसी कारनामे के लिए निकल पड़ा। जैसे ही वह छुपकर पिछवाड़े की ओर बढ़ा, सोचो कौन उसकी इस हरकत को देख रहा था? रोज़ी और जमाल!

''देखा, मैंने कहा था ना? बिल्कुल जैसा मुझे

लगा था, टिल्लू यहाँ पहुँच गया।'' रोज़ी बोली।

''शायद इस बार हमने थोड़ा ज़्यादा कर दिया...वह हर बात को बहुत आसानी से मान जाता है,'' जमाल बोला।

''सुनो, हम थोड़ी देर देखेंगे और फिर उसे बता देंगे कि हमने मज़ाक किया था! मज़ा आएगा!'' रोज़ी ने कहा।

टिल्लू ने बहुत इन्तज़ार किया लेकिन केशव सर खुदाई करने के लिए घर से बाहर नहीं आए। उसके मन में तरह-तरह के विचार आ रहे थे।

अचानक उसे तीखी चुभन सी महसूस हुई और जैसे ही वह पीछे मुड़ा, चर्रर्रर्र की आवाज़ सुनाई दी...उसका ट्राउज़र उस कँटीली झाड़ी ने फाड़ दिया था जिसपर वह टिका था!

वह ट्राउज़र को देख ही रहा था कि उसे लगा कि उसके पीछे कोई है। उसने कनखियों से पीछे देखा तो वहाँ एक महिला खड़ी थी। 'वो' महिला!

उसे देखकर टिल्लू के होश उड़ गए। ''प्लीज़ मुझे जाने दीजिये'' टिल्लू ने कहना शुरु किया। उसे रोज़ी और जमाल की बातें याद आईं जो उन्होंने उस महिला के बारे में कही थीं।

उसने उस महिला की भाषा में उससे माफ़ी माँगना शुरु कर दिया। महिला ने पहले उसे घूरा फिर ज़ोर से हँस पड़ी। फिर वह उसी लहजे में बोली, ''लेकिन तुम्हारी नेकर में बहुत बड़ा चीरा लग गया है। चलो, मैं तुम्हारे लिए एक पिन ढूँढ देती हूँ।'' और इस प्रकार टिल्लू उस घर के अन्दर गया।

''तो मुझे यह बताओ कि यह सारा खेल क्या है,'' उस महिला ने मुस्कुराते हुए पूछा।

''टिल्लू को गए बहुत देर हो गई थी। बाहर जमाल और रोज़ी गेट पर बहुत बेसब्री से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बाहर आने के बाद वह हमसे बहुत चिढ़ जाएगा।'' रोज़ी बोली।

लेकिन टिल्लू आधे घंटे बाद बिल्कुल अच्छे मूड में बाहर निकला। रोज़ी और जमाल को देखकर उसने उनकी ओर हाथ हिलाया। ''पता है, वह महिला बहुत अच्छी है। मैंने उसे सब बता दिया और वह बहुत खुश हुई और ताली बजाकर हँसती रही। और उसने कहा कि वह अपनी पत्रिका में यह सारी कहानी प्रकाशित करेगी! वो भी मेरे नाम के साथ!''

रोज़ी और जमाल ठगे से रह गए। अब वे केवल बेवकूफों की तरह एक-दूसरे को देखने के अलावा कुछ नहीं कर सकते थे!

- रमा रमेश

BRITANNIA
Treat
Choco
to le hi lenge
ढूंढ़िए छुपे चॉको को!
हे बच्चों! क्या चॉको को देखते ही उसे लपकने के लिए आप तैयार हैं? इस ड्राइंग में छुपे सभी 15 ट्रीट चॉको पैक्स और बिस्किट्स को ढूंढ़िए. पर ज़रा ध्यान से, एक भी छूटने न पाए! तो हो जाइए तैयार! चॉको तो ले ही लेंगे!
Treat
Choco

RNI NO: MAHHIN/07661/13/1/2009-TC
CHANDAMAMA (Hindi) May 2010 Registrar of Newspapers of India No [redacted]
Licensed to post WPP - Inland No.TN/CC(S)Dn/92/09-11, Foreign No. 93/09-11 REG.NO:MH/MR/N/130/MBI/10-12